संयुक्तांक - 107-108
मार्च/2025

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

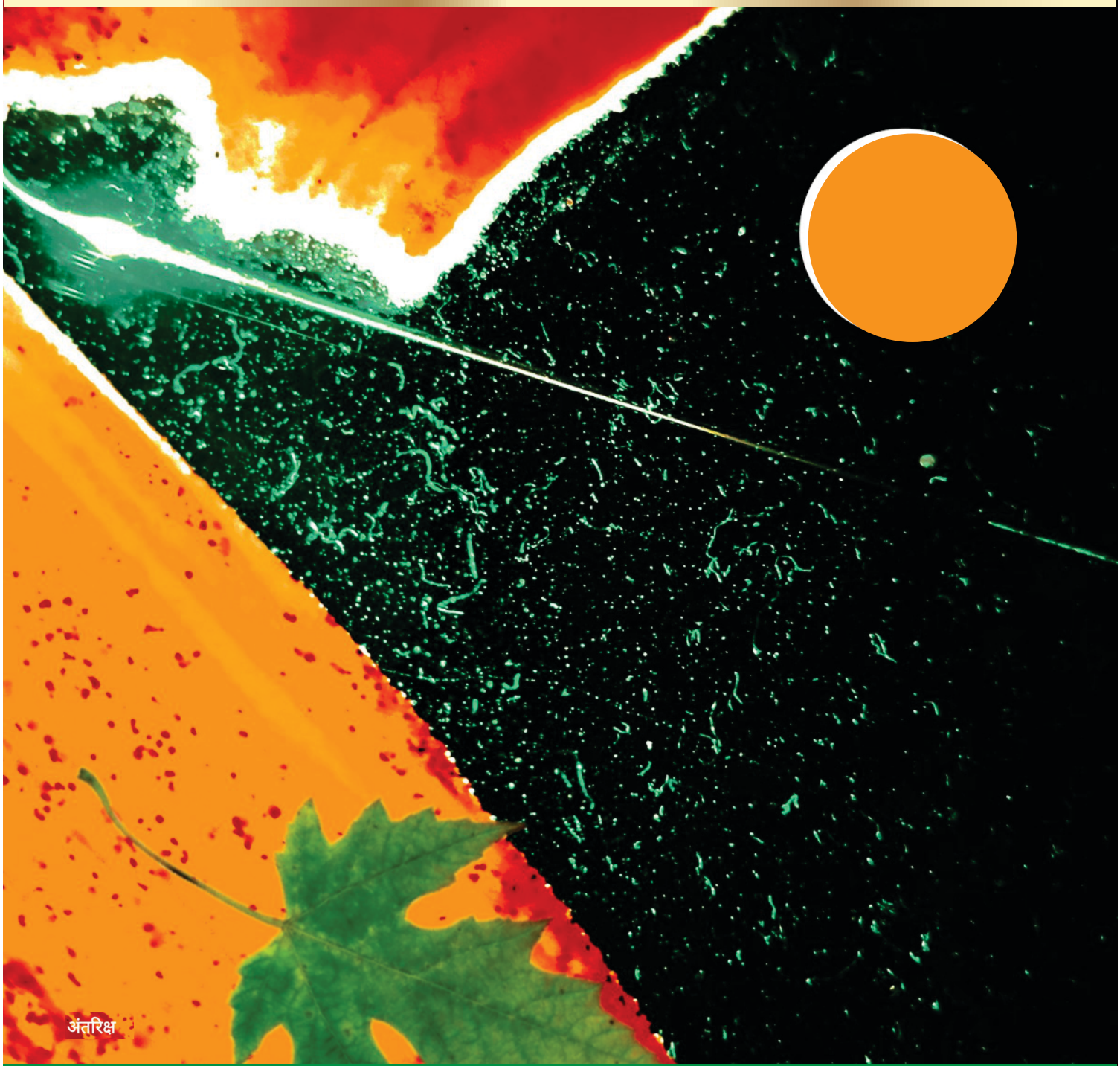

अंतरिक्ष

प्रो0 सदानन्द शाही, प्रेमशीला शुक्ल, दिनेश पाण्डेय, शशि प्रेमदेव, विनय बिहारी सिंह के निबन्ध/रम्य रचना कृष्ण कुमार, मीनाधर पाठक, कमलेश, बिम्मी कुँवर, शारदा पाण्डेय, कल्पना मनोरमा, दिवाकर प्रसाद तिवारी के कहानी आ प्रो0 चितरंजन मिश्र, विष्णुदेव तिवारी, सुनील कुमार पाठक के रचनालोचन का साथ, बलभद्र, ओम धीरज, कौशल मुहब्बतपुरी, अनिल ओझा नीरद आदि के कविता

''पाती -आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात),राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरूविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० संजय सिंह (करमनटोला, आरा), आनन्द सन्धिदूत (वासलीगंज, मिर्जापुर), नगेन्द्र सिंह एवं राकेश कुमार सिंह, (राजनगर, पालम, नई दिल्ली), डा० हरेश्वर राय (जवाहरनगर, सतना, म० प्र०), केशव मोहन पाण्डेय (कुशीनगर), गुलरेज शहजाद (मोतीहारी), शशि सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), जितेन्द्र कुमार (पकडी, आरा), योगेन्द्र प्रसाद सिंह (बोकारो, झारखंड), डा० प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात, विद्यापीठ), महेन्द्र प्रसाद सिंह (रंगश्री, नई दिल्ली), अजीत सिंह (इलाहाबाद), संतोष वर्मा (साधु नगर, नई दिल्ली), संजय कुमार सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर, बिहार), सत्येन्द्र नारायण सिंह, (नारायणा, नई दिल्ली), श्री रविन्द्र सिंह, (मेहरम नगर, नई दिल्ली), ई० रामचन्द्र सिंह, (श्रीरामनगर कालोनी, वाराणसी), हीरालाल 'हीरा' (रामपुर उदयभान, नई बस्ती, बलिया), दिनेश पाण्डेय (शास्त्रीनगर, पटना), शिवजी सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० जनार्दन राय (भृगुआश्रम, बलिया), विनय कुमार (भाटपारा, छतीसगढ़), अजीत कुमार (बैंक आफ बड़ौदा, पालघर), विपिन बिहारी चौधरी (बूटी मोड़, राँची, झारखंड), अशोक कुमार श्रीवास्तव (गाजियाबाद), शिवपूजन लाल विधार्थी (वाराणसी), डा० पारसनाथ सिंह (चन्द्रशेखर नगर, बलिया), डा० आशारानी लाल (काका नगर, नई दिल्ली), आलोक पाण्डेय अनवद्य (दिल्ली), कुबेरनाथ पाण्डेय (परसा, गाजीपुर, हीरालाल 'हीरा' (बुलापुर, बलिया) विनोद द्विवेदी, (वाराणसी), अरविन्द कुमार सिंह, (आइ.ए.एस, लखनऊ), डा० प्रेमप्रकाश पाण्डेय (वैशाली, गाजियाबाद), डा० दिवाकर प्रसाद तिवारी (देवरिया), शशि प्रेमदेव सिंह (कुं० सिंह इंटर कॉलेज, बलिया), सौरभ पाण्डेय (नैनी, प्रयागराज), घनश्याम सिंह (महावीर घाट, बलिया), डा० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय (भारद्वाजपुरम्, प्रयाग-6), राकेश कुमार पाण्डेय (गाजीपुर), कनक किशोर (रांची, झारखंड), अरविन्द कुमार द्विवेदी (नई दिल्ली), रीतू सुरेन्दर सिंह (डुमराँव, बक्सर, बिहार), बिम्मी कुँवर सिंह (लखनऊ)

भोजपुरी-साहित्य के नया पठनीय सृजन/प्रकाशन

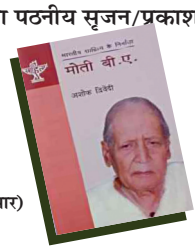

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)
अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)
अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

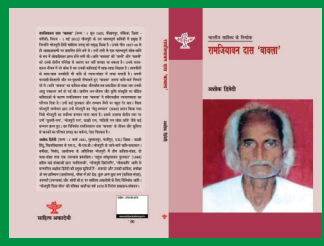

रामजियावन दास 'बावला'
अशोक द्विवेदी

भोजपुरी रचना आ आलोचना
(पृष्ठ संख्या-404)
डॉ0 अशोक द्विवेदी
मूल्य-500/-
विजया बुक्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

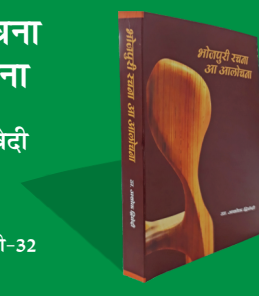

किताब मिलल....

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या
एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019
Mobile: +91-8004375093, 8707407392, 8373955162, 9919426249,
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

संयुक्तांकः 107-108 **मार्च 2025**

(तिमाही पत्रिका)

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

ग्राफिक्स
जितेन्द्र सिंह सिसौदिया

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

कंपोजिंग
अरूण निखंजन

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह
अँजोरिया डाट काम

आवरण चित्र
अंतरिक्ष

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) डा० अरूणमोहन 'भारवि', श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश पांडेय (शास्त्रीनगर, पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), गंगाप्रसाद 'अरुण', (जमशेदपुर), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com,

संपादन-कार्यालयः-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001 एवं
एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-19
मो0- 08707407392, 08004375093

सहयोगः
एह अंक के-100/-
सालाना सहयोग-300/- (डाक व्यय सहित)
तीन वर्ष के सहयोग-1000/-
आजीवन सदस्य सहयोगः
न्यूनतम-2500/-

[अशोक कुमार द्विवेदी के नाम से चेक/डी०डी० अथवा
SBI A/C No. 31573462087, IFSC Code-SBIN0002517
में नकद/ऑनलाइन सहयोग जमा करके हमें सूचित करें]

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन निजी हऽ दायित्व लेखक के बा, ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में...

हमार पन्ना –
- कब आइल, कब लवटलः/सृष्टि सिरिजना के लीला/3–4
- नदियन का मिलन के उत्सव/दुनिया खातिर अजूबाः महाकुम्भ/4–6

आपन कथा –
- गुनाह जवन हो ना पावल/प्रो0 सदानन्द शाही/17–21

मातृभाषा का सवाल पर.... –
- कहे के त सभे केहू आपन/डा0 ओमप्रकाश सिंह/7–9

निबन्ध –
- बदलाव का आन्ही में घर–परिवार/प्रेमशीला शुक्ल/10–12
- दुनिया रंग–रंगीली/दिनेश पाण्डेय/69–76

ललित/व्यंग्य –
- 'पकड़उवा सम्मान समारोह'/शशि प्रेमदेव/13–16
- होखे, बस ओतने करीं–/अशोक कुमार तिवारी/54–55

सामयिकी–
- बियाह में कैटरर आ स्टेज पर वरमाला/विनय बिहारी सिंह/22–23

कविता खण्ड –
- ओम धीरज/24
- बलभद्र/25
- नवचंद्र तिवारी/29
- योगेन्द्र शर्मा/32
- मनोज भावुक/38
- गुरविन्द्र सिंह/42
- कौशल मुहब्बतपुरी/40–42
- मिथिलेश गहमरी/43
- राकेश कुमार पाण्डेय/64
- शिवजी पांडेय/55
- अनिल कुमार ओझा 'नीरद'/65–66
- विंध्याचल सिंह/81
- कमलेश राय/93
- सुभाष पाण्डेय/94

स्मरण –
- आचार्य श्रद्धानंद अवधूत/राम बहादुर राय/78–81

कहानी –
- ई का हो गइल/कुष्ण कुमार/26–29
- सीख/मीनाधर पाठक/30–32
- का पर करीं सिंगार/कमलेश/33–37
- औकात मत बताईं/बिम्मी कुँवर सिंह/44–47
- "आजुओ"/शारदा पाण्डेय/48–50
- जागल रहिहऽ/दिवाकर प्रसाद तिवारी/51–53
- दारा सिंह/राजगुप्त/56–60

लघुकथा –
- हमरा बोले आवते नइखे/डा0 आशारानी लाल/16
- पिअर चिरई/केकड़ा/ कल्पना मनोरमा/67–68
- अबोध के बोध/विनोद द्विवेदी/100

रचनालोचन –
- गुलमोहर के गीत/विष्णुदेव तिवारी/39–40
- भोजपुरी का समृद्वि क आग आ राग/प्रो0 चितरंजन मिश्र/61–64
- भोजपुरी के गीत–गौरव/सुनील कुमार पाठक/82–90

ताकि सनद रहे.....–
- "पाती" अंक– जून–1999 के दू पृष्ठ/91–92

सांस्कृतिक गतिविधि – पृ0 95–98 एवं कवर पृष्ट 3

राउर पन्ना –
- बरिस 1999 के कुछ चिट्ठी–पाती/99–100

कब आइल, कब लवटल: रितु बसन्त मनमउजी

"कम्प्यूटरीकरन" का हाइटेक जमाना में जब गाहे–बेगाहे 'ग्लोबल वार्मिंग' के चरचा चलत रहत बा ––जब पुरनका निर्धारित मास के सुभाविक खासियत दू–तीन महीना बाद लउकत बा, अइसनका स्थिति में, माडर्न बनल मन के अचके खेयाल परो कि "अरे, एबेरी त मौसम मुताबिक जाड़े ना परल! रजाई आ गरमावे वाला कूल्हि कपड़ा धइल रह गइल !" सँचहूँ जब जाड़ खतम बुझाए लागल,तले कहीं बर्फबारी सुरू हो गइल । कहीं बे बोलवले आन्ही–पानी आ गइल। अब एही आहु–जाहु में कब दूनी बसन्त आइल, कब लवटि गइल ,रोज –रोज का अहजह में पते ना चलल! का करसु बसन्त? कहाँ कहाँ सूतल,भरमल आ अझुराइल लोगन के जगावस आ बाएन बाँटस ! ऊ आपन रस्ता धइले अइले आ चलि गइले!जेकरा गरज बा,ऊ चीन्ह के उनकर अगवानी –मेहमानी कइलस।

टोल महल्ला के लोग तब ठिठकल,जब सुरसती–पूजा के पण्डाल धरे वाला लड़िका राह रोकि के चन्दा असूले लगलें स। अगिले दिन बसन्त पंचमी बा, कैलेण्डर बतवलस !
गाँव जवार के रहे वाला लोग सरेहि घूमत, हरियरी,पियरी आ दोसरा रंग से रँगाइल खेत–बधार देखि के भलहीं बसन्त के सुनगुन पा जाउ, बाकि उहवों अब बसन्त के स्वागत के ऊ उछाह नइखे!शहरी लोगन के त बतिए अलगा बा !इहवाँ लोग अउरी बिजी बा !ओहू में नवका जुग–जमाना के बिजिनेस!आफिसियल बान्ह छान्ह ,जियका–जोगाड़ के झंझट। इहवाँ एघरी के शहरो में फेड़ रूख, बाग ,पारक – बन–बनस्पति से सजल बटले बा, बसन्त महराज एनियो अपना रूप, रस–गंध के झलक देखइबे करेले, बाकि फेरु बतिया एही पर अटक जातिया कि "चीन्हे वाला" चीन्ही! मनमउजी बसन्त अपना रंग में अइहें आ चलि जइहें! बसन्त –फागुन के आफिसियल टोटरम से मनवाँ थोरे रँगाई ?

सृष्टि सिरिजना के लीला आ ओकरा खेला में भुलाइल अदिमी

सृष्टि का सुघराई आ लुनाई(लावण्य) के कवनो जबाब नइखे ! एही में प्रकृति आ ओकरा सँग अनेक जीव–जन्तु बाड़े सन–– नदी ,ताल ,सरोवर ,बन ,परबत, समुन्दर आ ओकरा बिस्तार में लहलह खेत–खलिहान, बाग–बगइचा आ आदमी बा ! सृष्टि सिरिजना के सुघराई आ ओकरा चुम्मकी खिंचाव (आकर्षण) से संसार चल रहल बा ! ई सुघराइये (सौन्दर्य) नु हवे कि हरेक जीव,इहाँ तक कि अदिमियो ओह पर मुग्ध बा ! सुघर रूप आ सुघराई (बाहरी भाग भीतरी)के आकर्षन ना रहित त,बुझला प्रेमो ना उपजित! सृष्टि का हरेक जीव में एही सुघराई क खिंचाव ओके एक दुसरा से जोड़ले – बन्हले भा रचले –बिगड़ले बा ! ई आदमी का दीठि ,संबेदन आ अनुभूति प निर्भर बा कि ऊ प्रकृति भा ओकरा नैसर्गिक सुघराई के कवना नजर, कवना भाव से देखत बा ! आदमी अगर अपना सुभाव आ चाल के ताल प्रकृति से सही ढंग से बइठावे त ओकरा अन्तर में प्रकृति के हास–हुलास उमगबे करी ! लोकमत एही बात के सिखावेला –– प्रकृति का सँगे चलऽ ! अपना के प्रकृति का अनुसार ढाले –– ओकरा अनुसार स्वानुशासन पर जोर एसे देला, कि आदमी बिपरीत समय भा अचके आइल मुसीबत का बेरा अपना के सम्हारि ली ! प्रकृति के प्रकृति हमनी का अनुसार ना चली । हमनी के प्रकृति का रूप–रंग ,साँस–सुबास अनुसार अपना के बदले के पड़ी !
काल परिवर्तन का बदलाव में,क्षेत्र आ उहाँ के जलवायु के बड़हन भूमिका बा ! पहाड़ी एरिया आ मैदानी एरिया में फरक परबे करी , अइसहीं समुन्द्री एरिया आ रेगिस्तानी इलाका के फरक बा! ठंढा का मौसम में कहीं बहुत अधिका ढंड आ कहीं बहुते कम होई त कवनो क्षेत्र में ठंढा आ गरमी दूनो सम होई ! हमहन का और कहाव ओर कहल जाला ––दइब क लीला, कहीं धूप, कहीं छाँह !कहीं कुछ,त कहीं कुछ। दरअसल ई बिधना के बनावल सृष्टिए के खेला आ लीला हऽ ! भारत का पूरबी –पच्छिमी आ दक्खिनी –उत्तरी भाग का जलवायु आ मौसम का असर में जवन फरक लउकेला सब नहीं कारन बा!कहे के त प्रकृति काल (समय) आ ऋतु चक्र वाला पहिया पश घूमेले । एही वजह से कहीं अगताहे फूल–फल–फसल तइयार हो जाला आ कहीं महीना डेढ़ महीना बाद! कहीं आम पहिलहीं मोजराइ के फलगर हो जाला आ कहीं महीना डेढ़ महीना बाद!
एही रितु चक्र में शरद (जाड़ा)बा । जाड़ा में माघ महीना, बाघ कहाला।हमनी का ओर काशी क्षेत्र आ पूर्वांचली एरिया में सितियाइल सितलहरी चलेले आ मघवट चूवेला ––माने सीति अइसन गिरेंले कि सबेर का बेरा फेंड़न का पतइनि से

चूवेले! बाकि लोक में माघ मास पबित्तर मांस मानल जाला! लोकमानस एह मांस के संयम आ अनुशासन वाला मानेला। एह महीना में नदियन में स्नान, ध्यान, पूजन, तप आ कल्पवास क महातम हऽ । खिचड़ी (मकर संक्रान्ति) आ माघी पूर्णिमा एही महीना में परेला। आस्था आ विश्वास के अध्यात्मिक परम्परा अनुसार बहुत लोग खिचड़ी का दिन से महाशिवरात्रि ले एह ऋषिपरम्परा के निबाह करे खातिर संकल्प लेके नदी संगम क्षेत्र में निवास करेला!माघ मास में,जब सुरुज भगवान उत्तरायन होलें त उनसे प्रकाश आ ऊर्जा पावे वाला लोग ग्यान–पुन्न आ आत्मबल अरजन खातिर शास्त्र आ लोकमत का अनुसार, साधना आ तप करेला! गोस्वामी तुलसीदास जी लिखले बाड़े ——

मज्जहिं प्रात सनेह उछाहा। कहहिं परसपर हरि गुन गाहा।।
अतने ना ,ऊ आगा बरनन करत बाड़े ——
ब्रह्मनिरूपन धरम बिधि बरनहिं तत्व बिभाग।
करहिं भगति भगवन्त कै संजुत ग्यान– विराग।।
एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं।पुनि सब निज–निज आश्रम जाहीं।।

गंगा जमुना का संगम स्थली पर प्रयाग में कुम्भ लागेला,जेमे देवतो लोग गमन करेला! एकर बरननो मिलेला ———

माघमासे गमिष्यन्ति गंगायमुन संगमे।
ब्रह्माविष्णु महादेव रुद्रादित्यमरुद्गणरू।।

नदियन का मिलन के उत्सव -परम्परा : त्रिवेणी, प्रयागराज में कुम्भ मेला

हमने का देश में,सरधा–सामूहिकता वाला आध्यात्मिक यात्रा के सांस्कृतिक –परम्परा के जियतार सजीव दृष्टान्त नदियन के मिलन (संगम) वाला जगह पर महोत्सव मेला का रूप में मनावल जात रहल बा! बिना कवनो नेवता भा बोलाहट के, देश का कोना–कोना से आवे वाला एह अद्भुत महाजुटान के दुनिया कौतूहल से देखे–जाने क कोसिस करेले ! ज्ञानी लोग बतावेला कि ई उत्सव बारह राशियन का अनुसार देश के बारह खास स्थान पर, नदी का किनारा का रेती भा एरिया में होला जवना में तीर्थराज प्रयाग (उ०प्र०), हरिद्वार (उत्तराखंड), नासिक (महाराष्ट्र)आ उज्जैन (म०प्र०) ई चार गो प्रमुख नदी–क्षेत्र बा ! देश का दोसरा क्षेत्रन में जगन्नाथपुरी, द्वारिकापुरी, रामेश्वरम् , गंगासागर, सिमरियाधाम , कामाख्याधाम, कुरुक्षेत्र आ कुम्भकोणम् ––आठ गो जगह कुम्भ के जुटान होला! कुम्भ , अर्द्ध कुम्भ आ महाकुम्भ का नाँव होंखे वाला एह आपरूपी आयोजन में लोक का आस्था, विश्वास आ आध्यात्मिक रुचि का कारन अपना आपे जन समूह उमड़ जाला ! खगोलशास्त्र आ ज्योतिष गणना के जानकार एह आयोजन के तिथि निर्धारित करेला लोग!

ग्रह–नक्षत्र आ राशियन का आधार पर, निर्धारित होनेवाला कुम्भ, अर्द्ध कुम्भ भा महाकुम्भ के होंखे वाली गणना, खगोलशास्त्र का मुताबिक एकदम सटीक मानल जाला । छव बरिस पर अर्द्ध कुम्भ, बारह बरिस पर महाकुम्भ आ एक सौ चौवालीस बरिस पर महाकुम्भ के पवित्र स्नान –ध्यान आ अनुशासित भाव से सत्संग, साधना के आपन महिमा आ महातम बखानल गइल बा!

कहल गइल बा कि देवता –असुर का समिलात शक्ति से जब समुद्र मन्थन भइल ,त ओमे से अमरत्व देबे वाला अमृत कुम्भ निकलल! ओके समूचा पावे का ललसा में, देवता आ असुरन में फेर लड़ाई छिड़ गइल! विष्णु भगवान का कहला पर ,सबके अमृत परोसे के जिम्मा इन्द्र के लड़िका जयन्त के दियाइल ,बाकि अधीरता में दानव पक्ष के राहु–केतु का खुटचाल का चलते,जयन्त के अमृत कुंभ लेके भागे के परल ! भागम भाग में अमृत कुम्भ से छलकि के अमृत बून भारत का चार जगह पर गिरल ——ऊ चार जगह रहे हरिद्वार, उज्जैन, नासिक आ प्रयाग! जयन्त का रक्षा में लागल दोसर देवता लोग में सूर्य, चन्द्रमा,बृहस्पति,शनि रहे लोग। एही से सूर्य,चन्द्र, बृहस्पति आ शनि (ग्रह) के बारह राशियन में बिचरन का आधार पर ज्योतिष गणना कइल जाला! ग्रह राशियन का संजोग पर, लागे वाला कुम्भ का एह उत्सव मेला में लोग खुदे, बिना नेवतले,रेला बान्हि के चल देला – बुझाला जइसे आस्था–विश्वास के कवनो अदृश्य आध्यात्मिक चेतना,जन चेतना के जगाइ के लहकाइ देले होखे । एह अवसर पर साधु सन्तन आ धर्माचार्यन के कई कई सभा –सतसंग वाला पण्डाल लागि जाला आ पवित्र नहान का बाद, लोग जीवन दर्शन आ ग्यान का एह सत्संग के लाभ उठावेला !

दुनिया खातिर अजूबा: प्रयागराज के महाकुम्भ

उत्तर प्रदेश के प्रयाग में भइल संगम क्षेत्र के महाउत्सव महाकुम्भ एक सव चउआलिस साल बाद लागल ! माघ महीना में, पैंतालिस दिन तक (मकर संक्रान्ति से महाशिवराति तक)चले वाला ए लोकप्रिय महोत्सव में जनचेतना के जियत–जागत महाजुटान के अइसन साखी बनल कि दुनिया चकचिहाइल देखते रहि गइल ! नदी मिलन का त्रिवेणी स्थल का सुदूर

तक फइलल एह महाकुम्भ में, देश –बिदेश का लोगन के अइला के आंकड़ा बतावल गइल –छाछठ करोड़ (66 करोड़) !! ई अजगुत देखत दुनिया चिहाइल, दुनिया के मीडिया बखनलस कि इहाँ त कई कई देशन के पूरा आबादी क गिनती थोर परि गइल।

यू०पी० के 75 जिलन में एगो अउरी जिला भ गइल 'महाकुम्भ मेला जनपद '!4000 हेक्टेयर का एह मेला क्षेत्र,जवन 25 सेक्टर में बाँटल बनावल गइल, ओहमें संगम के बिहंगम अवलोकन खातिर ऊँचाई पर एगो नए नगर टेन्ट–सिटी बनावल गइल। जाये खातिर तीस से अधिके द्वार (गेट) रहल! हजारों लाखों लोग सफाई–सुरक्षा , चिकित्सा,भोजन भण्डारा, अइला –गइला आ देख भाल का इन्तजामे में लागल रहल । अइसे त एह महाजुटान में लोग खुद अपना निज अनुशासन में सम्भरि के आवेला,तब्बो भीड़ मेनेजमेंट, आवाजाही मैनेजमेंट, पार्किंग अउरी लाखन लोग के नहान मैनेजमेंट का बाद कल्पवास करे वाला लोगन के खइला पियला , रोग निदान आदि आदि बातन के खेयाल खातिर इन्तजाम।एह मेला का महाजुटान में अपना भारी जनसमूह उमड़ल कि दुनिया हैरान रह गइल। आधुनिक सुविधा वाला,दिब्य आ भब्य ढंग से ,रोसनी का एह जगमगात नगर में जात, सम्प्रदाय, क्षेत्र,वर्ण आ भाषा के कूल्हि भेद मिटावत अइसन सचेतन जन

ज्वार उमड़ल कि तरह तरह के विघटन बँटवारा करके जनता के आपुसी बैमनस आ दुश्मनी बढ़ावे वाला खुराफातियन के होशे उड़ि गइल !

आस्था का एह सांस्कृतिक आध्यात्मिक परम्परा वाला, उत्प्रेरक महामेला में लोगन के सरधा–विश्वास आ एकता के बिकसल रूप देखि के उन्हनी के महा अचम्भो भइल,जवन कुटिल सवारथी–राजनीति के रोटी खात रहलन स! कतनो सुघर आ बढ़िया इन्तजाम वाला आयोजन में नुक्स निकाले वालन खातिर,करोड़न लोगन के अतना बिशाल आयोजन बड़ा खटकल। आयोजन से चिढ़े–चिहाये वाला कई गोड़न के तऽ अइसन मरिचा लागल कि मत पूछीं! कवनो एके फालतू कहलस, कवनो मृत्यु कुम्भ तक कहलस, कवने गंगाजल के प्रदूषित कहलस बाकिर साँच त प्रमाणित होइए जाला आ झुट्ठा के मुँह करिया हो जाला! छाछठ करोड़ लोग आस्था भाव से ,एह सांस्कृतिक आध्यात्मिक चैतना से चौतन्य होके, बिना बोलवले सामूहिकता के संस्कारित करत आइल आ सगरी कुप्रचार ,अफवाहबाजी का गाल पर तमाचा मारत, महापुन्य लूटि के अपना –अपना घरे चलि गइल !

बीति गइल फागुन मनभावन : चइत बनी मनसायन

राग–रंग–रस से सराबोर करत मनभावन फागुन का जाते एगो खालीपन जइसन बुझाए लागल।बहरा से आइल नेही–छोही आ आपन कहलाए वाला लोग फगुआ (होली) मनाइ के अपना –अपना ठाँव लवटि गइल ।बिछोह आ प्रिय –विरह के अवसाद आ आलस लिहले चइत चढ़ गइल। गाँवें– गाँवें चइती आ चइता क राग सुनाए लागल! बैरिन कोइलिया के हूक भरल कूक से , विरही मन के पीर लिहले कवि का सँगे, गावे –बजावे वाला गुनी धुनी लोग आपन–आपन राग–रंग साजे लागल ।

एकाधे हफ्ता बाद नवराति क दिन आ जाई ।नवमी पुजाई!

'पाती' के ई नवका अंक रउरा हाथ में होई ! नवराति प्रकृति स्वरूपा भगवती का स्वागत, सेवा आ पूजन के समय हऽ। हम सबका, (सपरिवार) जोग –क्षेम खातिर माई से निहोरा करत बानी–"सभकर भल होखे!"

डॉ0 अशोक द्विवेदी

कहे के त सभे केहू आपन, आपन कहाए वाला के बा ?

डा0 ओमप्रकाश सिंह

साल 1982 में रिलीज भइल भोजपुरी फिलिम 'गंगा किनारे मोरा गाँव' में महेन्द्र कपूर आ साथियन के गावल आ लक्ष्मण शाहाबादी के लिखल ई गीत बहुते लोग का दिलो दिमाग पर बसल होखी. आजु एकर इयाद हमके बरबस आ गइल जब भोजपुरी के दशा–दुर्दशा पर कुछु बिचारे लगनी गाना के बोल रहल –

कहे के त सभे केहू आपन आपन कहावे वाला के बा'
सुखवा त सभे केहू बाटे, दुखवा बँटावे वाला के बा?

भोजपुरी का साथे जवन कुछ हो रहल बा तवना के संक्षेप में कहे के होखे त एह ले आसानी से कुछ अउर ना कहा पाई। भोजपुरी त हमार माईभाषा हियऽ बाकिर हम सार्वजनिक रूप से एकरा से करीब बाइस बरीस से जुड़ल बानी। एह दौरान बहुते कुछ उतार–चढ़ाव देखे के मिलल। दुनिया में भोजपुरी भाषा में पहिलका वेबसाइट के शुरुआत हमहीं कइनी आ आजु ले लाखन परेशानी का बावजूद एकरा के जियतार बनवले रखले बानी। कब ले रख पाएब, नइखी जानत। हँ एगो भामाशाह का कृपा से एकर आर्थिक पक्ष सम्हार लिहला का बाद परेशानी जरूर कुछ कम हो गइल बा।

बरीस 2003 में जब अंजोरिया डॉटकॉम anjoria.com के प्रकाशन बलिया (उत्तर प्रदेश) से शुरू कइनी त बस एगो अरमान रहल अपना माईभाषा ला कुछ करे के. सौभाग्य से वेबसाइट बनावे चलावे के कुछ साधारण जानकारी रहल आ ओकरे बल–बूते प्रकाशन शुरु कर दिहले रहीं. हमार पृष्ठभूमि साहित्य आ कला से ना रहला का चलते पहिला दिक्कत आइल प्रकाशन करे जोग सामग्री के। त सबले पहिले भेंटइनी एगो होम्योपैथिक डॉक्टर राजेन्द्र भारती. उहाँ के बलिया से प्रकाशित होखे वाला एगो पत्रिका (उमिर के किनार पर याददाश्त कम होखे लागेला, से ओह पत्रिका के नाम इयाद नइखे पड़त.) के संपादन करत रहीं. प्रकाशन जोग सामग्री देबे के शुरुआती सहजोग उहें से मिलल. बाद में एक दिन अचानक एगो बुकस्टॉल पर 'पाती' पत्रिका देखे के मिल गइल। पन्ना पलटनी त देखनी कि अरे इहाँ बलिये से प्रकाशित होले. माननीय डॉ अशोक द्विवेदी जी के फोन नम्बर दीहल रहल पत्रिका में। फोन लगवनी आ आपन समस्या बतवनी. द्विवेदी जी आ भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका पाती से हमार जुड़ाव तबहिये से बा। द्विवेदिओ जी भरपूर जिद्दी जीव हईं। आपन रुपिया लगा के, जाङर खपा के, अगढ़ सामग्री के सजा–सँवार के प्रकाशन जोग बनावे के, आ एगो सुन्दर पत्रिका निकाले के समर्पण उहाँ में देखनी. अब उहाँके चलावल एह पत्रिका के अनवरत प्रकाशन आजुओ उहाँ के सुपुत्र प्रगति द्विवेदी जी का प्रयास से अबले जारी बा। शायदे दोसर कवनो भोजपुरी पत्रिका होखी जवन अतना बरीसन से लगातार प्रकाशित होखत आइल बा। आ 'पाती' के प्रशंसा एहू ला होखे के चाहीं

कि एकर सामग्रिए ना, एकर कलेवरो दोसरा भाषा के कवनो मशहूर पत्रिका से कइल जा सकेला।

रउरा सभे सोचत होखब कि हम आत्मश्लाघा में काहें लागल बानी। बाकिर असल बात ई बा कि पाकल आम कब गाछ से टपक जाई ई केहू नइखे जानत। एह चलते एकरा के बता दीहल जरुरी लागत बा।

हँ त जब अंजोरिया के प्रकाशन शुरु कइनी तऽ ऊ दौर भोजपुरी सिनेमा के जमाना रहल। भोजपुरी के लोकप्रियता का चलते हिन्दी निर्माता लोग के दिक्कत बुझाए लागल रहल भोजपुरी सिनेमा के मुकाबला करे में. से ओहनी के प्रयास शुरु हो गइल। घर के भेदी लंका ढावे वाला अंदाज में भोजपुरी के कुछ लठधर जुट गइलें आ लागल विरोध होखे भोजपुरी के अश्लीलता के नाम पर। एही दौरान एगो अउर मजगर भोजपुरी पोर्टल के आगमन हो चुकल रहल. जमशेदपुर से चलावल जा रहल एह भोजपुरी पोर्टल 'भोजपुरिया डॉटकॉम' का लगे सब कुछ रहल. तकनीकी जानकारी, आर्थिक ताकत, आ एगो समर्पित समूह। भोजपुरी के दुर्भाग्य कहीं कि एह पोर्टलो के कुछ लोग विवाद का घेरा में एहतरह ले के आ गइल कि उबिया के एकरा के बन्द कर देबे के पड़ल।

तब भोजपुरी के मौजूदगी इन्टरनेट पर अंगरेजी भाषा में भा रोमन लिपि में रहल. याहू डॉटकॉम पर एगो ग्रूप रहल भोजपुरी के समर्पित. विनय जी, शैलेश जी वगैरह लोग तब एगो भोजपुरी टाइम्स नाम के सोशल मंच चलावे के शुरु कइल लोग. बाकिर सभ कुछ का बावजूद इहो मंच कुछ समय बाद बन्द हो गइल.

ओही दौरान 'महुआ' टीवी के आगमन भइल। बहुते लोकप्रिय रहल रहल टीवी पर. बाकिर इहो ढेर दिन ले ना चल पावल। अपना एकइस बरीस के अनुभव में देखनी कि बहुते पत्रिका, वेबसाइट, चैनल शुरु भइली सँ बाकिर सभका के जम्हुआ छू देत रहुवे। कहले जाला कि जम्हुआ के छूअला के डर कम, परिकला के बेसी होखेला। भोजपुरी प्रकाशन एह जम्हुआ (टिटनेस) के शिकार हमेशा से होखत आइल बा।

सोचे के बाति बा कि कहल जाला कि दुनिया में भोजपुरी बोले वाला लोग तीस करोड़ से बेसी बा। बाकिर अतना बड़हन समूह होखला का बावजूद भोजपुरी के कवनो अखबार ना निकले, कवनो टीवी चैनल टिक ना पावे, आपन लिखलका के अपने खरचा से छपवा के किताब आ पत्रिका का रुप में प्रकाशित करे वाला लोग कम नइखे भोजपुरी में. बाकिर जब केहू ओकरा के देखहीं–पढ़हीं वाला ना भेंटाई, भा ना टिकी, त कब ले खँस्सी के माई खरजिउतिया मना पाई।

आ इहे असल कारण बा भोजपुरी के दशा–दुर्दशा के. भोजपुरी के तब के दौर में सबका लागत रहुवे कि भोजपुरी भाषा के संवैधानिक मान्यता मिलिए जाई। बाकिर सब सपने रह गइल. एने पिछला महीना जरुर एगो नीक खबर आइल उत्तर प्रदेश के योगी आदित्यनाथ सरकार का तरफ से. अब सरकार फैसला क लिहले बिया कि विधानसभा में विधायक आपन बाति भोजपुरी, अवधी, ब्रज, आ बुन्देली में कह सकेलें आ बाकी लोग ला ओकर अनुवाद करे के व्यवस्था बन गइल बा।

बाकिर का सब कुछ सरकारे भरोसे हो पाई, हमहन मातृभाषा भोजपुरी वाला भोजपुरियन के कवनो जिम्मेदारी ना बने। कुछ प्रभावशाली धनपशु लोग जरुर बा जे भोजपुरी के संस्था के पालन पोषण कर रहल बा बाकिर ओकर कीमत ऊ लोग एहसे वसूल लेला कि ओह संस्था में सबकुछ उनुके मरजी के होखे–चला। एहू लोग के ओतना दोष नइखे जेतना आम भोजपुरियन का माथे बा। रउरो एगो सवाल अपना से कर के देख सकिलें कि रउरा भोजपुरी खातिर केतना आ का करत बानी? अगर लोग दिन भर में एको घंटा भोजपुरी के देबे लागे त भोजपुरी के कल्याण हो जाई। रोज कवनो ना कवनो भोजपुरी पुस्तक पढे के जुगत भिड़ाईं। दिन में कवनो ना कवनो भोजपुरी साइट पर पन्द्रह मिनट, आधा घंटा बितावल शुरु कर दीं। रोज कम से कम एगो भो. जपुरी गीत–गवनई देखे–सुने के कोशिश करीं। यूट्यूब पर बहुते अइसन वीडियो मिल जाई जवना में बढ़िया गीत–गवनई मिल जाई परिवार का साथे मिल बइठ के सुने जोग। वइसनका गीतन के अपना सोशल साइटन पर साझा करे लागीं त भोजपुरी के बहुते कल्याण होखे लागी।

काहे कि जब भोजपुरी सिनेमा, गीत–गवनई, पत्रिका, किताब के समर्थन मिले लागी त ओह काम में लागल लोग के कुछ खरचा–पानी निकले लागी. कवनो भाषा तबले आगे ना बढ़ पावे जब ले ओक. रा माध्यम से रोजी–रोजगार–व्यवसाय ना चले लागे. भोजपुरी अगर अबहियों जिन्दा बिया त ऊ गीते–गवनई का बल पर, आम भोजपुरियन के बोलचाल के भाषा बनल रहला का चलते. ना त हिन्दी में बहुते अइसन

मूर्धन्य साहित्यकार मिल जइहें जे भोजपुरी इलाका के होखला बावजूद माईभाषा से बेसी मेहरी–भाषा के गुलाम बन गइल बाड़ें. अइसने कुछ नामधन्य लोग हमेशा लँगड़ी मार देला। जब–जब भोजपुरी के विकास के, भोजपुरी के सवैधानिक मान्यता के कोशिश होखेला।

आज जब समस्ये रेघरियावल शुरु कइले बानी त भोजपुरी के अखिल भारतीय, अखिल विश्व संस्था सम्मेलनो के दोष कम नइखे। हमरा सबले बेसी पीड़ा होखेला जब हमरा लगे अइसने कवनो संस्था सम्मेलन के खबर आवेला। (बहुते कम संस्था सम्मेलनन के मालूम बा कि भोजपुरी के एगो बाइस बरीस पुरान वेबसाइटो बा) विज्ञप्ति हिन्दी में रहेला आ देखते हमार खून जरे लागेला। अगर भोजपुरी के नाम पर संस्था सम्मेलन चलावे वाला लोग भोजपुरी में आपन विज्ञप्ति जारी ना कर सके, त धिक्कार बा अइसन संस्थन के। अगर रउरा सचहूँ भोजपुरी ला कुछ करे में लागल बानी त राउर मूल विज्ञप्ति भोजपुरी भाषा में रहे के चाहीं आ ओकरा साथ ही हिन्दी–अंगरेजी अनुवाद नत्थी कइल जा सकेला। हिन्दी–अगरेजी समाचार पत्रन में राउर खबरो छप जाई आ ओह लोग के बुझइबो करी कि भोजपुरी ला कटिबद्ध बिया ई संस्था। बाकिर जब राउर विज्ञप्ति हिन्दी में मिली त उनुको पता चल जाई कि रउरा अपना छपास के साध पुरावे में लागल बानी!

एगो आउर समस्या कहल जा सकेला एगो सर्वमान्य मानक के कमी। हिन्दी से पढ़ाई करे वाला लोग भोजपुरी बोल भलहीं लेव, पढ़े में ओह लोग के बहुते दिक्कत होखेला. काहें कि भोजपुरी में स्वर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ ले सीमित ना रहि के दीर्घ अ, अल्प ह्रस्व इ, उ, ए, दीर्घ दीर्घ अ, ई, ऊ, ऐ मिलेला. बोलत घरी एकर फरक ओतना ना बुझाव जतना पढ़त घरी होखेला। भोजपुरी में 'भी' 'ही', आ 'ने' के प्रयोग से बचे के चाहीं। 'कि' आ 'की' के सही प्रयोगो जाने के चाहीं। अवग्रह चिह्न 'ऽ' के सही उपयोगो के जानक. ारी रहल जरुरी बा। एकर प्रयोग कई बेर बेवजह देखे के मिल जाला, जवन ना होखे के चाहीं। भोजपुरी में संज्ञा के रूप संस्कृत लेखा बदलल करेला बाकिर कुछ लोग बहुते असहज हो जाला 'नरेन्द्रो मोदी' 'राष्ट्रपतिओ' 'रमेशो' वगैरह पढ़त घरी असहज होखे लागेला। कुछ लिखनिहार हमरा से एही चलते नाराज हो गइलें कि हम भोजपुरी में 'भी' आ 'ही' के प्रयोग ना करीं, ना करे दिलें।

हमार पृष्ठभूमि कबो साहित्य आ व्याकरण के ना रहल। एह चलते हम कई बेर भोजपुरी के विद्वानन से निहोरा क के थाक गइनी कि मिल बइठ के एगो व्याकरण ना त कम से कम मानक त बनाइए लीहल जाव. बाकिर सभे नकार दीहल। काहे कि ई अइसन विषय बा जवना पर दू गो विद्वान लोग एकमत ना हो सके. बाटे, बावे, बाड़े। बड़ुए, बाने के विवाद से सभे बचल चाहेला आ एही से सभे कतरा के निकल जाला। सभका आपने बात सही लागेला। बाकिर एकर अनदेखी कइला से भोजपुरी के बहुते नुकसान हो रहल बा।

सोचीं कि तीस पैंतीस करोड़ भोजपुरिहन के होखला के का फायदा अगर एगो भोजपुरी अखबार, एगो पत्रिकाभा भोजपुरी चैनल बाजार में टिक ना पावे। नवहियन के भोजपुरी से लगाव नइखे रहि गइल काहें कि भोजपुरी रोजी–रोटी के भाषा नइखे बन पावल। भोजपुरी फिलिमन आ टीवी चौनलन के चलल दौर थथम गइल बा। भोजपुरी के लठधर गीत–गवनई के बन्द करावे में अबो ले सफल नइखन हो पवले ई एगो संजीवनी के काम करेले भोजपुरी ला। अरे भाई रउरा फूहड़ गीत से परेशानी बा, सभ्य 'लील गीत–गवनई के परोसल आ प्रचार शुरु कर दीं। कवनो कमी नइखे भोजपुरी में तथाकथित 'सभ्य' "श्लील" कहाए जोग गीत–गवनई के। बाकिर घून का साथे जौओ के पीसे में लागल बा लोग। वइसनका लोगन से फरके रहीं। कोशिश करीं कि दोसरा भोजपुरियन से जब बोलब त भोजपुरिए में। हिन्दी भा अंगरेजी में वार्तालाप तबे करीं जब सामने वाला गैर भोजपुरिया होखे। देश के पहिलका राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र बाबू के कबो शरम ना आवत रहे भोजपुरी बोले–बतियावे में. बाकिर मन के छोट आ औकात में भारी लोग भोजपुरी बोले–बतियावे में शरम करेला। माईभाषा से बेसी छोह ओह लोग के मेहरी–भाषा से होखेला. काहे कि मेहरी उनुकर हर जरुरत पूरा करेले। अब हमरा नइखे लागत कि मेहरी–भाषा के नाम लीहल जरूरी बा. रउरो बूझ गइल होखब।

नइखीं जानत कि 'पाती' खातिर लीखल ई लेख ओमें प्रकाशित हो पाई कि ना। नइखीं जानत कि अगिला अंक में कुछ लिख पाइब कि ना। बाकिर भोजपुरी–मोह अइसन बा कि भोजपुरी के थथमल पानी से उपजल सँड़ाध जिए नइखे देत आ माईभाषा के छोह मुए नइखे देत. रउरा का सोचत बानी?

❑ अँजोरिया डाट काम

बदलाव का आन्ही में घर-परिवार

प्रेमशीला शुक्ल

हमके गरमी के छुट्टी गाँव में बितावल अच्छा लागेला। एकरे खातिर कई लोग हमार उपहास उड़ावेला तब्बो हम महानगर के सब सुख–सुविधा छोड़ि के गरमी की छुट्टी में गाँवहीं जानी। पिछली बेर हम अपनी रिश्तेदारी की एगो गाँव में रहनी। ई गाँव राप्ती नदी के छाड़न एगो छोट नदी के किनारे रहे। हमरे रिश्तेदार के परिवार गाँव के सम्पन्न आ प्रतिष्ठित परिवार रहे। घर का पीछे बड़हन बगीचा रहे, जवना में फलदार पेड़ का साथ एगो भारी बर के पेड़ रहे। पेड़ के नीचे दूगो सीमेंट के बेंच बइठे के बनावल रहे बाकी बइठवइन का ढेर मजा बर की सोरि पर बइठला में आवे। एही बर तर गाँव की मेहरारू लोगन के दुपहरिया में बइठकी होवे। जेठ के लमहर दुपहरिया कइसे बीत जाए बुझइबे ना करें।

बइठकी में दुनिया–जहान के बात ना होखे, सबकर घरकच–बनकच होखे। केहू का अब खुद्दी–चुन्नी के दुःख ना रहे, उपासे सुतले के नउबत ना रहे, एसे माघ महीना केकर खरची घट जाला, बइसाख काहे राजा महीना ह– ना खरची के दुःख ना ओढ़ना–बिछौना के एकर चरचा अब बइठकी में ना होखे। सास–पतोहि के रार–तकरार आ देवरान जेठान के उघटा – पुरानो बइठकी में कम हो गइल रहे, ढेर पतोह लोग सहरे चलि गइल रहे, देवरान–जेठान अलगा–बिलगी क लेले रहे बाकी बइठकी अब्बो एही लोगन का आरी – पासी घूमे। अब सबका ए बात के चिन्ता रहे कि बेटी – पतोहि में बेपरदगी बढ़त जाता। पहिले अधबुढ़ भइलो पर ससुरा में केहू लिलार उधार ना राखे अब महीना..दू महीना की गवनहरी के कपार उधार रहता। पहिले कुँवार–बार लड़की सिंगार–पटार ना करे अब बिअहल– बेबिअहल में सेनुर के छोड़के कवनो दूसर फरके नइखे रहि गइल। अनेति बा, अनेति। पतन होई।

कबो – कबो हम बीच में टोकि दीं, "सब अनेति बेटी–पोतहि करेली, कबो बाबू लोग कुछ ना करेला?"

हमके जवाब मिले, 'करेला बहिनी, ऊ लोग काहें कम रही? बाकी तूँ अपने विचार कर घर–परिवार घरनी से चलेला। नारी तन पावते–पावते जिम्मेदारी बढि जाला। मेहरारू ना रहे त धरम–करम चली? सबके सम्हारे वाली मेहरारू हऽ आ आज के जमाना में मेहरारू ऊपर बा। लइके त नया साँसत में पड़ल बाड़े।'

हम पूछीं, 'कइसे?'

हमरी सामने उदाहरण सहित साँसत गिना दिहल जाए। "लड़की पढ़े–लिखे लगली। उनुका जोग लइका खोजल आसान नइखे। ओहू में लइकी लोग के आपन पसन्द। केहू खेती करे वाला लइका पसन्द ना करी। सबका नोकरिहे चाहीं। नोकरी मिलत नइखे, बिआह होत नहखे। लइके बिना खूँटा के। एहर–ओहर मारल फिर ताड़े। जेकर बिआह हो जाता ऊ घरनी के फैसन पूरा नइखे क पावत, जेकर घरनी नोकरी वाली बा ऊ अपना नोकरी के नसा में बाा। बहिनी, कहाँ तक बताईं, तू अपने सोच के देख। सोच, अब त छुट्टा–छुट्टी तक हो जाता, आगे जवन ना होवे।' हम सुनत रहीं आ सोचत रहीं। हमरी सामने अखबार के रोज के खबर के तरह–तरह के रंग नाचे लागल–दाम्पत्य जीवन के कलह, हत्या, बलात्कार स्त्री उत्पीड़न, तलाक, लिव इन, कुंठित व्यक्तित्व के बाल–बच्चा, आत्महत्या अउर बहुत

कुछ। हमार कपार घूमे लागल। हम समुझावे के चाहीं कि ई सब लइका–
लइकी के अलगे–अलगे बात नइखे, दूनूँ के बात बा, पूरा समाज के बात बा। हमके अचरजो रहे कि बिना पढ़ल–लिखल ई महिला समाज अपना गाँव– घर से केतना भीतर से जुड़ल बा आ सब बात जानत–समझत बा। अचरज के सूत पकड़ले हम हजारों साल पहिले का समय में पहुँच गइनी।

जीव के चार लक्षण ह – आहार, निद्रा, भय आ मैथुन। एमें निद्रा आ भय प्राकृतिक रूप से बिना मनुष्य की सक्रियता के आपन काम करत रहेले जबकि आहार आ मैथुन आदमी की सक्रियता से जुड़ल रहेला आ आहार खातिर कुछ हद तक जबकि मैथुन खातिर आदमी का पूरा–के–पूरा दूसरा के सहयोग के जरूरत पड़ेला। अपनी अइसन आ अइसने कुछ अउर जरूरत (जइसे सुरक्षा, आपदा) के कारण आदमी में समूह के भाव जागल फिर आगे समाज, परिवार बनल। जहाँ के जइसन प्राकृतिक आ मानव संसाधन रहल, उहाँ ओही का अनुरूप सभ्यता–संस्कृति के विकास भइल, जहाँ के जइसन खून पसीना रहल उहाँ ओइसन रहन–सहन, पहिरन–पोशाक, आचार–विचार बनला जगह आ समय चाहे जवन रहल होखे समाज आ परिवार के महत्व सब दिन आ सब जगह रहल बा। परिवार समाज के सबसे छोट इकाई ह, एकर आधार विवाह ह आ रक्त सम्बन्ध विवाह के परिणति ह। परिवार में रक्त सम्बन्ध से जुड़ल आदमी एक साथ रहेला आ एक दूसरा के हर तरह से सहयोग करेला। आदमी के सुखी जीवन आ सर्वतोमुखी विकास खातिर परिवार के महत्व बहुत अधिक ह। परिवार आ समाज की छत्रछाया में जीवन मूल्य के विकास होला, जवन कवनो संस्कृति के स्वरूप निर्धारित करेलें। कालान्तर में इहे जीवन मूल्य व्यक्ति आ समाज के नियामक तत्व बनल। आज विडम्बना ई बा कि जवना परिवार आ समाज के, आदमी बरिसन – बरिसन के अनुभव के बाद अपना हित खातिर बनवलस, आज उहे संकट में बा। बलू कहल जाए कि खतम भइला का कगार पर बा। विचार कइ लगजाए त गाँव की बइठकी में महिला समाज की बतकही में चर्चा उठत रहे ओकरा तह में रहे विडम्बना बा। पश्चिमी समाज ए विडम्बना का चपेट में पूरा–पूरा आ गइल बा। भारतीय शहरी समाज में एकर असर साफ–साफ दिखाई देता। भारतीय गँवई समाजो में एकर छाया आइल शुरू हो गइल बा।

भारत में पितृ सत्ता प्रधान संयुक्त परिवार के चलन रहल बा। गाँव में एक पिता के कई लड़का अपना पत्नी आ बाल–बच्चा का साथे एक परिवार में रहत रहलें। पिता मालिक रहत रहलें। केहू कमाए खातिर अंगाल–बंगाल–आसाम जइबो करे तऽ ओकर पत्नी आ बाल–बच्चा गाँवहीं रहे। गाँव रहे वाली पत्नी के वियोग व्यथा भोजपुरी लोकगीत के रूप में समाज में गावल जाला। भिखारी ठाकुर के प्रसिद्ध गीत 'गवना कराई पिया घरे बइठवले से अपने चलेले 'परदेस रे बटोहिया' का रूप में ई व्यथा मार्मिक ढंग से व्यक्त भइल बा। आगे चल के जब दूसर तरह–तरह के कारण से नौकरी के जमाना आइल, 'निषिध चाकरी' जब उत्तम खेती के स्थान से लिहलस तब गोकरिहा पुरुष बाल–बच्चा समेत अपनी पत्नी का साथे शहर में रहे लगलें, पत्नी के वियोग दुःख खतम भइल। परिवार के मतलब हो गइल– पति–पत्नी आ दुनूँ जने के बच्चा। ई भइल एकल परिवार, परिवार के नया रूप। संयुक्त परिवार में ससुर–भसुर सब साथे रहे त घुघ्घुट काढे के पड़े, देवर– ननद रहे जेठान– देवरान रहे त झगड़ा रहे, हँसी – परिहास रहे अब शहर में के से घुघ्घुट – एगो गँवारे के निसानी। अब अपना मन के राज बा, जवन आगे चल के बेपरदगी आ स्वच्छन्दता में बदल जाईं। शहर के देखा देखी गाँव की पतोहियनों में ई शौक बढ़त गइल, जवना के दुःख बइठकी में सासु लोग रोवेला। हालाँकि सासु लोगन का ई बतावत में बहुत खुशी होखे कि उनुकर बेटा शहर में घर बनवा लेले बा। कहाँ पहिले दू–चार पुस्त में कहूँ एक आदमी घर बनवावे, ओही में आगे वाली कई पीढ़ी रहे, कहाँ अब एके आदमी ए शहरे ओ शहरे फ्लैट लेबे लागल आ नया फ्लैट संस्कृति आइल, जवना के नीक–बाउर समाज भोगऽता।

ए सबका साथे–साथे परिवार के स्वरूप एकल परिवार से भिन्न विकसित होखे लागल। पहिले माता–पिता का साथे एकाधिक सन्तान, फिर क्रमशः इ–एक आ बिना सन्तान के। एकरा आगे सिंगल मदर, लिव इन, कैन्सिल कल्चर जइसन शब्दन के भ्रमजाल एह तरह से आइल कि 'विवाह' नाम के शब्द बिला गइल, परिवार के अवधारणा तार–तार हो गइल। परिणाम में समाज कवने दलदल में फँसल जाता, एके आँख खोल के देखला के जरूरत बा। ई इन्कार ना कइल जा सकेला कि भारतीय समाज पश्चिमी समाज के देखा–देखी ए दलदल में फंसल ह बाकी इहो देखे के पड़ी कि ए सब खातिर कवनो स्थान ना बल्कि बाहरी कारण जिम्मेदार बा। पश्चिमी समाज में औद्योगीकरण का बाद जब रोजगार के साधन उद्योग बन गइल आ शहरीकरण शुरू भइल तब एकल परिवार के चलन आ. इल। आगे चलिके फ्रांस की क्रान्ति का बाद स्वतंत्रता आ समानता प्रमुख जीवन मूल्य के रूप में मानल गइल,

जेसे पूरा पश्चिमी समाज बहुत प्रभावित भइल। आगे चल के ई दुनिया भर में वैयक्तिक आ सामाजिक जीवन सबसे महत्वपूर्ण मूल्य मानल गइल। वर्ण, जाति, लिंग के आधार पर कवनो तरह के भेदभाव अब कहीं, केहू का स्वीकार नइखे। एकर धनात्मक प्रभाव आज हर समाज में देखल जा सकेला। विज्ञान का दिहले आज हर तरह के सुख सुविधा सबका मिल रहा बा, उद्योग धन्धा, खेती–किसानी सब उन्नति पर बा। तब्बो हर चेहरा की हँसी का पीछे आँसू के जबरन रोके के कोशिश लउकत बा, स्वकेन्द्रित समाज में भीड़ का बीच के अकेलापन बा, स्त्री–पुरुष का अपना के अकेले परिवार मान लिहला से उपजल अधूरापन बा, हर आदमी में असुरक्षा के भय आ हताशा के आतंक बा। इक्कीसवीं शताब्दी की नव्य आधुनिकता के ई सब ईनाम ह। अगर व्यावहारिक स्तर पर अपना समाज का बारे में विचार कइल जाए त मोटा–मोटी रूप में तेज गति के बदलाव शॉर्टकट संस्कृति, भोग के प्रध. ानता आ जिनिगी के गलत समझ के ए ईनाम के कारण मानल जा सकता।

बदलाव प्रकृति के नियम ह। आदमी के जीवनो में बदलाव आवेला। आदमी ओके सहज रूप से स्वीकार क के ओकरा का हिसाब से आपन रास्ता बनावेला। आज के आदमी का बदलाव के सामना एतना जल्दी–जल्दी आ बेढंगा रूप से करेके पड़ता कि जेतना देर में आदमी ओ बदलाव का हिसाब से अपना के बनावता, ओतना देर में ऊ बदलाव पुरान पड़ जाता आ नया बदलाव आ जाता। बदलाव में तालमेल ना बना पवला से आदमी में भ्रम, निराशा, अनिर्णय, अन्यमनस्कता जइसन मनोवृति पनपे लागता।

बदलाव जगह–जगह बा। विज्ञान आ बाजार एके हवा देता। फोन के जमाना आइल त रोजी–रोटी खातिर आदमी पी.सी. ओ. खोलल, मोबाइल आ गइल त ऊ बेकार हो गइल। अंगना में बिआह के चलन जाता त सब मैरेज हॉल खोलऽता, डेस्टीनेशन मैरिज के शौक शुरू भइल बा त छोट शहरन के मैरिज हॉल के माँग कम होता। एक बेर एम.बी.ए. के शोर उठल त लइके ओहर पढ़े दउरेलें, अब ऊ ठंडा होता। लइके मर–मर के इंजीनियरिंग के कोचिंग करऽ ताड़ें, ओकरे पीछे आत्महत्या क ले ताड़ें कवनो तरह से इंजीनियरिंग पढ़लें त 20–25 हजार के नौकरी मिलल, अब सुन में आवता इंजीनियर बहुत हो गइल बाड़े, आखिर लइके सब कहाँ जइहें? अइसन बदलाव के आंधी कब्बो ना रहे। कवनो चीज के नया से पुरान होत देरी नइखे लागत। आज के जमाना तइयार माल के जमाना हो गइल बा। अँचार, मसाल, मसला, चटनी, बड़ा घोल, इडली घोल सब डिब्बा बन्द बाजार में मिलता। डिब्बा खोलऽ छानऽ, खाइल शुरू दू मिनट में बने वाली मैगी बा। बाजार में एक–से–एक रेडीमेड ड्रेस बा, सोसाइटी में बनल–बनावल फ्लैट बा। कवने बात के दुःख बा? इन्तजार के कवनो सवाल ना, जब चाहऽ, जरूरत पूरा। ई सब प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में समाज में धन लोलुपता, बिना जरूरत के अनर्गल इच्छा, इच्छा के जल्दी पूरा करे के अधीरता जगावता, संयम, त्याग से दूर करता आ समाज के पतन की ओर ले जाता। सबका सब चाहीं बिना मेहनत के, शार्टकट से।

भोग के अति आ जिनिगी के गलत समझ अइसना में आग में घीव के काम करता। भोग के नया–नया साधन आदमी का चारों और छितराइल बा, ओकरा बुझाता कि जिनिगी के जेतना दिन मिलल बा, ओमे जेतना भोग सकेला ओतना आदमी भोग लेव। ई देहियाँ माटी के ढेला, बून पड़त गलि जइहें ना, भज लऽ ए मन राम नाम ना त फिर पाछे पछतइबऽ' वाली समझ बहुत कम आदमी में बँचल बा।

ए सबके मिलल–जुलल असर आदमी के सम्बन्ध आ समाज पर पड़ रहल बा, रहन–सहन आ सोच–समझ पर पड़ल बा। सम्बन्ध में मिठास आ ठहराव कम होत जाता। बर तर की बइठकी में केहू के रूचि हमरी विवरण आ लेखा–जोखा में ना रहे, हम ओ लोगन से ई भवकाल का बतिअइतीं? हम ओ लोगन के बात सुनत–सुनत कबो–कबो बदलाव के एक–आध बात कहि दीं। एक दिन काकी हमके समुझावत कहली, 'बहिनी हो, बदलाव मति कहऽ, आन्ही हवे। आ सुनऽ आन्ही में आदमी का आपन नोंह धरती में गड़ा के ठाढ़ रहे के चा. हीं (धरती से उनुकर मतलब रहे परम्परा)। आन्ही गइला पर बिचारि के देखिहऽ उचित–अनुचित बुझा जाई। एगो अउर बात कहतांनी, 'ए गाँव में दस–बारह परिवार नकाब वाला था। ओ लोगन के कई रिवाज हमन का परिवार में आ गइल बा बाकी हमन के पुरूखा–पुरनियाँ हमन के नकाब ना पहिरवलें। हमन के घुघ्घुट काढ़े के नइखीं कहत बाकी, आपन कपार खा अँचरा तोप लऽ। ई आपन मरजाद हऽ, एकर मोल राखऽ। देखऽ चाउर रीन. हल जाला त बीन–फटक लिहस जाला, इंकड़ा–गरदा निकाल दिहल जाला ओइसे बदलाव के बीन–फटक ल, जवन राखे लाएक होखे राखऽ ना त उधिया दऽ।"

हम काकी के मोल भरल बात गँठिया के शहर लवटनी।

प्रदक्षिणा, दक्षिणी उमा नगर,
सी.सी. रोड, देवरिया-274001

'पकड़उवा सम्मान समारोह'

शशि प्रेमदेव

आजकल उत्तर भारतीय पूर्वांचली समाज के सिच्छित–अर्द्धसिच्छित वर्ग में एगो नाया बेमारी के पइसार भइल बा – बेगर बतवले अचके कवनो डेट देखिके एगो साहित्यिक–सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन करके, ओह् में कवनो छोट–बड़ साहित्यकार, कलाकार भा नेता–नूती के बोलाइ के, ओकरा के अचानके एगो थोक के भाव में छपवावल 'सम्मान पत्र' आ ओइसहीं थोके में खरीदल सस्ता गमछा भा 'शाल' से सम्मानित कइला आ प्रचारितत कअला के बेमारी!

एह् घरी हमनीं का एह् भारतभूमि पर रउवा के शायदे कवनो अइसन अभागा लेखक–कवि–कलाकार भा नेता भेंटाई जवन कबो–ना–कबो एह् बेमारी के चपेट में ना आइल होई।

हम ते, जान जाईं जे, एह् बेमारी से एतना चिहुँकल रहेलीं कि बेर–बागर जब कवनो आयोजक फोन करके हमरा के अपना कार्यक्रम में पधारे के आग्रह करेला त डरने हमार रोंआ–रोंआ गनगना जाला। हम चट देने ओकरा से सवाल करेलीं– "ए भाई जी, एगो बात बतावे ... पकड़िके हमरा के सम्मानित करे खातिर त" नइखे नूँ बोलावत? जदि अइसन कवनो काण्ड करे के इरादा होयी, त तूँ हमरा के पहिलहीं खबरदार कर दिहे ताकि हमके ओहिजा सदमा ना लागे...जानते बाड़े जे हम हारट के मरीज हईं!" जवाब में ओने से दाँत चिआरत ऊ लोग अक्सरहा अइसने दू–चार गो जुमला उझील दिही कि ओकर मतलब बूझे के परयास में घंटों अझुरइला का बादो रउवा कवनो निष्कर्ष पर ना पहुँच पाइम्।

हमरे नगर में हमरा लेखा दू–चार गो आउर साहित्यकार बाड़न् जेकरा के एह् बेमारी, आ बिहार प्रान्त के कुछ इलाकन् में प्रचलित कथित 'पकड़उवा बिआह' का बीच बहुत गहिर संबंध नजर आवेला। दूनो में फरक एतने होला कि कथित 'पकड़उवा सम्मान समारोह' में जवन

चीज रउवा के जबरिया थमा दिहल जाला ओकरा के रउवा आँखि के आन्हा कवनो कचरा पेटी में फेंकि के आपन बोझा हलुको कर सकेलीं बाकिर 'पकड़उवा बिआह समारोह' में जवन चीज रउवा के पकड़ा दिहल जाला, ओकरा के ना राखते बनेला, ना फेंकते बनेला। एकदम का दोने कवना जगहा के पेड़ा मतिन – खाई ते पछताई, ना खाई ते पछताई!

कुछ बिद्वान लोग तऽ अइसनो भेंटा जायी जेकरा के एह् टाइप के समारोह में जाते सन् उनइस सौ पचहत्तर–छिहत्तर के समय इयाद आ जाला – जब देस का ऊपर अचानके इमरजेंसी थोप दिहल गइल रहे आ, का नवही, का पुरनिया – सबके पकड़–पकड़ के अइसहीं ओकर नसबंदी कर दिहल जाव। ओह् घनघोर अभियान के परभाव अइसन परल जे कुछुए दिन में भारतीय जनतंत्र 'त्राहिमाम–त्राहिमाम' करे खातिर मजबूर हो गइल रहे! शायद ईहे कारन रहल होई जे हमनीं का पड़ोसी प्रान्त में भोजपुरी भाषा के कुछ पोरफेसर साहेब लोग अपना चेलन–चुलिन के, शोध–प्रबंध लिखे खातिर कुछ एहू टाइप के टटका

सब्जेक्ट सुझावे लगल बा – 'पकड़उवा सम्मान समारोह आ इमरजेंसी के पकड़उवा बधियाकरण में अन्तर्सम्बन्ध' आदि–इत्यादि।

एह् सवाल के सटीक जबाब दीहल त बड़ा कठिन बा कि हमहन का देश में एह् बेमारी के आगमन के पीछे कवनो बिदेसी हाथ रहल आकी कवनो देसी हाथ, बाकिर एतना जरूर कहल जा सकेला कि कम्पूटर आ इन्टरनेट जइसन खुराफाती चीज के अवतरित भइला का बादे एकर प्रकोप कोना–कोना ले फइले लागल्। आप सभै के खिआल परत होयी कि पचीस–तीस बरिस पहिले तक कवनो संस्था भा अदिमी खातिर एगो बैनर, पोस्टर भा सम्मान–पत्र जइसन चीज बनवावल केतना कठिन काम रहे य बनवाहूँ वाला के भुरकुस छूटि जात रहे आ बनाहूँ वाला के। अनघा पइसा आ जाँगर खरचा कइला का बादो मन जोग चीझु हाथे लागी कि ना लागी – ओह् घरी एकर कवनो गारंटी ना रहे। बाकिर जइसहीं कम्पूटर बाबा इण्टरनेट के जेट बिमान में सवार होके अवतरित भइलन, महीनन के काम हफ्ता में, हफ्ता के काम दिन में आ, दिन के काम घंटनन में होखे लागल! खलिसा पइसे ना, जाँगरो के बचत होखे लागल। ओकरा बाद ते नाया–नाया डिजाइन आ भेराइटी के बैनर, पोस्टर आ सम्मान–पत्र भा अभिनन्दन–पत्र बनवावल, बूझीं जे लइकन के खेलवाड़ हो गइल। नतीजा ई भइल कि लोग धकाधक् एह् सहूलियत के फैदा उठावे में आँखि मूँदिके जुटि गइल् आ बड़का–बड़का एसी आडिटोरियम से लेके बित्ता भरके मड़ई–टाटी तक में सम्मान–समारोह के आयोजन करके साहित्यकारन–कलाकारन–समाजसेवियन पर एहसान लादे के जइसे होड़ लागि गइल। जेही कवनो कमेटी, क्लब भा संस्था से जुड़ल रहे, ऊहे हर साल दस–बीस जने के जबरिया सम्मानित करे के ललसा पुरावे लागल्। एही बहाने घाँक किसिम के लोग आयोजक बनिके, आ सालाना अढाई–तीन हजार रुपिया खरच कर के अगिला दिन, नेशनल ना ते कवनो लोकले अखबार में फोटो सहित अपना महानता के समाचार पढ़ि–पढ़िके, हप्तन ले इलाका में सीना फूलाके घूमे के पात्रता भी हासिल कर लिहल। अइसन आत्म–मुग्ध लोग का जानो कि जवना कवि भा वक्ता के खलिसा एगो कागजी सम्मान पत्र आ एगो पचीस रूपल्ली के गमछा भा मइलमूँहा सौ टकिया 'शाल' देके टरका दिहल गइल रहे, ऊ अभागा मानुस ते ओहिजा आपन किराया–भाड़ा खरच करके एह् उम्मीद में चहुँपल रहे कि कुछ नगद–नारायनो हाथे लागी ... ...

छिद्रान्वेषी लोग भलहीं केतनो नाक–मुँह फुलावे बाकिर 'पकड़उवा सम्मान समारोह' नामक एह् अखिल भारतीय बेमारियो के एगो जगमगात पच्छ होला। कई गो नामवर निठल्ला चिंतक लोग एह् निष्कर्ष पर पहुँचल बा कि भारत के तेज आर्थिक विकास का पीछे लगातार गति पकड़त 'पकड़उवा सम्मान समारोह' के भी बहुत बड़हन हाथ बा। एकरे चलते पाढ़ वाला गमछा आउर सौ–टकिया 'शाल' के डिमाण्ड में लगातार बढ़न्ती होत बा। गेना के फूल के माला, बूके आउर स्मृति–चिन्ह जइसन बस्तुअन के डिमाण्ड भी बनैला खरहा के रफ्तार जस तेज हो गइल बा। लाखन इन्सानन के रोजगार मिलल बा आ हजारन के आमदनी पहिले से कई गुना बेसी हो गइल बा। अब ई बात ते ओहू नर–मादा के मालूम बा जे बरिसन पहिले कवनो लालू–मोलायम–मायावती के शासनकाल में बोर्ड परीक्षा पास करके आजु ले फटीचरी के फारम भरे में बाझल बा, कि जवना चीज के डिमाण्ड बढ़ेला ओकर उत्पादनो आटोमेटिकली बढ़ि जाला। ई बात दीगर बा कि कवनो–कवनो ममिला में डिमाण्ड आ सप्लाई के ई बहुचर्चित सिद्धांत झूठ भी साबित हो जाला। मसलन, अदिमी के आबादी बढ़ला के ममिला में जहवाँ बिना डिमाण्डे के धकाधक सप्लाई के नतीजा आज पूरा देश भोगि रहल बा...! खैर, ऊ एगो अलगा विषय बा जवना पर फेर कबो पसन से बइठिके चरचा कइल जायी । अबहीं ते जवन विषय चलि रहल बा, ओकरे बारे में कुछ कहल–सुनल उचित होयी।

डिमाण्ड आउर सप्लाई के बात चलल बा ते 'री–साइक्लिंग' वाला पच्छ के अनदेखी कइसे कइल जा सकेला! हमरा त' जनाला कि लोग के बस्तुअन के 'री–यूज' आउर 'री–साइकिल' करे के प्रेरना, मजबुरिए में सही, 'पकड़उवा सम्मान' समारोहे जइसन कवनो बेर–बेर होखे वाली घटना–दुरघटना से मीलल होयी। एकही गमछा आ एकही 'शाल' कहवाँ–कहवाँ घुमिके ओहिजा चहुँपल होई, आ केतना लोग के ओढ़ावल गइल होयी – एह् सवाल के जवाब दिहल हमरा–रउवा बस के बात नइखे। एह् सवाल के जबाब तश कवनो सिखावल–पढ़ावल स्निफर डागे दे सकेला। ठीक–ठीक ते ईहो ना बतावल जा सकेला कि एगो सर्वसुलभ साहित्यकार–कलाकार भा खलिहर नेता का पाले एक

दशक में केतना गमछा आ शाल बिटुरा जात होयी। तब्बो कयास लगावल जा सकेला कि एगो औसत रूप से सफल साहित्यकार, कलाकार आ नेता का पाले नाहिंओ ते कम–से–कम दस–बारह गो 'शाल' आ दरजन–डेढ़–दरजन गो पाढ़ वाला गमछा त' होखबे करी। हम एगो अइसन लभ मैरिज करे वाला अधबुढ़ 'कबिजी' के जानतानीं जेकर मेहरारू कई बेर उनुका के धिरा चुकल बाड़ी – 'खबरदार जो फेर–फेर अइसन फालतू कचरा लेके घर में ढुकले तूँ! हम इहवाँ कवनो खटाल खोलिके नइखीं बइठल कि जाड़ा–पाला में गाइ–भइँस के ओढ़ावे खातिर तोहार ई चिरकुट सहेजल करीं! कहिए से रटत बानीं जे तूहूँ एगो टुटपुँजिया कार्यक्रम करके ओ कूल्हि मुँहझउँसन के एक्के बेर सम्मानित कर द जवन तोहरा के अपना इहाँ बोला के आ दस रुपल्ली के 'शाल' भा गमछा ओढ़ाके भरल सभा में सम्मानित करे के नाम पर बेइज्जत कइले बाड़न सऽ ... तब बुझाई उन्हनीं के! जवन इन्सान अपना अपमान के बदला रचिके ना ले सके, ऊ इन्साने कइसन ... हूँ!'

हम ओह् अधबुढ़ कबि जी लेखा दस–पनरह गो आउर साहित्यकारन से परिचित बानीं जेकर पलिवार, अपना सवाँग के कवनो आयोजन में जाये से पहिले घंटन देवी–देवता से ईहे गोहार लगावेला कि अब आगे से उनुका पतिदेव के केहू कवनो अंगवस्त्र भा सम्मान–पत्र से सम्मानित मत करे ... ओकरा जगहा पर बलुक एगो मोट भा पातर लिफफवे थमा देव।

अइसन प्रार्थना भा कामना कइल बेजायँ ते नइखे बाकिर अइसना लोग के ई बात मालूम होखे के चाहीं जे आदर– सम्मान के ममिला में बस्तु विशेष के भौतिक मूल्य ना, ओकर अन्तर्निहित मूल्य के महातम होला। सदियन पहिले जब यूनान में ओलम्पिक खेल के आयोजन होत रहे, तऽ चम्पिअन खेलाड़िन के जैतून के पतई से बनल मुकुटे पहिराइके सम्मानित कइल जात रहे। फूल–पात से बनल ऊ मुकुट सेठ–साहूकारन के तिजोरी ले बेसी कीमती रहे आ ओकरा के हासिल करे वाला के बड़का–बड़का लोग से भी बड़ नायक समझल जात रहे। साँच पूछीं ते ढेर लोग के हर पाढ़दार गमछा भा सौ टकिया अंगबस्त्रम् ओढ़त का घरी कवनो जैतून के पतई से बनल ताज ले कम ना जनाला आ, एही से ऊ लोग घंटा–दू–घंटा ले अपना के कवनो चम्पियने फील करेला!

खैर, जेकरे पाले कवनो वाहियात बस्तू के कचरा जमा हो जाई, ऊहे ओकरा से पिण्ड छोड़ावे के कवनो मर्यादित आ वैध उपाइ खोजे पर मजबूर हो जाई। हम ते पड़ोसी जनपद के एगो झरनाठ टाइप समालोचक जी के क्रिएटिविटी का आगा एक दिन ओइसहीं सरधा से पसर गइलीं जइसे कवनो महामजबूत राष्ट्रीय दल आपन अल्पमत के सरकार बचावे के बदहवासी में कवनो पिद्दी जस क्षेत्रीय दल का आगे मजबूरी में पसर जाला। ई खिस्सा तहिआ के हउवे जहिया हम आपन पहिलका कविता संग्रह उनका के सादर भेंट करे खातिर धाधाइल उनका से मिले गइल रहीं। ओह दिन हम का देखतानीं कि उनुका बरामदा में खँचिआ भर सम्मान पत्र आ अभिनन्दन पत्र उझिलल बा आउर दूनो परानी एकाग्रचित्त होके ओह् कचरा में से साइज का मुताबिक छाँट–छाँटके एगो का ऊपर दोसरका, दोसरका के ऊपर तिसरका के लेई से चिपका रहल बा। पूछला पर पता चलल कि ऊ लोग आवे वाली गरमी से निपटे खातिर हाथ के पंखा तेयार कर रहल बा– कुछ घर में यूज कइल जाई, बाँचल–खुचल अड़ोस–पड़ोस, हितई–नतई में बाँट दिहल जाई (एहिजा हम आपके ई बतावल जरूरी समझत बानीं कि ई बात ओह् जमाना के हउवे जब यूपी में बुलडोजर बाबा आ बिहार में सुशासन बाबू के सरकार ना काबिज भइल रहे यानी घंटन बिजुली के कटौती का चलते आमजनता गरमी के मौसम में अनासो बिलबिला–छटपटाके जीये के सजाइ भुगतत रहे)।

वइसे, आजुओ हर महानगर, हर कस्बा, हर टोला–मोहाला में रउवा के एगो–दूगो अइसन कदरदान भेंटा जइहें जेकरा नजर में रेवड़ी लेखा बँटाए वाला सम्मान–पत्रन आ अंगबस्त्रन के महातम कवनो राष्ट्रीय भा प्रांतीय स्तर के पुरस्कार–सम्मान ले कम ना होखेला। केतने लोग ते ढुका लागिके एही टाही में रहेला कि अगिला 'सम्मान समारोह' कवना गली–कूचा भा कोना–अँतरा में आयोजित होखे वाला बा। एक बेर खलिसा पता लागि जाव, फेर ते सम्मानित होखे वालन का लिस्ट में ओह् लरिअइना लोग के नाम बेचारा आयोजक के ढुकाहीं के पड़ेला! एतने ना। अइसन चिम्मर लोग जब कवनो दोसरा नगर भा गाँव से 'सम्मानित' होके अपना गृहनगर भा पैतृक गाँव लवटेला, ते चाहेला जे अरियात–करियात के सगरी नर–मादा स्टेशन पर फूल–माला, गाजा–बाजा का साथे उनुका स्वागत में उमड़ि आवे।

एही टाइप के संग्रहणी रोग से दुरूखी–पीड़ित लोग दू पइसा के 'सम्मान–पत्र' के मढ़वावे में पाँच–पाँच सौ रूपिया फूँकिके 'अरहर के टट्टी में गुजराती ताला' जइसन कहाउत के चरितार्थ करेला ।

तनी सोचल जाव कि जदि अइसन कदरदान आ हमरा पड़ोसी जनपद के ऊ झरनाठ समालोचक जी जइसन कल्पनाशील लोग एह् महान भारतभूमि पर ना रहतन, तऽ जबरिया सम्मानित होखे वाला साहित्यकारन–कलाकारन आउर नेता–नुतिन के घर के आसपास बहे वाला नाबदान आ पनरोह पर लोड केतना बढ़ जाइत्! एगो आउर नोक्सान ई होइत् कि एतना छउक–छउकके गाँवे–गाँवे, नगर–नगर सलाना भा छमाही 'पकड़उवा सम्मान समारोह' के आयोजन कइके भारत के आर्थिक विकास में महान जोगदान देबे वालन् के संख्यो आज गीनिले–चूनल बाँचल रहित्!

(प्रिंसिपल) कुँवर सिंह इण्टर कालेज, बलिया, मो० नं०- 9415 830 025

लघुकथा

हमरा बोले आवते नइखे

डा0 आशारानी लाल

सबेरे-सबेरे फोनवा घनघनाए लागल। सोचनीं एतना सबेरे ई केकर फोन हऽ भाई। फिर करवट घुमनी, फोन उठवनी, काने लगवनी। आवाज आइल।

नमस्ते- माँ। कइसे बानी।

नीके-सुखे बानी- ए.बाबू।

काऽ भइल अबे तोरा दुसरकी आँख में सूई परल कि नऽ। नाहीं अबे परल नइखे। डाक्टर सोमार के सूई देबे के कहले बानऽ ठीक बा। सोमार के टाइम से जाके- जरुर सूई लगवा लीहऽ। बहुत जरुरी बा। ना नुकुर मत करिहऽ। आँख के खियाल राखल बहुत जरूरी बा। अउर सब लोग के हाल-चाल का बा? सब लोग इहाँ ठीक बा नऽ। बबुआ कुलू- अपना दोस्त के बियाह में बिहार गइल बा नऽ। हो सकेला आज रात के आँवस। बहुत दिन बाद दिल्ली से बाहर अकेले गइल बा नऽ। उहो बिहार में। शादी में तऽ अच्छा लागल होई। इहे सोचके हमके खुशी होता। सोच-सोच के मन में इहे चाह जागऽता कि काऽ जाने- तोहन लोगिन के घर में शादी-बियाह कब होई?

अरे तूँ अइसन काहे कहलू हऽ।

इहे नू कि तू लोग कब अपना बचवन के वियाह करब जा?

तूँ अइसन काहे बोललेे हऽ माँ का, ई घर तोर ना हऽ का?

घर त सबकर हऽ बाकी.....

'बाकी का? अब तोर सोच बदल गइल बा।'

हँऽ-बेटा-निराश्रित बूढ़ माई-बाप के एह अवस्था में सब सोच बदलिए जाला। उन्हन लोगिन के सोचे के ढंग, बोले के ढंग सब बदल जाला। आज के नया जमाना में इहे होला। जानते बाड़ कि अब तऽ पुश्तैनी घर रहल ना। कपड़ा जइसे घरो रोज नया-पुराना होत रहेला। बुढ़वा-बुढ़िया निराश्रित हो जाता। कबो केहू बोली बोलेला आ कबो केहू। कहेला लोग कि एके घरे खूँटा गाड़ के काहें बइठल बाड़ी? अपना दुसरा बेटी-बेटा घरे काहे नइखी जात? तऽ कइसे कहीं कि- हमरा घरे बियाह-शादी कब होई।

अब तऽ पुछहीं आ कहहीं के न परी- कि पता नाहीं तोहन लोगिन घरे लड़िकन क बियाह-शादी कब होई?

अइसन ए मुँह से ई जमनवे नऽ हमरा से कहवावता, हम नइखीं कहत। अब बोल-चाल के सब रंग-ढंग बदल गइल बा।

एह में खिसियाए के कवनो बात नइखे। सबके साथे अब ई कुल होत-जात रहऽता। अइसे ठीक बा अगर हमरा बोले नइखे आवत, चाहे सोच के ठीक से बोल नइखीं पावत तऽ तूँ फोन रख दऽ।

अउरी हम का कह सकऽतानी। जब हमरा बोले अवते नइखे।

डा० आशारानी लाल/9968438886

गुनाह जवन हो ना पावल

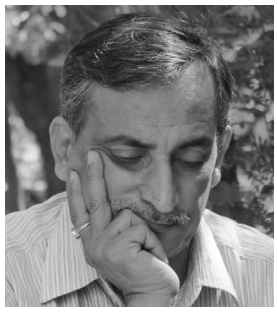

सदानन्द शाही

कई जने कहेलें कि आपन कहानी लिखि दीं। कई बेर सोचनी कि हम का लिखीं। कहानी तऽ भारी–भारी लोग के होला। जे बड़–बड़ काम कइले रहेला। गांधी जी, राजेन्दर बाबू, नेहरू जी भा सुभाष बाबू अइसन लोग के आत्मकथा होला। हम का लिखीं। करेके तऽ हमहूँ सोचलीं बहुत, बहुत बड़हन–बड़हन फाँड़ बन्हलीं, बाकिर ओसरल कुछऊ ना। त ओ कुछऊ ना के का लिखीं! बाकिर कनक किशोर जी के फ़ोन आ निहोरा के का करीं। घरी घरी फ़ोन आ रहल बा। एही उधेड़बुन में परल रहनी हं, तवले ईषावास्योपनिशद् के एगो मंत्र मन परि गइल–

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ऊँ क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर ।।17।।

वायु हवे
सगरी वस्तुअन के परान
अमर जीवन तत्त्व हवे
बाकिर अंत में त
ई देहियां भसमे हो जाई
भसम

ऊँ
हे दिव्य संकल्प शक्ति !
जवन कइले बाड़ऽ
ओकर सुमिरन करऽ

हे दिव्य संकल्पशक्ति
ओकर सुमिरन करऽ
जवन कइले धइले बाड़ऽ

कहले के मतलब ई कि जवन कइले– धइले बानी ओकर लेखा जोखा देबे के बा। जइसहीं ई बाति मन परल आ हम काग़ज़ कलम सरिहरलीं ओइसहीं चाचा ग़ालिब मन परि गइलें–

नाकर्दा गुनाहों के हसरत की मिले दाद
या रब अगर इन कर्दा गुनाहों की सजा है।

कहला के मतलब ई कि जवन ना ओसरल ओहू के लेखा–जोखा दीहल जा सकेला। एह लेखा–जोखा दिहला में बड़हन दिक्कत ई बा कि जवन ना हो पावल ओहू के पोल खुलि गइलें के ख़तरा बा। कहले के मतलब ई कि जवन गुनाह हो गइल बा ओकर सजा मिलिए रहल बा त जवन गुनहवा मन में रहि गइल कि ईहो करेके बा ओहू के हिसाब–किताब होखेके चाहीं। त दुनहूँ के हिसाब–किताब हाज़िर बा।

बाति ऊँहां से शुरु क रहल बानी जवने में हमार कवनो रोल नइखे। माने जन्म के क़िस्सा। हमार जनम ननिअउरे भइल रहे। सावन महीना के अधिक मास में। कहल जाला कि सावन में जे आन्हर होला ओकरा चारो ओर हरियरे लउकेला। बाकिर हमके ई बुझाला कि सावन में जेकर जनम होला ओहू के ईहे हालि होला। सभत्तर हरियरे बुझाई। जहँवा हरियर बा ऊहाँ त माने हरियर बड़ले बा जहाँ सुखाड़ बा ओजहूं हरियरे लउकी। बचपन गाँव में बीतल। गाँव हमार तराई इलाका में परेला। नेपाल लगहीं बा। आसमान साफ़ रहला प हिमालय लउकेला। एगो हरियरी सावन के लगले रहल, हमरे गँउवों में एगो हरियरी बा। जवने ओर देखऽ तवने ओर भाँगि उगल बा। पूरा इलकवे में। कबो–कबो हमरा ई बुझाला कि सिव जी भाँगि खोजत ज़रूर हमरे इलाक़ा में आवत रहल होइहें। कुँआ में भाँगि के बाति सुनले होखब सभे बाकि ईंहाँ त इलकवे में भाँगि परल बा। एक त एही तरे आँखी प सावन के हरियरी चढ़ल बा आ दुसरे हवा में भाँगि के नशा। एही में मगन बचपन बीति गइल।

एह मगनई के खतम कइलें हमार चाचा जी। बाकिर ई कुलि बतावे ख़ातिर घर के व्योरा देबे के परी।हमार संजुक्त परिवार रहे। बाबाजी घर के मालिक रहलें। बहुत कर्मठ बहुत समझदार। पढ़े–लिखे के मौक़ा ना मिलल बाकिर सहज बुद्धि रहे। एही से खूब नाम जस कमइले। खेती–बारी के अलावा कुछ रोज़गार में भी मन लागे। हमरे गाँव में सूद प रुपया चलवले के रिवाज रहे। हमार बाबो ई काम करें। मन से उदार रहलें। सूखा आ बाढ़ि में आटा आ चावल बाँटें। दुआरे प मेला लागल रहे। गांधी जी के प्रभाव रहे। धोती–कुर्ता आ गांधी टोपी उनकर फार्मल ड्रेस रहे। बाकिर घर में धोती आ एगो अद्धा बंडी पहिरें। खुद पढ़ले–लिखले ना रहले बाकिर पढ़वइन के इज़्ज़त करें। बहुत कोसिस कइलें कि लइका लो पढ़ि–लिखि के हीले से लागि जा। बाकिर ई साध मनवे में रहि गइल। दादी हमार कट्टर धार्मिक रहली। छुआ–छूत, ऊँच नीच के भेदभाव खूब रहे। पूजा–पाठ में रहें। बाक़ी लइकन के मनबो करें। रामायण महाभारत के कहानी सब मालूम रहे। रामायण महाभारत पढ़े के मवका त हमके बाद में मिलल बाकिर ओकर कुलि कहानी ईआ पहिलहीं सुनवले रहली। बाबा जी के दूँ जाने लइका रहलें। पिताजी बडहन, चाचा जी छो. टहन। पिताजी त पढल–लिखल रहलें। बाबा राघवदास से लेके देवरहवा बाबा ले जेतना गुरु मिलें सबकर शिष्य बनी जाँ। जनसंघ पार्टी के ब्लॉक के अध्यक्ष रहलें। पाँचजन्य आ कल्याण पत्रिका मँगावें। उनके लाइब्रेरी में तरह–तरह के किताब रहे। सत्यार्थ प्रकाश, गांधी जी के सत्य के प्रयोग, कई गो उपनिषद, सुभाष बाबू के लिखल तरुण के स्वप्न। जवन–जवन गुरु मिलले सबकर चेलहई कइलें। आर्य समाज आ आनन्द मार्ग से होत युग निर्माण योजना ले के यात्रा। एही कुलि में उनके संषय के बेमारी धऽ लेहलस। आधा साधू, आधा गृहस्थ। एकर भरपाई अम्मा के करे के परल। घर के सब काम–धाम आ सास–ससुर आ पति के सेवा। बचल समय में लइकन के देखभाल। पिताजी के बाबा जी से एह बाति प अनबन रहे कि सूद प रुपया चलावल ठीक काम ना हवें। एकरे ख़ातिर बाबा जी से लडबो करें। बाकिर उहो कबो कबो अपनों सूद प रुपया चलावें, भले रुपया डूबि जा।

चाचा जी हाईस्कूल के आगे ना जा पवलें। उनके चाचा शब्द से नफ़रत रहे, एसे अपना के दादा जी कहवावें। नफ़रत त उनके बहुत चीज से रहे बाकिर ऊ सब के चर्चा फेर कबो। हमरे घर में आरएसएस के नाव उनही से चहुँपल। कानपुर से ओटीसी कऽ के आइल रहलें। इहे उनकर सबसे बडहन अनुभव रहे। बहुत छोहां त ओहि के कहानी बतावें। उनके कमरा में हेडगेवार आ गोलवरकर जी के फ़ोटो लागल रहे। एगो कलेंडर अइसन रहे जवने में चन्द्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह आ सुभाष चन्द्र बोस सभे रहे। फ़ोटो में आज़ाद उघारे देहिं जनेऊ पहिरले आपन मोछि अँइठत देखावल रहलें। चाचा जी के कादो ई बुझा कि दिन राति मोंछिए अँइठले से आज़ाद के एतना नाव भइल। सबेरे से ए कोला से ओ कोला में बवडेरा के लेखा घूमें। दुपहरिया में नहा–धो के उघारे देंहि जनेऊ टाइट कऽ के घंटन ऐना के सामने खड़ा होके मोंछि टाइट करें आ आज़ाद के मोंछि से अपने मोछि के मिलान करें। एह काम के

बीच में केहू टोके त ओकर सामति आ जा। मारपीट गारी–फ़ज़ीहत सब क दें। बहुत टिसुराह रहलें। बाद में समझ में आइल कि नहइले–खइले में देरी एकरे मारे करें कि हमरे अम्मा के समय से खाए के न मिले।ईआ जी (दादी) के नियम रहे कि घर में सब मर्दाना लो के खइले के बादे पतोहा खा सकेली। पिता जी सधुअई में मगन रहीं आ दादाजी दरोगई में। ओ समय उनकर बियाह भइल ना रहे। न कहीं आवे के रहे न कहीं जाएके रहे। न कवनो काम न धाम। ख़ाली हमन भाई–बहिन के कवनो–न–कवनो कोरि खोजि के मारल–पीटल काम रहे। सबसे आसान रहे पढ़ाई के नाव प पिटाई कइल। हमन के बहुत दिन ले ईहे बुझा कि हमनी के पढ़ले से इनकर कवनो फैदा बा, एसे हमन पढ़बे न करीं जाँ। ऊ घर के माहौल अइसन बनवले रहलें कि घर नरको से भयावह लागे। एही वातावरण में मन में कहीं ई बाति जमि गइल कि कवनो तरे घर छोड़े के बा। एह प्रसंग में एक बाति अउरी बतावल चाहत बानी। चाचा हमरे ममहरे जाँ आ बहुत दिन रुकें। एक बेर गर्मी के छुट्टी में ममहरे गइल रहलें। उहँवे चाचा जी के मज़ाक़ बनावत चार लाइन के कुछु तुकबंदी अइसन लिखलीं। पढ़ि के सभे खूब हँसल। हमरे ममिआउत भाई गोविंद के एतना मज़ा आइल कि ऊ पोस्टर बना के देवाल प टाँगि देहलें। संजोग देखीं कि बिहान भइले चचो जी आ गइलें। पोस्टर देखलें आ बूझि गइलें कि हमरे लिखल हवे। हमार हालत ख़राब रहे कि आजु ख़ैर नइखे। बाकिर कुछउ बोललें ना। हमके ई बुझाइल कि घरे गइले प ज़रूर पिटाई होई। बाकिर ऊहो ना भइल। एतने नाहीं एकरे बाद से चाचाजी हमके मारल–पीटल छोड़िए दिहलें। हमके लिखले से सबसे बड़हन फ़ायदा ईहे मिलल।

एह तरह के माहौल में न कवनो सोच रहे न कवनो सपना। गाँव भर के लइके या त इंजीनियर बनत रहे आ ना त डागडर। हमहूं डागडरे बनत रहलीं। पढ़ाई–लिखाई में न मन लागे आ न फ़िज़िक्स केमिस्ट्री बुझाव। जूलोजी बाटनी के चक्कर में ए गड़हा ओ गड़हा घूमि के बेंगा पकड़ले में जवन मज़ा आवे ऊ पढ़ाई में कहाँ रहे। एह तरे जिनगी के बहुत साल डागडर बनले के चक्कर में बीतल। सीपीएमटी के इम्तहान देबे गोरखपुर गइल रहनी। लिखे के रहे ना। ख़ाली निशान लगावे के रहे। हमरे अइसन ढेर जाने रहलें जिनका ई बुझा कि के जाने संजोगे से लहि जा, बाकि लहल ना। अलबत्ता गोरखपुर में चाय समोसा आ सिनेमा देखले के चांस मिलि गइल। होत–हवात एक जने संघतिया के भाई बिहार से बीएएमएस कऽ के आइल रहलें। पहिले तऽ कहलें पटना में नाव लिखा जाई बाकिर पटना ना भइल त मोतिहारी में नाव लिखा देहलें। ओह कालेज में पढ़ाई छोड़ि के सब होत रहे। जेतना लो पढ़े आइल रहे सबके देखादेखी डागडर बने के रहे। सभे सीपीएमटी फेल रहे। बाक़ी इहँवा बना–खा के बड़का डाक्टर बने के सपना देखत रहे। केहू जा के मोतिहारी के कवनो डाक्टर किहाँ कम्पाउण्डर बन के अप्रेंटिस करे। जेके सूई लगावे के ढंग आ जा त बुझा कि जंग जीति ले ले बा। केहू केहू अइसनो रहे जेकर बाप भाई डागडर रहलें। त उनका मेडिकल स्टोरवे खोले के रहे। ओह मेडिकल कालेज में ख़ाली नक़ल होखे। त पास हो जा सभे। हमहूं पास होत गइलीं। ओने गाँव–जवार में हल्ला रहे कि लइका डागडरी पढ़ि रहल बा।ख़ूब बढ़ियाँ–बढ़ियाँ देखनहरू आवें। लेकिन होनी त कुछ अउर रहे। हमार पिताजी एह पढ़ाई के खिलाफ रहलें। हम चार साल बाद छोड़ि के चलि अइलीं। हमके बुझा कि ई पढ़ाई कऽ के हम का करब। आयुर्वेदिक पुड़िया बनावल–बाँटल पार ना लागी। सूई लगावे आई ना। मेडिकल स्टोर हम चला ना पाइब। बाकिर जब छोडि के चलि अइलीं त परिवार में बड़ा विरोध भइल। बाबा के पूरा कोषिष रहे कि हम कम से कम डागडरी के डिग्री ले आईं। सबसे बड़हन उपाय ई भइल कि घर से खर्चा मिलल बंद हो गयल। ओ समय हमार बीए पास कऽ के सरकारी नौकरी में जाए के मन बनल। दरिएं पडरौना में बीए में नाव लिखा लेहलीं। घर से रोज़ आवे जाएके रहे। ट्रेन के पास बनल। आवल–गइल शुरू भइल। कुछ दोस्त–मित्र बनलें।

ओहि में अचके छात्र राजनीति के चस्का लगल। पढ़ाई–लिखाई आ नौकरी के ख़्याल पिछुआरे गइल। पारिवारिक पृष्ठभूमि के चलते विद्यार्थी परिषद से जुड़ि गइलीं। थोड़े दिन ओकर पदाधिकारियो रहनी। दिन राति पडरौना के गली–गली में घूमल। मिलल–जुलल आ बतिआवल। उपाध्यक्ष के चुनाव हारि गइल रहलीं। बाकिर अध्यक्ष के चुनाव के तइयारी में लागि गइलीं। ऊ समय रहे जब जनता पार्टी के प्रयोग फेल हो गइल रहे। देस आ प्रदेस में कई तरह के राजनीतिक प्रयोग चलत रहे। जनता पार्टी के समय से ही हमके अटल बिहारी वाजपेयी बहुत नीक लागें। एक बेर ओही समय उनकर गोरखपुर में भाषण होखे के रहे। हम रामकोला

से ट्रक प चढ़ि के चलि गइल रहलीं उनकर भाषण सुनें। जब बीजेपी बनल त एकर पहिला अधिवेशन लखनऊ बारादरी में भइल रहे। हम ओमें गइल रहलीं आ वाजपेयी जी से भेंट कइले रहलीं। उहँवा से लौटि के अइलीं त अउर जोस–खरोस से पडरौना में अध्यक्षई के तइयारी में लागि गइलीं। जब चुनाव कपारे प आ गइल त विद्यार्थी परिशद के अधिकारी लो हमसे कहल कि अबकी संगठन मिसिर जी के समर्थन कऽ रहल बा। उनही के मदद करे के बा। तोहरा के अगिले साल लड़ावल जाई। हमके बहुत ख़राब लागल। काहें कि संगठन जेकर समर्थन करें के तय कइले रहल एक त ऊ कबो संगठन से जुड़ल ना रहलें, दूसरे उनका प छिनैती के कई गो मुक़दमा रहे। हम पुछलीं कि ईंहां के हमरा से ग्यान में आगे बानी कि शील में कि एकता में। ईहे परिषद के विशेषता बतावल जात रहे। लोग कहल उमिर में। हम चुपचाप अलगे हो गइलीं। चुनाव लड़लीं आ जीति गइनी। भूत सवार रहे कि छात्र राजनीति के चेहरा बदले के बा। हमरे मन में रहे कि कवनो साहित्यकार से छात्र संघ के उद्घाटन कराइब। ओहि चक्कर में अमृत लाल नागर, भगवती चरण वर्मा, श्रीलाल शुक्ल, ठाकुर प्रसाद सिंह, शिवमंगल सिंह सुमन से भेंट कइलीं। एहमें कवनो सफलता नाइँ मिलल। बाकिर एही में साहित्य के चस्का लागि गइल। केदारनाथ सिंह थोड़े समय पहिले पडरौना से दिल्ली गइल रहलें। पडरौना में उनके लोग बहुत आदर आ प्रेम से इयाद करें। ऊ कबो–कबो अइबो करें। बीए दूसरा साल में रहलीं तबे उनका से परिचय भइल आ जीवन भर बनल रहि गइल। केदार जी एतना बडहन आदमी होके बोलें–बतिआवें भोजपुरिए में। एसे भोजपुरी के लेके जवन हीनई के बाति रहे, ऊहो ख़त्म भइल। साहित्य में मन लागे लगल। हम एगो हस्तलिखित पत्रिका निकालत रहलीं, आह्वान नाँव से।। दू गो भा तीन गो अंक निकरल रहे। टेंढ़–बांगुच कविता लिखल शुरू भइल। गोरखपुर अइलीं बाकिर पढ़े ख़ातिर ना। राजनीति करे ख़ातिर। मन में बहुत बड़हन–बड़हन सपना रहे। बाकिर पनघट के डगर बहुत कठिन रहे। ओहि समय एगो वामपंथी संगठन के सम्पर्क में अइलीं। कुछु रचनात्मक राजनीति के बाति होखे लागल। बाद में पता चलल कि इहँवों कथनी आ करनी में बड़ा अन्तर बा। धीरे–धीरे ओहू से मन भरि गइल। ओहि समय कबीरदास से भेंट भइल। हद्द चले सो मानवा बेहद चले सो साध/ हद बेहद दोऊ तजै ताकर मता अगाध। आगे चलि के कबीर के एही लाइन प साखी पत्रिका निकलल। अरे इन दोउन राह न पाई– न वाम न दक्षिण। कान पकड़नीं कि कवनो संगठन से नइखे जुड़ेके।

मन पढ़ाई–लिखाई के ओर झुकि गइल। अब पढ़े–लिखे लगलीं।एमए, पीएचडी, नेट, जेआरएफ सब भइल। बाकिर नौकरी के राह बहुत कठिन रहे। गोरखपुर यूनिवर्सिटी में एगो गिरोह क़ाबिज़ रहे। हम इनवर्सिटी में न घुसें पाईं, एकरे ख़ातिर गिरोह के बड़हन–बड़हन लोग लागल रहे। कुछु दिन बेरोज़गारी में कटल। रेडियो प आवे–जाये लगल रहलीं। एही समय रेडियो प एगो भोजपुरी प्रोग्राम शुरू भइल – देस हमार। जुगानी भाई ओकर इंचार्ज रहलें। भोजपुरी लिखले–पढले के सिलसिला तबे से शुरू भइल। बेरोज़गारी के बहुत समय 'देस हमार' से कटल। एने–ओने हाथ–पाँव मारत रहनी। गोर्की विश्व साहित्य संस्थान के बारे में जानकारी मिलल। ओमें जायेके हिसाब–किताब बनत रहे कि सोवियत संघ भहरा के गिरि गइल। लेकिन मन में ई भाव आइल कि गोर्की के नाव प संस्थान हो सकेला त काहें ना प्रेमचन्द के नाव प बनो। हम जुटि गइलीं प्रेमचन्द संस्थान बनवले में। पढ़ले रहलीं कि नागरी प्रचारिणी सभा बीए में पढ़े वाले तीन जाने संघतिया लो बनवले रहे। हमनो के तीनि जाने संघतिया पीएचडी करत रहनी जा। अनिल राय, राजेश मल्ल आ हम। बड़े ज़ोर–शोर से काम शुरू भइल। एही में एक जाने के इनवर्सिटी में नौकरी लागि गइल, एक जाने बाराबंकी चलि गइलें। बाकिर ओही में लाबड़बित्ता संस्थान के काम चलत रहे। बाद में इहो बुझाइल कि बीए के संघतिया लो पीएचडी वाला संघतियन से ढेर काबिल रहे।

ख़ैर ओही समय यूजीसी के एगो फ़ेलोशिप मिलल। त गोरखपुर रहि गइलीं। गोरखपुर के साहित्यिक वातावरण में एगो फाँक तबो रहे आ अभियो बा। जाति आ जातिवाद के गढ़ तबो रहे आ अब्बो बा। एतना मज़बूत कि बुद्ध गोरख कबीर प्रेमचन्द के परम्परा के हासिया प डारि के मोंछि प ताव दे।साहित्यो में कई गो जाति रहे। कुछु यूनिवर्सिटी के साहित्यकार, कुछु रेलवे के साहित्यकार कहा लो। यूनिवर्सिटी के बौद्धिक स्तर समाज के बौद्धिक स्तर उन्नत बना सके अइसन ना रहे। बलुक शहर के संकीर्ण मन यूनिवर्सिटी के अपना रंग में रंगि देले रहल। ओह वातावरण में कबीर आ प्रेमचन्द के चर्चा एगो कठिन काम रहे। बाकिर जाति के गढ़ में ही

जाति के चुनौती देबे वाला जन्म लेलें। एही वातावरण में बौद्धिक साहित्यिक साँप–सीढ़ी के खेल चलल। ओकर व्यौरा फेर कबो।

इहे साँप–सीढ़ी खेलत–ख़ालत आ गइनी बनारस। कबीरदास बनारस से गोरखपुर आइल रहलें, हम उल्टा रास्ता चललीं। गोरखपुर से बनारस। हमके ई बुझाइल कि बनारस बडहन जगह बा त ईहाँ कुछु बडहन देखें के मिली। बाकिर कालनेमि कहाँ नइखें! ईंहों मिललें। बाकिर बनारस एक त बहुत पुरान केन्द्र आ फेनु कई तरह के ध. ारा के समेटि के चले के इतिहास। कवनों तरे गुजर–बसर भइल। इहँवे से देस–दुनिया के रस्ता खुलल। कबीर आ रैदास के अंगुरी पकड़ि के जर्मनी, फ्रांस, इटली, अमेरिका, मारिसस, सिंगापुर सब हो अइनीं ।

जब गोरखपुर से बनारस आवे के तइयारी करत रहलीं ओही बीचे सन दू हज़ार में दिल्ली में हमार बड़ा भारी एक्सीडेंट भइल रहे। कवनो तरे जान बचल। दूसर जन्म भइल ओह तरे। हमार गुरु रामचन्द्र तिवारी जी हमरा के देखे अइलीं। ऊहाँ के एगो बाति मन परेला। जात के ऊहाँ के कहनी कि देखऽ भगवान जेके एह तरे बचावे लें ओसे उनका कवनो बड़हन काम लेबेके होला। हम कहलीं कि हमरा से काऽ होई। तिवारी जी कहलें कि जे ई सोचेला कि हमरा बडहने काम करेके बा, ऊ ना क पावे। बाति आइल–गइल हो गइल। हमरे मन में रहे कि बीएचयू में एगो प्रेमचन्द शोध केन्द्र बनो। प्रेमचन्द के 125वीं जयंती प एगो अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार आयोजित भ. इल। ओह में प्रेमचन्द शोधकेन्द्र के पृष्ठभूमि बनल। बहुत प्रयास के बाद शोधकेन्द्र बीएचयू में आ गइल बाकिर ओकर ज़िम्मेदारी बड़हन लो के हाथ में चलि गइल। ओही बिच्चे बीएचयू में भोजपुरी केन्द्र बनले के भूमिका बनल। डीपी सिंह जी ओकर ज़िम्मेदारी हमरा के देहलें। भोजपुरी केन्द्र बनल। ओहमें पीएचडी ले के पढ़ाई शुरू भइल। मारीशस के राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ 'भो. जपुरी के भविश्य' भाषण से ओकर आरम्भ कइलें। लोक सभा अध्यक्ष मीराकुमार नया भोजपुरी भवन के शिलान्यास कइली। महान कलाविद् कपिला वात्स्यायन अपने सांसद निधि से 75 लाख रुपया भोजपुरी भवन ख़ातिर देहली। लेकिन एह कुलि में कई गो लेकिन लागि गइल। अब लेकिन के आगे आदमी के हारि मानही के परेला। बाकिर उम्मीद बा कि कबो न कबो ई पौधा बरगद बनबे करी। संतोष एतने बा कि मातृभाषा के सेवा में कुछु दिया बारे के मौका हमहूँ के मिलल।

कुलि मिला के कहे के ई बा कि बुनियादी तौर प हमार कहानी कई तरह के असफलता के कहानी हवे। अब एह असफलता के कहानी के छापि के छापवइया के का मिली ई तऽ ऊहे जानत होइहें। बाद में समझ में आइल कि नहइले–खइले में देरी एकरे मारे करें कि हमरे अम्मा के समय से खाए के न मिले। ईआ जी (दादी) के नियम रहे कि घर में सब मर्दाना लो के खइले के बादे पतोहा खा सकेली। पिता जी सधुअई में मगन रहीं आ दादाजी दरोगई में। ओ समय उनकर बियाह भइल ना रहे। न कहीं आवे के रहे न कहीं जाएके रहे। न कवनो काम न धाम। ख़ाली हमन भाई–बहिन के कवनो–न–कवनो कोरि खोजि के मारल–पीटल काम रहे। सबसे आसान रहे पढ़ाई के नाव प पिटाई कइल। हमन के बहुत दिन ले ईहे बुझा कि हमनी के पढ़ले से इनकर कवनो फैदा बा, एसे हमन पढ़बे न करीं जाँ। ऊ घर के माहौल अइसन बनवले रहलें कि घर नरको से भयावह लागे। एही वातावरण में मन में कहीं ई बाति जमि गइल कि कवनो तरे घर छोड़े के बा। एह प्रसंग में एक बाति अउरी बतावल चाहत बानी। चाचा हमरे ममहरे जाँ आ बहुत दिन रुकें। एक बेर गर्मी के छुट्टी में ममहरे गइल रहलें। उहँवे चाचा जी के मज़ाक़ बनावत चार लाइन के कुछु तुकबंदी अइसन लिखलीं। पढ़ि के सभे खूब हँसल। हमरे ममिआउत भाई गोविंद के एतना मज़ा आइल कि ऊ पोस्टर बना के देवाल प टाँगि देहलें। संजोग देखीं कि बिहान भइले चचो जी आ गइलें। पोस्टर देखलें आ बूझि गइलें कि हमरे लिखल हवे। हमार हालत ख़राब रहे कि आजु ख़ैर नइखे। बाकिर कुछउ बोललें ना। हमके ई बुझाइल कि घरे गइले प ज़रूर पिटाई होई। बाकिर ऊहो ना भइल। एतने नाहीं एकरे बाद से चाचाजी हमके मारल–पीटल छोड़िए दिहलें। हमके लिखले से सबसे बड़हन फ़ायदा ईहे मिलल।

❑ 'साखी' एच–1/2 वी.डी.ए. फलैट नरिया,
पो० बी.एच.यू. वाराणसी–5

बियाह में कैटरर आ स्टेज पर वरमाला प्रथा कब आ कइसे ढुकल

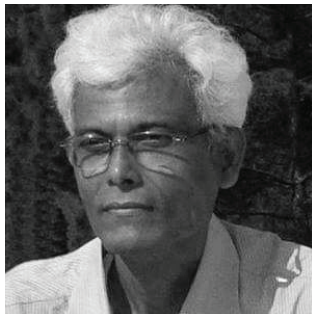

विनय बिहारी सिंह

पहिले बियाह– सादी में दुआरपूजा का बाद, बेटिहा पछ के कुछ विद्वान लोग आवत रहल हा आ दूल्हा पछ के कुछ लोगन से शास्त्रार्थ करत रहल ह। ई प्रथा प्राचीन काल से चलि आवत रहल ह। बाद में शास्त्रार्थ के परंपरा प्रश्नोत्तर में बदलि गइल। बेटिहा पछ के केहू बेटहा पछ से पूछि दी कि राजा जनक के गुरु के रहे? भा ह्वेनसांग भारत में कब आइल रहले? ई प्रथा एगो कारन से रहल ह। समाज में ज्ञान के सर्वोच्च सम्मान दिहल जात रहल ह। एगो अउरी बात, प्रश्न हमेसा बेटिहा पछ पूछी। उत्तर बाराती पछ के देबे के रही। त बाराती पछ भी तैयार हो के आवत रहल ह। आ चुन–चुन के पढ़ल–लिखल आ जानकार लोगन के बाराती में ले आवत रहल ह। कौनो–कौनो विद्वान त बाराती चले खातिर चिरौरियो करवावत रहल ह लोग। त हर बारात में ई होई। बाराती पछ जदि प्रश्न के जबाब दे दी, ई बड़ाई के बात मनाई। जदि उत्तर ना दीहल लोग त बेटिहा पछ के लोग के लोग ओकर उत्तर दे दी। ओने सादी– बियाह के रसम होत रही। ओकरा पर कौनो असर ना परी। ई एगो बहुते सुंदर परंपरा के निर्वाह रहल ह।

एगो अउरी परंपरा रहल ह। सादी खातिर मैरेज हाल ना बुक होखत रहल ह। बेटी के दुआर पर बरियात आई आ बाराती लोगन के सूते खातिर गाँव के घर–घर से खटिया आ बिछौना माँगि लिहल जाई। कैटरर के कौनो कल्पने ना रहल ह। गाँवे के लइका मिल–जुल के सैकड़न लोगन के खिया देत रहल ह। पत्तल पर खियावल जाई आ परोसे वाला निहोरा क क के रउरा के परोसत रहल ह। ओने मेहरारू गारी गइहन स आ एने बाराती खुस हो हो के खात रही। एक घर के बेटी के बियाह गाँव भर के बेटी के बियाह मनात रहल ह। सबकर सहयोग मिलत रहल ह।

बाकिर हर जगह जब बाजार हस्तक्षेप करता त सादी– बियाह में काहें ना करी? हर जगह बिजनेस के स्पेस निकाले के कला बाजार के पास बा। त बाजार, सादियो–बियाह में हावी हो गइल। कइसे? त पहिले सिनेमा आ मीडिया के माध्यम से वरमाला के ग्लैमराइज कइल गइल। फेर ओकरा के धीरे से सादी–बियाह में स्टेटस सिंबल बना दिहल गइल। लेकिन खराब पछ ई बा कि शास्त्रार्थ भा प्रश्नोत्तर के परंपरा खतम हो गइल। ज्ञान के महिमा के जगह पर धन के महिमा आ गइल। अब वरमाल में साधारणो ढंग से स्टेज सजाइब त लाख रुपया खरच हो जाई। सार्वजनिक रूप से वरमाला ना करब त एकर सिकाइतो होता। अब कैटरर ढुकि गइल बा। पहिले गाँव के हलुआई पूड़ी बना के सबका आनंदित क देत रहले ह लोग। बाकिर बाजार पत्तल पर खियावे वाला परंपरा खतम क देले बा, अब रउरा डिस्पोजेबल थरिया लेके परोसे वाला का आगा फइलाईं, त ऊ रउरा के खाना परोसी। खाए के गरज राउर बा। रउरा परोसे वाला का लगे जाईं, थरिया आगा करीं त ऊ तरकारी दी, दाल दी, पूड़ी दी भा जौन–जौन आइटम बा तौन–तौन दी। घटि गइल त केहू पूछे वाला नइखे, निहोरा करे वाला नइखे। फेर रउरा एके जगह खड़ा परोसे वाला का

लगे जाएके परी। खाए के बेरा उठीं आ तरकारी भा भात लेबे जाईं। एह परंपरा के अब केहू बाउर नइखे मानत, सब भरपेट खा के घरे चलि आवता। एह परंपरा से अब बेटी के बियाह में गाँव भा पड़ोस के जिम्मेदारी खतम हो गइल बा। त बाजार कहता कि पइसा दे दीं आ व्यवस्था के इंतजाम हमनी पर छोड़ दीं। रउरा बियाह–सादी करीं–कराईं। त ई परंपरा सुविधाजनक त लागता बाकिर पुरानका आत्मीयता के परंपरा के लोप हो चुकल बा। नया पीढ़ी त जानतो ना होई कि पहिले कौन–कौन उच्च कोटि के परंपरा रहल ह।

हमनी के अपना समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा से दूर होखल जातानी जा। पहिले बियाह बेटी के घर में होखत रहल ह। बियाह कइसे होता, खाली घर के लोग जानत रहल ह। वरमाला के आदान–प्रदान होखबो करी त चुपचाप पंडित जी करा देत रहले ह। ओकरा खातिर अलगा से कौनो सार्वजनिक प्रदर्शन भा सजावट के जरूरत ना परत रहल ह। ई कुल बेटिहा पर बोझे नू बा। फोटोग्राफर त मान लीं ठीको बा। हर आदमी अपना जीवन के खास छन कैप्चर क के राखे के चाह. ला। बार–बार ओकरा के देखि के सुख पावेला। बाकिर अउरी कुल तितिमा त बाद में जुड़त चलि गइल ह। अब रउरा कहब कि राजा जनक किहाँ त वरमाला भइल रहे। त वरमाला के ई प्राचीन परंपरा खाली राजा–महाराजा लोगन किहाँ होत रहल ह। आम आदमी का घरे ई कुल ना होई। पहिले गाँव के लइका पांत पर बइठा के बाराती लोगन के खिया देत रहल ह। अब त कुर्सी–मेज नाहियों रही, त खड़े–खड़े खाए के परंपरा चलि गइल बा। कइसे कौनो आर्थिक बोझा डाले वाला परंपरा, हमनी के प्राचीन परंपरा में ढुकि जाला, एकर उदाहरन सार्वजनिक वरमाला आयोजन बा। एमें बाजार के हाथ रहेला। बाजार आपन जगह बनावल जानेला। बाकिर हमनी का अपना जगह के रछा कइल ना जानेलीं जा। हमनीं का फट दे ओकर नकल करे शुरू कदेनीं जा। हमरा खूब अच्छी तरह याद बा, कुछ जगह, सब जगह ना, बाराती लोगन में से कुछ खास लोग जीके (जनरल नालेज) नियर तेयारी क के जात रहल ह। का जाने बेटिहा वाला का पूछि दिहन स। अब ज्ञान के इज्जत नइखे, धन आ धन प्रदर्शन के इज्जत बा। भले केहू दुइए नंबर के धन कमइले होखे त का ह, ओकर इज्जत बा। ईमानदारी के इज्जत बा कि ना? ई सवाल रउरा सब पर छोड़ि देतानी। रउरा समाज में देखि के बताईं, ईमानदार आ सीधा–साधा आदमी के का हैसियत बा? एकर जवाब रउरा खोजे के बा। जदि इज्जत बा त हमनी खातिर सुख के बात बा। जदि नइखे त हमनी के बाँचल पुरान परंपरा के संरक्षित करे के चाहीं। ईमानदारी के आ ज्ञान के प्रतिष्ठा फेर स्थापित करेके परी। कइसे होई, एकरा पर भी परिच. र्चा होखेके चाहीं। आखिर ई जरूरी बा कि ना? रउरा कहब कि एघरी के राजा हरिश्चंद्र बा? त राजा हरिश्चंद्र बने के नइखे। एगो मनुष्य बने के बा। मनुष्यता के स्थापित करेके बा। हमनी का मनुष्य हईं जा त भीतर के मनुष्यता के मजबूत राखे के जिम्मेदारी हमनिए के बा। आ समाज के निर्माण हमनिए नियर आदमिन से होला। त ईहो सोच– बिचार के, चिंतन के आ विमर्श के विषय बा। परिचर्चा के बिषय बा।

❑ क्षितिज अपार्टमेन्ट ब्लाक-बी, फलैट 4 बी 6130,
आर.बी.सी. रोड, दमदम, निकट गोराबाजार,
पोस्ट आफिस दमदम कोलकाता-700028,
मो.- 9874990459

ओम धीरज के दू गो गीत

(एक)- गते गते

गते–गते दुलहिन
बुहार रही अँगना।
छिन बोले बिछुआ
कि छिन बोले कँगना,

चुड़िया के बोल लागे
मिसिरी–मिठवना,
रहि–रहि दुअराँ
निहार रही सजना।

बहराँ बुहारैलँऽ
ससुरू बढ़इता,
सासु मोहें जइसे कि
पँवली नफइता,
ननदी त भोरहीं
लुभाय रही सपना।

बोझल नाव जइसे
डोले दुल्हनिया,
अँगुरी क पोर गिने
लहुरी जेठनिया,
मने–मने जेठरी
मँगाय रही पलना।

नीकि–नीकि दिनवा
देखावऽ मोरि मइया,
घरवाँ–बहरवाँ कि
बाजै बधइया
अम्मा मनौती पे
बार रही दियना।

(दू)-सगरो जहर बा

का खाईं का पीहीं
सगरो जहर बा,
गँउवाँ क मनई
शहरियो से बड़ बा।

दुधवा ओगारै छछात देइ सूई
बछरू गदेला भले जाँय मूई
बेहया क फूल जूही
कहि कहि बिकाला,
नइखे कानून
नाहिं दउवो क डर बा।

डारी क आप पेड़ लागल पपीता।
जातै बजार देंह बान्हें पलीता
मारेलँ रोज–रोज रोवै न देयँ
चुरइन मिलावट क
एतना जबर बा।

हाथ भर काँकरि क नौ हाथ बीया
इमिली से बड़ बाटे इमिली क चींया
पइसा क लँगड़ी पहड़वो के डाँकै
टी वी विग्यापन क
केतना असर बा।

❑ अभिज्ञान शाकुन्तलम, सा 14/96–56
सारंगनाथ कॉलोनी सारनाथ, वाराणसी-221007, 9415270194

सुने-गुने के

बलभद्र

बड़कवन के औलाद के इयाद में बा
अपना खानदान के ऊ सोनहुला दिन
घिउ चभोतल
गरीब-गुरबन के लगे का बा आपन शान बघारे
आ बतिआवे के ! / आपन सुनावे के बेरा
ना जाने ऊ लोग कवना खोह में चल जालें
पुहुत दर पुहुत के गरीबी, हिकारत/गारी-गुपुता के !
जब ऊ लोग सुनावेलें ई कुलि बात
उनका आंतर से उठेला भारी एगो टीस
पसर जाला उनका के घेर लेला
आ चेहरा लाल हो जाला
ना जाने ई कतना पुरान टीस ह
कहां त एह के सुने-गुने के चाहीं / कहां बनबना उठेला
सोनहुला दिन के इयाद में जिए वाला बड़-बढ़ुआ लोग
के आदि-औलाद

हमनी के जान

ऊ त दरद मतारी जाने
हंस के पूत फंसरिया लटके
पूत पांख पलकन प फरके
छाती जस दुपहरिया दहके
        राज कुराज करियवा बादर
        बहुत दिनन ले राह तकाइल
        तकलीं जतने ओहटा ओतने
        धूर उड़ल सुख सपन हेराइल
चानी अस चमचम कपार प
चान सुरुज का करीं बखान
उनकर करनी उनके धरनी
उलझ गइल हमनी के जान

ऊ का जाने !

१.

हर-फार ऊ का जाने जे कबहूँ परिहथ धइलस ना !
भूख के हाल ऊ का जाने जे छूँछा हँड़िया जनलस ना!
गरम रजाई, गुलगुल गद्दा, तोसक-तकिया ऊ का जाने!
दुइ जून पेट भरे खतिरा जे जूठ मलत बा आन घरे
मिलल-माँगल जे पहिरेला, गरब गुमान ऊ का जाने !

२.

पीर के बोध मेटावत बा जे झूठ के साँच बतावत बा
राम-सलाम सुहाये ना, ऊ मेल-मोहब्बत का जाने!
ईंट पुजावे महजिद ढावे, माटी पूज मति भरमावे
साँच कही से दुश्मन होई, जेल मिली, होई ना बेल
तिनतसिया, रंगहासियार गाँधी के मोल ऊ का जाने !

३

नदी-नार, बन-बाग सबतर कोइल, काग, मनई उदास
सोहर फगुआ कजरी बिरहा कतना दो जाने का उदास
दलपिट्ठी के स्वाद अलोपित कथा कहानी गइल हेराय
हउवे जेकर करसाज ई कुल, आँतर के पीर ऊ का जाने!

४

पाँच अँगुरी के छापा से घर के देवाल देवता-पित्तर
उतरे अँगना में जोत नया बिहंसे कलसा-ढकना-फुटहा[2]
बिरत रात उठे सोहर, पूड़ी- ठेकुआ छनमन- छनमन
ना कुछ शोर ना हरहर पटपट, ना लफड़ा ना ही हुहुकार
धरम के नाँव जे वोट बेसाहे, लोकमरम ऊ का जाने !

xx xx xx

१. 'मेरी माटी मेरा देश' के तहत कलसा में माटी बिटोर आयोजन।

२. रामनमी के मोका प जवन साँझ कलसा धरात रहे, फसल कटाइल सात खेत से सात अनाज के बाल बिनल जात रहे। ऊ ढकना कलसा प रखात रहे। बाल बीने के फुटहा बीनल कहल जाय

आचार्य (हिन्दी विभाग)
गिरीडीह डिग्री कॉलेज, गिरीडीह (झारखंड)

ई का हो गइल

कुष्ण कुमार

राति गहराते पचरतनी काकी के बेचैनी बढ़े लागल। निठाली के पूरा परिवार काकी के रोग–दुख हटावे के जोगाड़ में भिड़ि गइल रहे। पसन से बोखरा गइल रही काकी। गोड़ के पिडुंरी बढ़ल जात रहे। निठाली बो, काकी के तरवा लुगा से झारत रही। गमछी भिंजा–भिंजा के काकी के लिलार प ओकर बेटी धरत रहे। निठाली के एगो गोड़ काकी लगे आ दोसर सिवानन डाक्टर किंहा। सुई–दवाई सभ दिआइल। बाकिर कवनो फएदा ना बुझात रहे। बड़ा फेर में परि गइल रहन निठाली काकी के खटिया धइला नौ दिन हो गइल रहे। एह नौ दिनन में नवो करम हो गइल काकी के....।

हम रावा के जना दे तानी कि काकी के सवांग दुदुल काका तीन भाई रहन। एगो बड़ आ दोसर छोट, बीचे दुदुल काका। ओह दूनो भाई के बाल–बच्चा सभ रहे। अभागा रहलें दुदुल काका। बंस–बरकत खातिर एको जुगुति ना उठा रखलें। एगो छोड़ि दू गो बिआह कहलें। पहिले राधिका काकी तब पचरतनी। दवा–बीरो से लेले मनइनी–ओझइती तक कुछुओ ना छोड़लें। देवासे–देवासे दउरत कतना जूता तुरि देलें। बाकिर मुसरियो ना निकलल। दूसरका बिआह होते भाई लोग के महके लगले दुदुल काका। पचरतनी काकी गरम तवसीर के मेहरारू रही। ना झेलि पावल भाई लोग। अलगिया देल दुदुल काका के। अलगो भइला से कवनो दिकदारी ना भइल काका–काकी लोगन के। बाग–बगईचा, घर–दलानी में बाखरा भेंटाइल रहे। ऊपर से सोरह बिगहा खेत। उहो सातसाला। अलगा होते निठाली से गोटि बइठा ले लें काका– 'अब तोहरा दोसरा केहु के खेत–बध ाारि मनी–बटइया नइखे जोते–बोए के। कि हमार खेत तू देखते बाड़ कि हमरा टोपरा में घुर–पात डाल कि ओहि में घासि–गवत गढ़त ओह के अगोरत रहिह कि जिनिगी भ तोहरा के ना छोड़बि। कि निबाहि देबि। कि एक जोड़ा बैल बैसाखी मेला में किनवा देबि कि बिआ–खाद किने के नगद रोपेया दे देबि। कि अगहन आ बइसाख में हिसाब–किताब क लिहल जाई। कि तोहरा मेहरारू–बेटी, घर–दुआर के काम–काज सम्हरिहें स। कि दूनों घर के चानी कटे लागी.....।" काका के बाति निम्मन लागल निठाली के। ऊ बाति मानि गइलें। जेठ के दसहरा आवे से पहिलहीं सभ लोगन के खेतन से हिसाब क के आ बजदावा देके काका घरे असालतन रहे लगलें निठाली। उनकर मेहरारूओ आ बेटी काकी लोगन के सेवा–सतकार, टहल–टिकोरा में अझुरा गइली स। नियति के फेरा बड़ा टेढ़ ह। ना बरदास कइलस काका आ निठाली के साँठ–गाँठ। संगत भइला के सालो माथ ना लागल कि राधि ाका काकी गुजरि गइली। भाई–गोतिया, इयार–संघतिया, टोल–परोस सभे काका के कान भरे के शुरू कइल लोग निमना के संघत ना कइल हा। कि हटाव एह ससुरा के। कि एहि करिअठ, मुहटेढ़ अइँच के मुँह देखते बनलो काम बिगड़ि जाता। कि दोसर मनीदार–चरवाह राखि ल। कि संउसे गाँव मुँह बवले बा। कि एक बोलावे सतरह धावे कि का फेर में परल बाड़। कि गरीबी सुरसा लेखा मुँह बवले बिया। कि केहू के पेट आजु भरता। कतना जाना अइहें आ जइहें...। 'हँ.....हँ'..... कहत आ मुड़ि हिलावत सभकर बतकही सुनलें काका बाकिर अपने मन वाला काम कइलें। बात के पक्का आदिमी रहन। ना हटवलें

निठाली के। कहलें "ना....ना....। कि एक वेर जवन हो गइल। तवन हो गइल कि ओह में फेर–बदल ना होई। कि दुनिया में मरे–जीए के काम राते–दिन लागल बा। कि एह में केहु के दोस देबे के काम नइखे। कि भगवान के हाथ लमहर बा। कि ऊ जवन चहिहें तवने होई। कि बिधना के आगा आदिमी के कवनो विसात नइखे....।" काठो के पुतरी के सवति ना भावे। एगो भोजपुरी गीत के बोल ह–'सवति कारन मरले बा, निरमोहिया आहि रे माई...।' सवतिडाह त डोमघाउजो के तड़िया देला। जवना काम खातिर बिआह कइलें दुदुल काका ऊ त सधबे ना कइल। खोइँछा में भेंटाइल कलह –कंकारि। काका के दिमाग पगलावे के ठेकान लगा देले रहे लोग। दूनों काकी के आपुसी झोंटा–झोंटउअल, पीढ़ा चलउअल आ जरत दीआ एक दोसरा प फेंकला–फांकला से काका आजिज आ गइल रहन। कइअक राति दलानि में जाके काका उपासे सुति जासु। बाकिर ओइजो गइला से जान ना बाचत रहे काका के। दूनों काकी पारा–पारी पहुँचि जात रहि दलानि प मनउअल करे खातिर– 'एइजा आके लुकाइला से जान राउर ना बांची। चलीं घरे। खाई–पिहीं। ई राउर नाखड़ा तनिको नइखे सोहात...।' नोनिअवा के बेटी वाला हाल। ना नइहरे सुख ना ससुरे...। घरे सुतसु चाहे दलानी प। कतहुँ जान ना बाँचत रहे। कुफुत–कलह से फरछीन होखे खातिर काका भाँज बान्हि देलें। बाकिर काहे के चैन मिले। एगो हरे आ संउसे गाँव के खोंखी। केकरा–केकरा मुँह में डलाई। भाँज प सुतसु तबो चैन ना मिलत रहे। एक जानी से बतिआवसु तले दोसर जानी केवाड़ी तुरे के ठेकान लगा देत रही। सरकारी घेरा–खावा, नियम–कानून त केहु मानते नइखे। एहिजा त पराइबेट बान्ह रहे...। देंहि के आगि के दवँक बड़ा बरिआर आ बउराह होला।

ओह घरी सभ नियम–धरम फेल होखे लागेला। सबुर के कोठिला लबरेज भइला प मन अउँजाये लागेला ....। के भाँज मानेला? रोमान आ रोमांच के जोस आ जुनून के रोकल खेलि ना ह। भुखाइल गरू माल जइसे खूँटा कबारि के भुसहुल में समाये खातिर पतौखिया जाला, उहे हाल काकी लोग काका के क देले रहे। एक दिन त राति के के कहो दिने मे दलानि प काकी लोग दुदुल काका के बाँहि कबारे के ठेकान लगा देलि। एक जानी अपना ओरे त दोसर अपना ओरे। जान बचावे खातिर काका जमीनी प चुतरिआ गइलें। उनका कपार के बार नोचे लगली दूनों काकी। संजोग ठीक रहे। अइन मोका प निठाली चलि अइलें। नाहिं त ओह दिन पसन से परिछा जइते काका। चिन्ता–फिकिर के दरिआव में डुबत–उतरात रहन काका। बाकिर नियति से ई अतेआचार देखल ना गइल। उठा लेलस राधिका काकी के। एकाध दिन त जरूर काका के भुलावना नियन बुझाइल। बाकिर फेरू मटिआइल पानी लेखा थिरा गइलें। बीतत समे के साथे काका आ निठाली के इयारी अउरु गहिराड़ होत गइल....।

राधिका काकी के मुअला के दूसरके साल काका अपना बड़का भाई से अझुरा गइलें। बड़का भाई बड़ा अतहतह क देले रहन। अलगवति के बेरा हिस्सा–बाखरा बांटे में जवन ऊ डंडी मरले रहन तवन त बरदास क लेंले दुदुल काका। उनका बैमानी–शैतानी के गंगा लेखा पी के पचा लेले। बाकिर आगा के अधिकाई ढोवे में थउंसे लगलें। बड़का भाई भिनसहरे फराकित होखे जासु आ ओनहीं से दुदुल काका के पेवनिया आम के डाढ़ि नवा–नवा के भर मुटठा दतुअन तुरि लेसु। एक दिन के रहित त छिपि जाइत। रोजे के उनकर ई रोटीन हो गइल रहे। सउंसे बराढ़ी–भदवर के लोग आस्ते–आस्ते उनका एह अधिकाई के जानि गइल। सहर के बाति त रहे ना। ई त गाँव मे होइबे करेला। कतहतो बड़ गाँव होखे एगो सींकि डोलला प एह टोला से लेले ओह टोला तक सगरे पसरि जाला। बड़का भाई के इयार–संघतिया उनुका एह काम के चुटिकिआवे त ऊ थेथरइ बतिआवसु– 'आरे भाई जानत नइख। रहरि के दालि आ गोतिआ गलावहिं के मोल ह। गलले प ई दूनों निम्नन लागेला.....।' आ ही ही–ही ही दाँत चिआर देत रहन। इहे ना, आसाढ़ में धन खेती के बेरा खेतन के गोहट बनावें में उहे हाल करत रहन बड़का भाई। एक नम्बर के आरिकटवा रहन। अपना कुदरवाह से फुसफुसा देत रहन 'तनि दबा के अरिया काटि लिहे...।' ओकरा बाप के का लागल रहे। पड़ोसिया खेत करीब–करीब सगरे दुदुल काका के रहे। दू आंगुर, चारि आंगुर जइसन भाँज लागे हर साल आरि कटवा देसु। एगो त अइसन आरि कटववलें, जवन आदिये–औलाद से सनबरिसा बाजार जाये वाला संउसे गाँव के राहि रहे। साएकिल प चढ़ले आदिमी ओह आरि से चलि जात रहे। दू हाथ चौड़ा। अलगई के सुबहित दूइयो–तीन साल ना गुजरल रहे कि ओह आरि के ठुंठ भ छोड़ि के बकिये सभ ठुठिया देलें। आरि कटवा के खेत बनवा लेलें। लोग ओह आरि के छोड़ि दोसर बगल के आरि के बाजार के राह बना लेहल। निठाली हरेक साल दुदुल काका के कान में आरि काटे वोला बाति पिआवसु। गांव के हित–मितर कहसु। बाकिर दुदुल

काका कान में तेल डालि के महटिआ जात रहन। उलटे कहसु 'आरे भाई, जाये द लोग। कतनो त आपन खुने नु हवें बड़का भाई। घीव त दालिये में नु गिरता। गैर नइखे नु काटत। उनकर खेत आरिये में समाइल बा त हम–तू का करे के? जेकरा जतना बुझाला ओतने करेला। का करब लोग....?' ई कहत सथा जात रहन दुदुल काका। बाकिर नाकि के ऊपर पानी चढ़त ओह दिन बुझाइल दुदुल काका के जाहि दिन महुआ के दरख्त ओह आरि से ढिमिला के उनका खेत में पलरि गइल। आरि काटत–काटत ओकर सोरियो कटवा देलें बड़का भाई। ऊ दरख्त दुदुल काका के बखरा भेंटाइल रहे। ओह दिन दुदुल काका ना थाम्हि पवलें अपना के। केहु–केहु के मुँह में अंगुरि डालि के बोलवावल चाहि त के ह जे ना बोली....? कबरि गइले दुदुल काका 'आव, आजु फरिआ लीं जा। तोहरा मन तीसरा आसमान में चढ़ल जाता। लाजे भवहि बोलसु ना आ सावादे भसुर छोड़सु ना। आज जय–छय होइये के रहि। चाहे तु रहब चाहे हम.... ।'

गाँव के केहू एह में कुछुओ ना बोलल। घरवइया ममिला रहे। तमासबीन बनि सभे तमासा देखत रहे। ओह मोका प अपना संवागो से बढ़ि के काका के मदद कइलें निठाली। तेल पिआवल लाठी लेले मैदान में जुमि अइलें। भागि चललें बड़का भाई। अगर जे ओह दिन ऊ जुमितें त निठाली उनका के लिट्टी चोखा के सोआद मालूम करा देते। खैर, ओह दिन के पैंतराबाजी के बाद रत्ती भ दुदुल काका से ठेनि ना खोजलें बड़का भाई। उनका परछाहियो से फरका हटे लगलें। पनरह बरिस तक दुदुल काका के ढोवले निठाली। ऊ काका के बड़हन रहबर आ रखवार भेंटा गइल रहन। अगर जे काका के जिनिगी के राहे–ए–राज में निठाली ना भेंटाइल रहितें त ऊ दूध के माछी हो गइल रहितें। अगर–मगर के ढाबि में धंसि के ओरिया गइल रहितें।

समय करवट मरलस। राति में सुतलें दुदुल काका। ना जाने कब जूता में बिच्छी पइसि के लुका गइल रहे। भोरे उठलें। बे झरले–पोछले जूता पहिरे लगलें। पहिल गोड़ जूता में ढुकावते टुनुका के ऊ बिच्छी जूते में उलटि गइल 'बाप रे बाप! जान गइल। का दो कटलसि ऐ दादा... । आहि....आहि... ।' ई कहत जूता झटहा लेखा फेंकि काका बंसखट प चितनिआ गइलें। गतर से पसेना छूटे लागल। खबर मिलते झरवइयन घरे दउरि गइलें निठाली। झाड़–फूँक होखे लागल। छरबिन्हवा हो गइल काका के। गाँव से लेले जवार तक जे झरवइया एह सनेस के सुनल, सभे जुमि आइल। सभे आपन–आपन मनतर लगावल। जिअब त बाह–बाह। मुअब त बाह–बाह ...के मंतर–जाप से काका के खंडि चकरिया गइल। गतरि–गतरि राखि मलाइल। पितरिआ छीपा–कटोरा पिठि प सटा–सटा के झराइला। बाकिर लहर उतरे के नाव ना लेत रहे। सेदहां नारायणपुर एक क देलें निठाली। ककी समुझि गइलें कि अब जान ना बाचि। मुअहिं के बा। अपना लगे बोलवलें निठाली के। उनकर बाँहि ध के कलपे लगलें– 'अब हम ना बाँचबि। तोहरा नेकि हमरा से ना दिआई। पचरतनी के निबहि दिह। ओकर माई बाप अब तुहिं बाड़... ।' आ फफकि गइलें काका। काकिओ ओइजे रहि। भरि अंकवारी उनको के धइले काका गलगलाये लगलें।– 'एक आँखि बन क के निठाली के पिठि ठोकत रहि ह.. ।' ई कहत हरमेश खातिर चुप हो गइलें काका। काका के हालत देखि सभे डबड़बा गइल। ककी ना ठहरलें। बड़की काकी से मिले खातिर सरग के सीढ़ी ध लेलें... । निठाली आ उनुका परिवार के चलते काका के मुअलों के बाद पचरतनी काकी के कवनो दिक्कत ना भइल। उनुका खातिर निठाली के पूरा परिवार एक गोड़ प खाड़ रहत रहे। बाकिर सवांग के बिछोह उनका करेजा के सालत रहे। टीस के बदरी उनका मन में हरमेष कड़कत–गरजत रहे। देंहि गले लागल ना झोलि पवलि। सुगर, बी.पी. दूनों के झउरा में झउरा गइली। खटिये प समय जाया होखे लागल। दू–दू झोंक बेमारी पटकलसि। गोतिआ–देआद से लेले भाई–भतिज तक केहु ना छोड़ल काकी के। का ससुरा का नइहर? सभे अपना–अपना फिराक में कइअक झोंक काकी किंहा आइल–गइल। आ गोटी बइठावल। गुर होखे आ चूँटा ना लागे, आजु से अइसन कबहुं–कतहीं भइले नइखे.... । काकी के ससुरा के लोग उनुका से कहल– 'काकी, रावा अब तनिको मति सोंची। हमनी के राउर खून बानी जा। ओसहूँ रावा गुजरला प हमनिये के एह रावा धन के हकदार होखबि जा। चलि काल्हु बक्सर। हमनी के असथिराह क दीं। सवसन हो जाईं जा.... ।'

नइहर से आइल बुढ़ँगी भाई आ मताइल भतीजा कहलें– 'चलु काल्हु जगदीशपुर। कचहरी खुला बा। लिख–लाखि के ओरिया दे। अब तोरा के बा? मुअबे त सभ धन गोतिया–देआद हड़पि लिहें स। हाथ से तितिर निकलि जाई। अपना जिनिगिये में सभ एकोर क के फरिआ दे। हमनी के हालात तोरा से छिपल नइखे। बड़ा एकबाली बहिन बाड़े। तनि ताकि दे। उबरि जाई जा।

हमनी के उमेद प पानी मति फेरू। समय नइखे जानल। कब का हो जाई...?' धरम–करम आ लाग–लपेट के बेसन में कतनो सउनल लोग बाकिर तनिको ना पसिजली काकी। करसी–पुअरसी फेंटि–फेंटि के लेवरल लोग। गोरकी माटी के गोबरिआवल बाकिर तबो ना तोपाइल। दरार फाटिये गइल। एह नौ दिनन में काकी एह सोआरथी तागादा के बाजार के लूक में लूकवठत रहि गइली। बाकि ऊँट कवनो करवट ना बइठल। राति भ बाँये–दाँये ना भइली काकी। लेदरा प अमावट ना पराइल। नौवां दिन के राति काकी खातिर काल राति बनि के उनुका खोरहाइल जिनिगी में आइल रहे। काकियो एह लालची दुनिया के लहर में पँवरला से मुअलके निम्नन बुझली आ अपना सवति–सवाँग के साथे अपनो पीढ़ा बरोबर करे खातिर उड़नखटोला से उड़िया गइली। मचल कोहराम। का हित का मोखालिफ? सभे जुटल। हम लेबि त हम लेबि। आव त आव। धुरानभाखा षुरू भइल– सार आइल बाड़ बहिनअउरा आ कर तार झउरा। बोलब बेसी। बाक्सा छिनउअल, ताला तुरउअल। ढेका–जात कबरउअल। सिलवट पटकउअल। बालटी–लोटा फेकउअल। धरा–धरउअल। पटका–पटकउअल। बम्बईया एसटाइल। ले फायेट, दे फायेट। बाह रे काकी। कबीर बाबा लेखा गोली–गाँठा निकलि गइल। मोछि के लड़ाई। बुझाव कि कतना मुड़ी उतरि जाई। लास के किरिया–करम छोड़ि मचल मुँह चोथउअल। गाँव के बाति रहे। भंडार कोन के बरखा लेखा देखते–देखते ढेर लोग जुमि आइल।
एकरा पहिले कि गरदन उतरो निठाली अपना नामे बकसीसनामा के 'डीड' के नकल ओह झउरा में देखा के चेटिया लेले। सभकर भक फाटि गइल। पचरतनी काकी के ससुरा–नइहर के लोगन के का कहल जाउ, सउंसे गाँव बस एके बाति कहत अपना–अपना घरे गइल– 'ई का हो गइल...?'

❑ महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा-802301, (बिहार) मो.-9693228474

गँउवाँ के सहज सुभाव लगे

☑ **नवचंद्र तिवारी**

नदिया के निरमल नीर मतिन गंऊवा के सहज सुभाव लगे।
छोटकन पर नेह लुटावे आ बड़कन कऽ देखत पांव लगे।

चहकत चिरइन कऽ बोली से अंगना - दुआर गुलजार जहां
बिहंसे बसंत में अमराई, टपके महुआ रसधार जहां
माई के गज्झिन आंचर जस षीतल निमिया के छांव लगे।

जसहीं सुकवा खुर-खार करे, उचटेले नींन चुचुहिया के
जागे किसान सानी-पानी, गोते बरधन आ गइया के
का अगहन का भादो ओकरा दिन सगरी एके भाव लगे।

गंउवा जंहवाँ की बा अजुओ इज्जत-मरजाद कऽ खेयाल
बा जीयत जेकरा बल बूते, कजरी, चइता, मिरदंग-झाल
देखिहऽ 'नवचंद' कबो ओकरा हियरा जनि कवनो घाव लगे।
नदिया के निर्मल नीर मतिन गंऊवाँ के सहज सुभाव लगे।.....

...सनबीम स्कूल, बलिया

सीख

मीनाधर पाठक

बेटा के इस्कूल भेजि के नित्या अपना कमरा में झाँकि के देखली। उनके पतिदेव अबहिन ले सुत्तल रहलें, तबीयत तनी ठीक ना रहे। ऊ बिना कवनों आवाज कइले धीरे से रसोई में आ गइली आ ठंडा हो गइल चाह के पतीली गैस पर चढ़ा दिहली। तब्बे उनका चिरइन के चहकल सुनाई दीहल। बूझि गइली कि आजु फेरू से गौरइया परिवार अँगना में उतरि आइल बा। नित्या गिलास में चाह ले के रसोईघर के दुआरि पर बइठि के चुस्की लेवे लगली। ऊ ई ना चाहत रहली कि अँगना में उनके गोड़ धरते ई लोग फुर्र दे ऊड़ि जाउ।

गत्ता के एगो घोंसला बना के नित्या अपना पोर्च में टँगले रहली, जवना में गौरइयन के आइल–गइल लागल रहत रहे। एगो जोड़ा जबले आपन परिवार ले के उड़े तबले दुसरका जोड़ा ओहिमें तिनका जोड़े लागे। नित्या उनका खातिर बहरा दाना–पानी ध देत रहली। जहिया ऊ भुला जाँ तहिया ई लोग अँगना में उतरि के हल्ला मचा देव। ई घर जेतना उनकर रहे, ओतने इन्ह चिरइँनों के रहे। '''

चिरई लोग भर अँगना कूदत चहकत रहे। नित्या के लगहीं कटोरी में फूलल चाउर धइल रहे, जवन आजु ऊ बहरा धरे के भुला गइल रहली। धीरे से हाथ बढ़ा के कटोरी से चाउर लिहली आ ओकनी के आगे छींट दिहली। पहिले त ऊ कुल फुदकि के दूसरी ओर भाग गइली, बाकिर दाना देखि के फुदकत आ के टप–टप चाउर बीने लगली। चिरई–चिरौटा के पाछे–पाछे छोट–छोट बचवो कुल्हि फुदकत रहलें। अबहिन ए लोग के ठीक से दाना बीने ना आवत रहे। अपने नान्ह–नान्ह ठोर से टूटल चाउर उठावे के प्रयास करत रहे लोग बाकिर चिरई–चिरौटा पारा–पारी ए लोग के मुँह में दाना डाल देत रहलें।

नित्या बड़ा ध्यान से ई कुल देखत रहली। तबे एकदम से उनकर ध्यान चिरौटा पर गइल। ऊ झट दे खुद्दी उठावे आ बचवन के मुँह में ध दे। चिरई जबले एगो के मुँहे डाले तबले ऊ दूगो बचवन के खिया दे। देखते–देखत सब दाना सफाचट हो गइल रहे। ऊ झटपट चिरइयों के आगे से दाना उठा ले जात रहे। ऊ बेचारो कूद–कूद के कोने–अंतरे दाना जोहत रहली।

नित्या खूब चिन्हत रहली ए लोग के। बचपन में ऊ अपनी नानी के मुँहे सुनले रहली कि चिरौटा के गरदन पर जवन करिया धब्बा होला, ऊ चिरई के ना होखे। चिरौटा के ठोर करियाह होला आ चिरई के तनी ललछहूँ। अबले अँगना में छींटल सब दाना चट हो गइल रहे। ऊ लोग अब अउरी दाना जोहत रहे। चिरई–चिरौटा की चें–चें का साथे उनकर बचवन के मेहीं चीं–चीं सुने में बड़ा नीक लागत रहे। ऊ दोबारा कटोरी से चाउर लिहली आ अँगना में छितरा दिहली।

ऊ कुल्हि फेरु से दाना चुने लगली। षायद चिरौटा से रिसिया के चिरई उड़ि के ऊपर जाली लोग, बाकि बइठ के नीचे देखत रही कि ल, अब तूहीं खिआवा, बाकिर चिरौटा उनके रिसिअइला के परवाह कइले बिना एकहगो दाना बीन–बीन बचवन के मुँहे डालत

रहे। बचवो कुल्हि ओकरे पाछे–पाछे कुदत रहलें। नित्या ओकनी के देखि–देखि खुश होत रहली बाकिर चिरौटा के देखत–देखत का जाने का भइल कि उनके अपनी बाबूजी के इयाद आ गइल आ बाबूजी के इयाद आवते उनके बचपन के एगो घटना मन पड़ि गइल।

जब ऊ दर्जा छव में पढ़त रहली तब उनका पइसा चोरावे के लत लागि गइल रहे। ऊ रोज तइयार होके बस्ता पीठ पर लादस आ बाबूजी की थइली में हाथ डाल देस। जवन कुछ रेजगारी हाथे आवे ऊ निकाल के इस्कूल चलि जास। ई उनके रोज के कार हो गइल रहे। काहें कि जब ऊ इस्कूल जास तब उनके टिफिन दे के अम्मा पूजा पर बइठल होखस आ बाबूजी नहात रहीं। उनकर काम आसानी से हो जात रहे। अब रोज उनुका हाथे पइसा रहत रहे आ इंटरबल बढ़िया कटत रहे।

कुछ दिन ले त ई सब बहुत बढ़िया से चलल। तनिको आगम ना बुझाइल कि उनके ई पइसा के चोरी कबो पकड़ा सकेला, बाकिर बकरी के माई कबले खैर मनाई?

ओ दिन ऊ इस्कूल खातिर तइयार होत रहली। उनकर अम्मा टिपिन दे के अपनी पूजा पर बइठ गइल रहली। अम्मा के पीठ पीछे देवाल पर खूँटी रहे आ ओही पर बाबूजी के पैंट टांगल रहे। रोज की तरे आजुओ बाबूजी नहात रहनीं। ऊ बस्ता अपनी पीठ पर लदली आ बड़ी हुँसियारी से एने–ओने देखि के पैंट की थइली में हाथ डाल दिहली। कुछ रेजगारी हाथ लागते उनके आँखि में चमक आ गइल। सब चिल्लर मुट्ठी में बान्हि के हाथ बहरा खिंचते रहली कि खट्ट दे नहान घर के दरवाजा खोलि के बाबूजी बहरा आ गइनीं। ऊ जहँवा ठाड़ रहली तहँवा से नहान घर सीधे देखात रहे। अब त बाबूजी उनके देखत रहनीं आ ऊ बाबूजी के। बाबूजी सब बूझ गइल रहनीं।

"अच्छा त तूहीं रोज हमरी थइली से पइसा निकालत बाड़ूँ? रुका। अबे तोहके बतावत बानीं हम। ई कुल्हि तूँ कहाँ से सिखलू ह ? हम कवन कमी कइनीं हँ कि तोहके पइसा चोरावे के पड़ल ह?"

कहत बाबूजी एने–ओने कुछ जोहे लगनीं। जेब से हाथ निकाल के ऊ मूरत नियन ठाड़ रहली। चोरी करत धरा गइला से उनके होस उड़ल रहे। करेजा धक–धक करत रहे। अम्मो सब बूझि गइल रहली। बेर–बेर मूड़ी घुमा के उनके कड़ेरे देखत रहली बाकिर ऊ आरती कइले बिना आसन ना छोड़ सकत रहली, एसे ना उठली। तबले ऊ देखली कि बाबूजी के एगो सटही मिल गइल रहे आ उहाँ के सटही लिहले चलल आवत रहनीं। उनका भीतर एतना हिम्मति ना रहे कि मार से बचे खातिर ऊ बहरा भाग जासु। ऊ ओहिजा ठाड़ थर–थर काँपत रहली। आजु बाबूजी की छडी से उनके भगवानो ना बचा सकत रहलें।

"फेरु करबू ई सब?" कहते कहत बाबूजी उनपर छड़ी उठा दिहनीं। खूब ऊपर ले। डर के मारे ऊ जोर से आपन आँखि मून लिहली कि छड़ी अब गिरल कि तब, बाकिर जब छड़ी उनपर ना गिरल तब डेरात–डेरात आपन आँखि खोललली त देखली कि बाबूजी कपारे हाथ दे के बइठल रहनीं आ छड़ी भुइयाँ गिरल रहे।

अब आपन गलती उनके बुझा गइल रहे बाकिर ओ समय उनका अपना बाबूजी से कुछो कहे के हिम्मत ना पड़त रहे। ऊ चुपचाप अपराधी लेखा ठाड़ रहली। बाबूजी के आगे ना त उनके ओठ खुलल ना आँखि उठल।

"आजु के बाद हम तोहसे बाति ना करब। तू अइसन कार करबू, हमके तनिको भरोसा ना रहल ह।" कहत–कहत बाबूजी के आँखि लोरिया गइल रहे।

बुझाइल कि बाबूजी उनका के दू–तीन छड़ी पीटि दिहले रहितीं त ठीक रहित बाकिर उनका से बोलला बिना ऊ कइसे रहि पइहें। ईहे कुल्हि झमेला में स्कूल जाए में देर हो गइल रहे। ओ दिन इस्कूल ना गइली ऊ। कवनों तरे दू दिन बीतल। उनका कुछो नीक ना लागत रहे। मन ग्लानि से भर उठल रहे। उनके कारण बाबूजी गुमसुम रहत रहनीं। उहाँ के अम्मो से ढेर कवनो बातचीत करत ना दीखत रहलीं। उनके मन में बेर–बेर आवत रहे कि बाबूजी दू चार छड़ी मार दिहले रहितीं बाकिर एंगा चुप्पी ना सधतीं। ई चुप्पी नित्या खातिर सजाइ हो गइल रहे। ऊ सोचली कि अब ऊ खुदे बाबूजी के आगे अपनी गलती मानि के कान पकड़ि लीहें। '''

"बाबूजी! अब हम कबो अइसन गलती ना करब।"

ड्यूटी जाए खातिर तैयार होत बाबूजी लगे जा के ऊ कहली बाकिर बाबूजी ध्यान ना दिहनीं। अपनी तइयारी में लागल रहनीं। कुछ ना बोलनीं।

"अब कब्बो ई गलती ना होई बाबूजी!" नित्या अपनी दूनू काने हाथ लगा लिहली।

"सही...?"

कान पकड़ले–पकड़ले ऊ हँ में मूड़ी ऊपर–नीचे क

दिहली। बाबूजी आपन शर्ट के बटन लगावल छोड़ि के उनके उठा के अपनी करेजा से लगा लिहनीं आ उनकी पीठि पर हाथ फेरत समझावे लगनीं।

"अब कबो अइसन गलती मति करिहा। चोरी कइल नीक ना होला। पइसा के गरज होखे त अपनी अम्मा से माँग ल। ना त हमसे कहा, बाकिर एंगा जेब में हाथ डालल ठीक ना होला।" का जाने का का बाबूजी समझावत रहनीं बाकिर उनकी करेजा से लागल ऊ का जाने कवनी दुनिया में बिचरत रहली।

बाबूजी उनका के क्षमा क दिहले रहनीं। उनके मन पर लदाइल बोझा उतर गइल रहे। बाबूजी के छाती से लागि के जवन सुख मिलल, ऊ कहे मान के नइखे। बाबूजी के दीहल सजा के असर उनपर अइसन भइल कि आजु ले ऊ कबो अपनी पतिदेव की जेब में हाथ ना डलली। कई बेर उनकर कपड़ा के साथे रुपयों धोवा जाला। तब पतिदेव से झिड़की खाली कि धोवे से पहिले जेब काहें ना देखल जाला...!

के जाने कि उनपर ई बाबूजी जे चुप्पी के असर ह कि उहाँ के उठावल छड़ी के डर, आ कि उहाँ के दीहल सीख के प्रभाव? कहल मोसकिल बा। '''

आजु अपनी पीठ पर बाबूजी के ऊ दुलार भरल हाथ बड़ी इयाद आवता। आँसू रोकले नइखे रुकत। प्रयास कइला के बादो नित्या आपन रोवाई ना रोकि पवली त मुँह दाबि लिहली कि उनके रोवाई पतिदेव के कान ले ना पहुँचे।

"नित्या...!"

तबे पति देव के बोली सुनि के ऊ चिहा गइली। जल्दी से आँसू पोंछि के उठली आ मुँह धो के अँचरा से पोंछते रहली कि फेरु से पुकार आ गइल।

"नित्या, तनी एक गिलास पानी दे दा।"

अब उनके बाबूजी के साथ छूटि गइल रहे। ऊ पानी लिहली आ कमरा की ओर बढ़ि गइली। अँगना से गौरइया परिवार कबे के उड़ि गइल रहे।

☐ 437-दामोदर नगर, बर्रा, कानपुर 208027, मो०. 9838944718

कौन बेहयाई में?

☑ योगेन्द्र शर्मा 'योगी'

गिरगिट बन इंसान हौ घूमत
गिरल मनवता खाईं में
कोई बतावै समझ न आवै
का बा मजा बेहाई में।

धरम जबानी बाँचत सबही
बाझल हिया बुराई में
कइसे पार करी भव मनई
डूबत नाव खेवाई में।

लोभ में बाउर लोभी खोजै
दुष्मन अपने भाई में
मर्यादा क चीर हरन कर
मूरख झूमैं बड़ाई में।

हाय बिधाता बदउलल भाखा
जबरी जोर लगाई में
टूटल नेह बिरावै अँगुरी
ठोकर मिलै भलाई में

समय जे पूछी ओह दिन सूझी
गिरि बदली जब राई में
आपन चेहरा लगी भयावह
अपने ही परछाईं में।

करम निहगा नँगा नाची
लउकी छेद तोपाई में
कब तक झूठ लगाई परदा
रच 'योगी' सच्चाई में।

☐ भीषमपुर,चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

का पर करीं सिंगार

कमलेश

"पिया गइले कलकतवा उदास कइले ना.....।"

गीत के बोल सुनाते बुझाइल जे केहू खउलत तेल कान में एकदम हरहरा के डाल देले होखे। सुतलो में सिहर गइली निरमला। देह एकदम छटपट। गीत के बोल धक् दे करेजा में लागल। बुझाइल जे गोड़ भीरी चढ़ल सुरसुरी मए देह में दउरत सीधे करेजा प चढ़ गइल होखे। साँस अइसन हाली–हाली चले लागल जइसे हंफनी चढ़ल होखे। साँस के थिर करे के खातिर उठ के बइठ गइली। बइठते आंखिन का कोर ले लोर के एगो बून ढरकल। पोछे खातिर हाथ लगवली त बुझाइल कि गाल से गरदन तक भींजल बा। मने सुतलो में रोवत रहली का? का जाने कवन राम–राम के बेरा में इ गीत गवलस। एकदम बिरह में तड़पत आवाज। सुन के उनुकर मन कुहूक गइल। तकिया के बगल में हाथ लगवली आ खींच के निकलली मोबाइल फोन। टोवत–टोवत एगो बटन दबली आ भक दे अंजोर हो गइल। एह अंजोर में देखली आ चिहुँक के उठली– अरे बाप। अभी तुरत्ते त सुतनी हा। एतना जल्दी भोर के चार बज गइल? कब नहाए जाइब आ कब लउट के बाकी काम होई? इ पूस के जाड़ में ओढ़ना के नीचे से निकले के मनो त ना करे।

अचके में बिछौना छोड़ के उठ गइली निरमला। बगल में बिछल खटिया प नजर पड़ल त मुस्की छूट गईल। बारह साल के सुरेन्दर अपना ओढ़ना में एकदम किकुर के सुतल रहे। दूनो हाथ के बान्ह के दूनो गोड़ के नीचे अइसन दबइले रहे कि एकदम पाँच साल के छोट बच्चा नियन लागत रहे। बुझाता जे एगो कम्मर से एकर जाड़ नइखे भागत। उ उठली आ आपन ओढ़ना ओकरा कम्मर प डाल दिहली। सुरेन्दर कुनमुनाइल। निरमला के जीउ ना मानल। उ अपना खटिया प जवन लेदरी बिछवले रही उहो उठा के सुरेन्दर के कम्मर प डाल दिहली। एकरा बाद ओकर माथा सोहरावे लगली। सुरेन्दर के मुँह प हँसी नियन आ गईल। बुझाता जे कवनो नीक सपना देखता। छौंड़ा के मुँह देखला प बुझाला जे बाप के मुँह साट दिहल होखे। बोले आ चले के तरीको एकदम बापे लेखा सीख लिहले बा। ओकर माथा चूम लिहली आ धीरे से बोललीं– "बहेंगवा।"

एक्के झटका में खाड़ भइली आ देह प एगो चादर डाल के बहरी निकल गइली। अभी एकदम करिया अन्हार। एगो त हाड़ कँपा देबे वाला जाड़ा आ ऊपर से भकसावन अन्हरिया। एह में घर से बाहर निकले में केहू के हालत खराब हो जाए। बाकिर निरमला के त जइसे देह लोहा के होखे। उ अइसन आराम से अपना कोठरी के बाहर निकलली जइसे उनका अन्हारो में लउकत होखे। बड़ी आसानी से दीया बार के एक ओरि रख दिहली। गाँव में बिजली त बिया बाकिर छव महीना पहिले चोर–चुहाड़ तार काट ले गइलन स। एकरा बाद जवन बिजली कटल त दुबारा ना आइल। बिजली विभाग के अफसरन के कहनाम बा कि टोला के लोग पइसा जुटावे आ तार खरीद के देबे। एकरा बादे फेनू लाइन दियाई। अब 'ना नौ मन तेल होई आ ना राधा नचिहन।'

दीया जरल त भक दे निरमला के मुँह पर अंजोर हो गइल। सांवर रंग, बड़–बड़ आँख, लमहर नाक आ भरल–भरल ओठ। केस पीछे कमर तक अइसन लटकल जइसे देह प

नागिन लपटल होखे। निरमला के उमिर त पैंतीस बरिस से जादा हो गइल होखी बाकिर देह धाजा आ मुँह प पानी अइसन कि कबो तीस से जादा के ना लागस। आपन कहे के नाम प एक धूर जमीन आ ओही प माटी के कोठरी जवना प टीन के छप्पर। एह कोठरी में रहे वाला खाली दू गो परानी– निरमला आ उनुकर बारह साल के बेटा सुरेन्दर। मरद सुदरसन यादव पाँच साल पहिले कलकत्ता गइले। ओहिजा कवनो बड़का घर में गारड के नोकरी। पहिले त छठ आ होली में आ जात रहन बाकिर दू साल ले दरसन मोहाल बा। बातचीत करे के खातिर मोबाइल फोन कीन के दे देले बाड़न। रात–बिरात बात हो जाला। अबकी छठ में घरे ना अइलन त टोला के मेहरारू सब केतना अल–बल बोलत रही स। गोतिया–दयाद के लोग सब जनलो के बाद तरह–तरह के सवाल पूछेला। अब एही छठ में खरना के परसादी खाये निरमला सुशीला चाची के घरे गइल रहली। चाची उनुका माँग में सेनूर डलला का बाद पुछली– "सुदरसन छठो में ना अइलन हा दुलहिन?"

"ना। छुट्टी ना मिलल हा अबकी।" निरमला के आँख नीचे हो गइल।

"अबकी होलियो में ना आइल रहले। अरे एतना कमा के का करिहे सुदरसन? आके आपन घर परिवार देख लेबे के चाहीं। जुग–जमाना ठीक नइखे चलत।"

एतना बोलला के बाद सुशीला चाची निरमला के दूनो कान्ह ध के असीसली– "जीय, जाग, दुआर प खूब लइका–लइकी खेलँ स।"

निरमला किछुओ ना बोललली। उ सुशीला चाची के गोड़ छुए के खातिर निहुरली तले पीछे से सिधनाथ बो हँस के कहली– "मरद रही बाहर त लइका उधार–पईंचा से आके खेलिहन स चाची? एहिजा त इहे डर बा कि कहीं भिखारी ठाकुर के नाटक बिदेसिया वाला खेला मत हो जाव।"

निरमला तनी आंखि तरेर के सिधनाथ बो का ओरि देखली। सिधनाथ बो के साथे मजाक के नाता बा। बाकिर मजाके– मजाक में उ अइसन बात बोल देबेली कि खचाक दे करेजा में लाग जाला। निरमला के खिसिया के देखला के बादो उ अपना धुन में रही– "अरे कलकत्ता में मए जादूगरनी भरल बाड़ी स। कहीं कवनो सुदरसन भइया के बान्हि के रख लेलस त निरमला भउजी के कवनो बटोहियो ना मिली जवन उनुका के लवटा के ले आव।" उनुकर बात प मए मेहरारू ठठा के हँसे लगली स। निरमला के आँख डबडबा गइल। उ चुपचाप अपना अँचरा में रोटी–रसियाव के परसादी लिहली आ निकल गइली।

उरेब बोले वाला के का पता जे उ अकेले कइसे जिनगी के काट रहल बाड़ी। जब से सुदरसन यादव गईल बाड़े कलकत्ता तब से रोज सीतला माई के गोहरावेली– "एहवात के गाँवे लउटाव ए माई।"

सुदरसन यादव के छोट परिवार। कुल्हि जमा तीन गो परानी। गाँव में उनुका खाये–पीये आ रहे के कवनो कमी ना रहे। बाकिर सुदरसन के कहनाम रहे कि खाली खइले–पियले से जिनगी ना नू कटे। आगा का बारे में भी सोचे के चाहीं। सुरेन्दर बड़ होखता। ओकरा के बगसर भेज के पढ़ावे के होई। ना बढ़िया से पढ़ी त बड़ आदमी कइसे बनी। रात–दिन बस एही फिकिर में पड़ल रहस। ओह साल कलकत्ता से अइले निहोरा यादव आ ओहिजा के कमाई के खूब बखान कइले। गाँव के कतने नवहा कलकत्ता जाए खातिर पगलाइल रहन स। सुदरसन यादव कमाई का बारे में सुन के बउरा गइलन। धइलन निहोरा यादव के हाथ आ चल दिहले कलकत्ता। केतना रोकली निरमला। खूब रोअली–गवली। बाकिर सुदरसन ना रुकलन। ओहिजा जाके पहिले एगो कपड़ा के मिल में काम करे लगलन। बाकिर किस्मत के मार। एगो रात में करम फूटल आ मिल में आग लाग गइल। मिल बंद हो गईल आ काम करे वाला मए जाना सड़क प। एन्ने–ओन्ने खूब दउगलन सुदरसन त एगो बड़का घर में गारड के काम मिलल। रहे आ खाए के त फिकिर नइखे बाकिर इ चौबीस घंटा के काम बा। एही ले अब उनुका छुट्टी ना मिले।

परब–तिउहार प सुदरसन के ना अइला प कबो–कबो निरमला अल–बल सोचे लागेली। कहीं सचहूं बिदेसिया वाला गत मत हो जाव उनुकर मरद के। एक हाली फोन प उ सुदरसन से खूब लड़ली। कहे लगली चाहे उ उनुकरो के कलकत्ता बोलावस आ ना त उ गांवही आ के रहस।

सुदरसन खूब समझवलन– "पगला गइलू का तू? तहरा के एहिजा ले आइब त का खाइब आ का बचाइब? आ तुहूँ कलकत्ता आ जइबू त गांव के घर–दुआर के देखी? गोतिया–दयाद अइसहीं नजर गड़वले रहेलन स। काल्हुए दखल क लिहन स।" उनुकर बात सुन के ओह घरी त निरमला चुप हो गइली बाकिर बाद में खूब रोअली।

घर में मेहरारू के आपन मरद ना रहे त गांव भर के मरदन के इहे बुझाला कि उ केहू के बिछौना प आ के सुत सकेले। निरमला जब घर से बहरी निकलस त बूढ़ से लेके जवान तक सभ अइसे देखे जइसे अंखिये से उनुकर देहिया के नाप ले लीही लोग। अब एक दिन निरमला टोला के अउरतन का साथे मिसिरजी के खेत

में काम करत रही तले ओने से टघरत अइलन बिन्देसरी महतो। उमिर पचास पार हो गइल बा बाकिर जवानी के आदत नइखे छूटल। कुँआर लइकी से लेके बियाहल मेहरारू तक सभ के उरेब बोल देस। ओह दिन निहुर के काम करत रही निरमला। अचक्के में उनुका बुझाइल जे पीछे केहू खाड़ बा। करेजा धक दे कइलस। तुरत पीछे घुमली। बिन्देसरी महतो पीछे खड़ा होके खइनी मसलत रहन। निरमला के त जइसे मए देह में आग लाग गईल। बिन्देसरी महतो मुसका के कहलन– "रात दिन काम करत रहेलू। कबो आपन देहियो के बारे में सोच भउजी।"

"भउजी कहत लाज नइखे लागत महतो। हमरा उमिर के तहार बेटी–पतोह बाड़ी स। उमर राम–राम करे के भ गइल बाकिर अभियो अपना से कम उमिर के मेहरारूअन के भउजी कहत चलताड़।" निरमला अइसन चिचिया के कहली कि अगल–बगल काम करत दोसर मेहरारू भी खाड़ हो गइली स।

"अरे खिसिया काहे गइलू। हम त अइसहीं.....।" बिन्देसरी महतो अइसन जवाब सुने खातिर तइयार ना रहन।

"चुपचाप एहिजा ले चल जा। अबरा के मउगी भर गाँव के भउजी वाला खिस्सा एहिजा ना चली।" निरमला कड़क के कहली। बिन्देसरी महतो जल्दी से खइनी ओठ के नीचे दबा के चले लगलन।

"आ सुन ल बिन्देसरी महतो। दुबारा हमरा के भउजी कहल त तहार एक्को करम बाकी ना छोड़ब।" निरमला आपन हाथ में धइल हंसिया हवा में लहरवली।

बिन्देसरी महतो के त जइसे पानी उतर गइल। अइसन भगलें जइसे चोर जगरम होखला प भागेलन स। एकरा बाद निरमला के मन काम करे में ना लागल। उनुकर मन एकदम बेचैन हो गइल। घरे आके फूट–फूट के रोए लगली। घर में आपन आदमी नइखे एही से नू कोई दू गो बोल कह के निकल जाता। सुदरसन रहितन त केहू के बेंवत रहे जे अइसन कुबोल कह के निकल जाइत। उबकुरिये खटिया प गिर के रोवत–रोवत कब सुत गइली पता ना लागल। नींद टूटल जब बएना लेके पहुँचली सुन्दरी चाची। उनुका बेटी के ससुरार से मिठाई आइल रहे। निरमला के मुँह देखते उनुका मए बात बिना कहले बुझा गईल। दरद के भाखा बूझे में मेहरारूअन के कवनो जोड़ ना होखे। उ निरमला के अपना करेजा से सटा लिहली– "रोअ मत दुलहिन। चुप रह। हमरो आदमी नौ साल दिल्ली में रहलन। बुचिया के करेजा में साट के कइसे दिन कटली हमही बुझतानी। बाकिर सीतला माई के किरपा। समय प लउट अइलन दिल्ली से। तुहू उहे उपाय कर जवन हम कइनी। रोज किरन उगे के पहिले नदी के किनारे सीतला माई के पिंड बना के पूजा कर। साल बीतत ना बीतत माई तहरा अहिबात के लवटा दीहन।"

तब से रोज अन्हारही निकल जाली निरमला। आजुओ किरिन फूटे के पहिले निकल गइली सिकरौल घाट। घाट टोला से जादा दूर नइखे। जादा से जादा आध ा कोस। जाड़ा, गरमी भा बरसात। कवनो अंतर ना पड़े। हाथ में डोलची आ डोलची में चार–पाँच गो डिबिया। कवनो में सेनूर त कवनो में रोरी आ कवनो में लिचीदाना। साथे एगो अगरबत्ती के डिब्बा आ माचिस। कान्ह प नहइला के बाद पहिने के खातिर लूगा–साया आ कुरती। निरमला नदी के किनारे पहुँचली त एकदम सन्नाटा। आदमी त दूर कवनो चिरियो–चुरूंग ना। बाकिर निरमला के देह में ना ठंडा के असर आ ना कवनो डर–भय। किनारे पहुँच के डोलची आ कपड़ा रख दिहली। नदी में गोड डलला के पहिले चुरूआ में पानी ले के कपार प डलली आ दूनो हाथ जोड़ लिहली। एकरा बाद धीरे–धीरे गोड़ बढ़ावत कमर भर पानी में जा के खाड़ हो गइली। पानी त अइसन जइसे बरफ होखे। बुझाइल जे कमर के नीचे के मए देह एकदम सुन्न हो गइल होखे।

माथा प अंचरा डाल के दूगो डुबुकी। देह अइसन काँपे लागल कि खाड़ भइल मुसकिल। दाँत के कटकटइला से होखे वाला आवाज जइसे दू बाँस दूर से सुना जाए। निरमला पूरा देह कड़ा कइली आ दूनो हाथ फइला के पूरब ओरि मुँह क के खाड़ हो गइली। एकरा बाद दूनो हाथ जोड़ली आ ओठ प बुदबुदी। का जाने कवनो मंतर पढ़त रही कि दोहा। एही तरे तब ले खाड़ रहली जब ले पूरब में ललछिहूं ना हो गइल।

नदी से बाहर निकलला के बाद भींजले साड़ी में बइठ गइली किनारे। नदी के भीतर से गील माटी निकलली आ किनारे गोल पिंड लेखा बना दिहली। एह पिंड प पहिले रोरी के टीका, फेनू सेनूर आ दू गो फूल। एकरा बाद अगरबत्ती जरा के पिंड के चारो ओर देखा के ओहिजे खोंस दिहली। लिचीदाना के चार गो दाना चढ़वली आ पिंड का सोझा पटक दिहली आपन माथा– "एहवात बना के रखिह ए माई। उनुकर मति बदल द। फेनू उनुका के गाँव में लउटा के ले आव। सुरेन्दर के पीठी सहाय होखिह माई। उनुकर अरुदवाय बढ़इहऽ।"

आपन माथा उठवली। पूरा माथा में नदी के किनारे के माटी सट गइल रहे। अबकी हाथ जोड़ लिहली– "मए गाँव–जवार सुखी रहे माई। अब कवनो रोग बलाय ना फइले।"

एकरा बाद डबडबाइल आंखिन ले नदी के ओर तकली आ दूनो हाथ जोड़ के मूड़ी नवा दिहली– "तोहरो से निहोरा बा ए माई। सुरेन्दरा के बाबू के अब कलकत्ता से बोलाव ए माई। पाँच बरिस हो गइल। अब कबले घर सून रखबू। तू मए गाँव के मान के रखवाला हऊ। हमरो सेनूर के देखिह ए माई।"

एकरा बाद पीपर का फेड़ के आड़ में जाके भींजल लूगा खोल के दोसर पहिन लेली। तले सूरज नारायन के किरिन फूट गइल रहे। दूनो हाथ जोड़ के सुरुज नारायन के गोड़ लगली आ डोलची उठा के घर का ओर जल्दी–जल्दी चले लगली। घरे पहुँच के रोटी सेंके के होई। जल्दी से रोटी ना सेंकाई त सुरेन्दर बिना खइले इसकूल भाग जाई। पढ़े के ओकर लगन देख के निरमला के जीउ जुड़ा जाला। जब उ अंगरेजी में धांय–धांय बोले लागेला त उनुका इहे बुझाला कि उनुकर मए मेहनत के फल मिल गइल होखे।

गाँव के सीवान में ढुकबे कइली कि एगो चहकल बोली कान में पड़ल– "का ए दीदी। खाली सिकरौले घाट प नहइबू कि गंगो जी के पानी डलबू देह प।"

पलट के देखली निरमला। सोझा सुमेर के मेहरारू कान्ह प पुआर रखले आवत रही। सुमेर के बियाह पांच साल पहिलही भइल रहे। सुदरसन के छोट भाई लागेलन सुमेर। एहि से उनुकर मेहरारू उनुका के दीदी कहेली।

"पगलाइल बाडू का कनिया? गंगाजी नहाय के माने बगसर जाए के पड़ी। आ बगसर गइला के माने पूरा दिन के झंझट। बाकी के काम कब होई?" निरमला के बोली में दुलार छलकल।

सुमेर के मेहरारू कान्ह प के पुआर नीचे पटक दिहली– "खाली कामे–काम होई दीदी? हमनी के जिनगी के कवनो सवख बा कि ना?"

"इहे त औरत के जिनगी ह कनिया। बियाह के पहिले माई–बाप के खूँटा से आ बियाह के बाद भतार–पूत का खूँटा में। बन्हइले कट जाले जिनगी।" निरमला कान्ह प रखल भींजल लुगा हाथ में ले लेली।

सुमेर के कनिया निरमला के कान्ह पर हाथ धइली– "कबो–कबो खूँटा से पगहा तूड़ के निकलहू के बारे में सोच दीदी।"

निरमला किछुओ ना बोललली। बस धीरे से हँस दिहली।

"सुन ना दीदी। अगिला सोमार के खिचड़ी के मेला लागी बगसर में गंगाजी का किनारे। चल ना गंगाजी नहाइल जाई आ मेला घूम–घाम के साँझ ले लउट आवल जाई। तू चलबू त हमरो गइला प केहू बोली ना।" सुमेर के कनिया निहोरा कइली बाकिर उनुकर आवाज में कवनो छोट लइकी लेखा जिद झलकत रहे।

"आछा। देखतानी। सुरेन्दर के इसकुल ना रही त चले के बारे में सोच सकीला।" कह के फेनु उहे तेजी से अपना घर का ओरि बढ़ गइली निरमला।

साँझ के इसकुल से आवते सुरेन्दर बस्ता खटिया पर पटकलस आ निरमला के गला में हाथ डाल के झूले लागल। निरमला ओकर माथा सोहरवली– "आज बड़ा दुलार देखावल जाता माई से। भूख नइखे लागल का?" "जानताड़े माई। एतवार के त इसकुल बंद रहेला आ अबकी सोमारो के छुट्टी बा।" सुरेन्दर के आवाज से खुशी छलकत रहे।

जइसे सुरेन्दर इ बात कहलस निरमला के सुमेर के कनिया के बात इयाद आ गइल। उ सुरेन्दर के मुँह आपन दूनो हाथ मे ले लेली– "त चल बेटा, सोमार के बगसर चलल जाव। खिचड़ी के मेला घूमल जाई। सांझ ले गाँवे लउट आवल जाई।"

"सांचो माई?" सुरेन्दर आपन माई के चेहरा अइसे देखलस जइसे ओकरा सोझा निरमला ना कवनो अउर मेहरारू होखे।'

"सांचो ना त झूठ बोलतानी हम? चल, जल्दी से रोटी खा ले।" कह के थरिया में सुरेन्दर खातिर खाना निकाले लगली। सांझ डूबत–डूबत उ सुमेर के घरे पहुँच के कनिया के इ बात बता चुकल रही। दूनो घर में बगसर जा के गंगा असनान करे आ मेला घूमे के तइयारी सुरू हो गइल रहे। सुरेन्दर त अंगुरी प दिन गिने लागल रहे।

गाँवे से बगसर गईल कवनो आसान काम थोड़े बा? गाँवे से तीन कोस पैदल चलला प मिलेले बस। इ बस दू घंटा में रघुनाथपुर पहुँचा देबेले। ओहिजा ले रेल पकड़ के आवे के पड़ेला बगसर। एहू में दू घंटा त लागिये जाला। निरमला कबो–कबो सोचेली कि मए नहान के मेला सहरिए में काहे लागेला? एकाध दूगो मेला उनुका गाँवहू में लागित। ओहिजो उमड़ित भीड़।

गाँवे से भोरे पाँचे बजे निकलल लोग। निरमला का साथे सुरेन्दर आ सुमेर के कनिया। गाँव–टोला के दस–बारह गो आउर मेहरारू। एकाध गो बूढ़ पुरनिया लोग भी चलल। होखल जय–जयकार कस के– गंगिया महरानी की जै।

बस में त कवनो तकलीफ ना भइल बाकिर रघुनाथपुर में ठेलमठेल। रेल में चढे में त निरमला के मए करम हो गइल। बाप रे बाप। केतना आलम। सभके बगसर जाए के बा। सकरात के दिन गंगाजी में असनान के पुन सबके चाहीं। निरमला केहू तरे सुरेन्दर के रेल में

बइठा दिहली आ अपने खिड़की के अलम ले के खाड़ हो गइली। टिकसो कटावे के जगहा ना मिलल। कवनो बात ना। एह भीड़ में टिकस के देखे आवता? बगसर में उतरली त पहिले धांय देना आपन मुड़ी जमीन प पटक दिहली– सियाबर रामचंदर भगवान की जय। रामजी आइल रहिले एहिजा। ताडिका के एहिजे बध कइले। माटी उठा के सुरेन्दर के माथा प लगवली। गाँव के ूमए लोग आगा–पीछा होखत चल दिहल गंगाजी के किनारे। साथे चलत राम अवधेस चाचा बतवले– "टिसन से सोझ रास्ता बा रामरेखा घाट। एकदम पवित्तर घाट। रामजी एहिजे नहइले रहन।" सड़क प भीड़ अइसन कि चले के कवनो जरूरत नइखे। आदमी धंसोरात–धंसोरात घाट प पहुँच जाई। सड़क के किनारे जगहे–जगहे तेलहा जलेबी छनात बिया। साथे पूड़ी–कचौड़ी आ तरकारी भी बिकाता। फुलौना आ खेलवना के दोकान सभ अइसन सजल बाड़ी स कि कवनो लइका के मन मचल जाई। सुरेन्दरो के मन मचलल– "माई, खेलवना का दोकान प चल ना।"

"बहेंगवा के टाटी मत बन। चुपचाप पहिले घाट प चल। नहा–धोआ के पूजा पाठ का बाद पहिले दही–चूरा खा लिहे। ओकरा बादे कवनो दोसर काम।" सजाव दही, चूरा आ गुड़ गाँवे से लेके चलल बाड़ी निरमला। बगसर में कइसन दही मिली कवन भरोसा? घाट के भीरी पहुँच के त उनुकरो मन अटपटा गइल। केतना सिंगार–पटार के दोकान। का नइखे बिकात। चूड़ी, कंगन, सेनूर, गोर बनावे वाली कीरिम, महकउवा पौडर। सब सड़के के किनारे। सुमेर के कनिया के त बुझाए जे उनुकर बगसर आइल सफल हो गइल। उनुकर बस चले त मए दोकाने उठा के गाँवे चल जास। बार–बार निरमला का ओरि ताकस– "दीदिया, खाइल–पीयल बाद में जाई। पहिले त हम भर हाथ चूड़ी पहिनब। किरिम आ पाउडर सभ लेब। तुहू ले लीह। अरे दुल्हा अइहे त लगा के बइठबू त उनुकरो मन हरियरा जाई।"

उनुकर पीठ प धीरे से थाप लगवली निरमला– "अरे कनिया, पहिले जवन काम करे आइल बाडू ऊकड़ल।"

रामरेखा घाट। निरमला पहुँचते हाथ जोड़ के गोड़ लगली। केतना बड़–बड़ मंदिर। आ गंगाजी के पाट। बाप रे। अइसन बुझाए जे खाली पानीए पानी। एगो पंडाजी का भीरी मए सामान रखाइल आ गंगाजी के पानी में उतरल लोग। खूब प्रेम से असनान भइल। सुरेन्दर त मन भर पवरलन। एहिजा काहे के ठंडा लागो। नहइला के बाद पूजा–पाठ। किनारे भिखमंगन के लाइन। आजु के दान–पुन ऊपर काम आई। एकरा बाद घाटे प बइठ के चूरा दही आ गुड़। तनिके–तनिके खाइल लोग। तेलहा जलेबियो त खाए के बा अबहीं। खा–पी के अब चल मेला घूमे। सुरेन्दर आ सुमेर के कनिया के गोड़ में जइसे पहिया लागल होखे। धइले नइखे धरात लोग। निरमला जानत रही जे मेला देख के लइकन का हाल होखेला। एह से उ बचावल पइसा में से थोड़े ले लेले रही। सुरेन्दर फुलवना, गाड़ी आ बाजा खरीद के खूबे खुश। तेलहा जलेबी आ पूड़ी खा के अघा गइलन। सुमेर के कनिया के एगो दोकान से जीउ नइखे भरत। कबो एह दोकान प त कबो दोसर दोकान प। कबो पौडर सुंघस त कबो कीरीम लगा के देखस। निरमला चुपचाप देखत रही। आखिर एगो दोकान प जाके भर हाथ चूड़ी आ लहठी पहिनली। निरमला मुसकइली– "तनी कमे पहिनतू। भीड़–भाड़ में जाए के बा।"

कनिया ठठा के हँसली– "हम त एक्के गो बात जानीला दीदी। भर हाथ चूड़ी ना त कच्च दे राँड़। आ अब तुहू पहिन चूड़ी। आव बइठ एहिजा।"

निरमला के इयाद पड़ल। पछिलका होली के पहिले पहिनले रही नया चूड़ी। एकरा बाद ना सुदरसन अइलन आ ना उनुकर कवनो सरधा पूराइल।

कनिया केहुनी मरली– "भर हाथ चूड़ी–लहठी पहिन के आ कीरिम पौडर लगा के चलबू त स्साला कतने लोग बेहोस हो जाई। देखनिहार के धरनिहार लागी ए दीदी।"

चूड़ीहार मुसुका के कहलस– "टह–टह लाल चूड़ी रउवा हाथ में सोभी। एह में हरियर रंग के लहठी मिला दे तानी। जे देखी देखते रह जाई।"

थथम के खाड़ हो गइली निरमला। केकरा के देखावे खातिर उ चूड़ी–लहठी पहिनस? कीरिम–पौडर लगा के केकरा प गमक उड़इहन? सिंगार–पटार केकरा खातिर करस? बिन्देसरी महतो के देखावे खातिर कि गाँव के लंठ लपाडी के देखावे खातिर? जेकरा के देखावे खातिर उनुका सजे के चाही उ त जाके कलकत्ता बइठल बा। अचके में दोकान प से उठ के खाड़ हो गइली निरमला। फेनू दू कदम पाछे हट गइली। कनिया अचकचा के पूछली– "का भइल दीदी? अरे पहिन लऽ चूड़ी। ले ल कीरिम पौडर।"

निरमला धीरे से कहली– "ना कनिया। हमरा अभी इ सब नइखे लेबे के।" कहत सुरेन्दर के हाथ पकड़ली आ मेला के बाहर निकल गइली। कनिया चकाइल आंखिन से उनुका के जात देखली आ फेनू दउर के उनुका साथे हो गइली।

फ्लैट नं. 301 निरंजन अपार्टमेंट आकाशवाणी मार्ग, खाजपुरा बेली रोड, पटना, बिहार। मो.- 09934994603

मनोज भावुक के दू गो गीत

(एक)

हे भोले बाबा, हे शंभु बाबा, मनवा के हमरा बनारस बनावा
दुख हो या सुख हो, मस्ती में राखऽ, जिनगी के नइया पार लगावा

काशी विश्वनाथ के मंदिर धर्म के राह धरावत बाटे
मणिकर्णिका के घाट त बाबा मोक्ष के राज बतावत बाटे
सँगही दूगो रस्ता बा जे माया में अझुरावत बाटे
धर्म–अर्थ आ काम–मोक्ष के राह पर बा लंका चौराहा
केने जाईं, सोचत बाटे, चौराहा पर इक बउराहा
एह उलझन से महादेव हो तुहीं बचावा, तुहीं बचावा
हे भोले बाबा, हे शंभु बाबा, मनवा के हमरा बनारस बनावा

भक्ति के नगरी, मुक्ति के नगरी इहे बनारस, जियो बनारस
जे हर लेवे दुखवे सगरी, इहे बनारस, जियो बनारस
भोले शंकर के त्रिशूल पर टिकल बनारस, जियो बनारस
कृपा करेलें बम बम लहरी एही बनारस, जियो बनारस
शम्भू शम्भू शिव शिव बोला, मन से बाबा के गोहरावा
हे भोले बाबा, हे शंभु बाबा, मनवा के हमरा बनारस बनावा

भोले भंडारी अविनाशी, तोहरे खातिर अइनी काशी
तोहरे असरा बाटे अब त, ले लऽ शरन में ए कैलाशी
अइसन डमरू बजावा ए बाबा भागे कोसो दूर उदासी
भगिया चमके, जिनगी चहके, अइसन हाल में राखा राशी
बमबम होके जीए सबहीं, महादेव किरिपा बरिसावा
हे भोले बाबा, हे शंभु बाबा, मनवा के हमरा बनारस बनावा

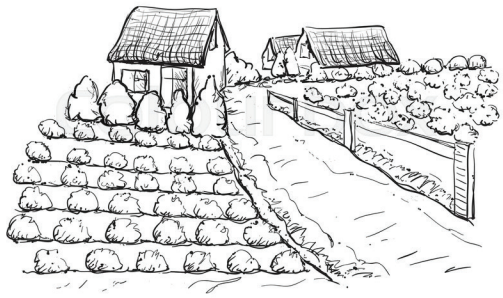

(दू)

समय कसइया के कवन भरोसा
कब का देखावे, कहाँ देवे धोखा!

भाई के दुखवा में भाई सटे ना
खुनवो के रिश्ता में नेहिया टिके ना
रुपिया आ पइसा के बतिए अनोखा!
समय कसइया ...

बछरू अलग होलें, हँकरेले गइया
कटले कटाला ना निठुर समइया
दुनिया के मिल जाला हँसे के मोका!
समय कसइया ...

भगिया में आगि लागल कवने करनवा
बेरि–बेरि पूछेला पागल परनवा
कब आइल जुल्मी बयरिया के झोंका ?
समय कसइया ...

❑ फ्लैट 3017, टावर–17 महागुन माइवुड्स
ग्रेटर नोएडा–वेस्ट, गौतमबुद्ध नगर 201306,
मो. 8291633629

गुलमोहर के गीत

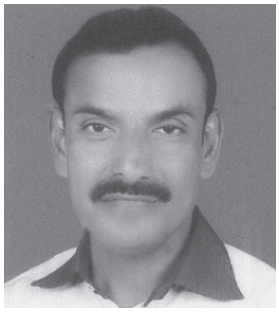

विष्णुदेव तिवारी

राह में /मोड़ पर ठाढ़/गुलमोहर के गाछ
लाल टेस फूल सहित/मिलन के/चिन्हासी बन के/
मुस्कात रहे।

तहरा प्रीत खातिर/राहता में/फूल लुटावत
इचको ना/अघात रहे।

हम देखलीं/तहार देह
गवें–गवें/गुलमोहर हो गइल
फूल–फूल गुनगुनात/सोहर हो गइल।

आज जब जान से लेके भगवान तक आसानी से मिल जातारे, संवेदना कनछेदी बादर हो गइल बा जेमें प्रेम के मयगर बूनी टिकल मुश्किल जनात बा। लोग–बाग सब हबेखत बा, हर करम–कुकरम करत बा आ ब्राह्मणवाद, मनुवाद, पूँजीवाद, उपभोक्तावाद, आर्थिक साम्राज्यवाद आ पता ना अउरी अनेक वादन के नाँव ले–लेके छातियो पीटत बा। जीवन आ साहित्य दूनों जगे नकल आ पोंछि सुहुरउल चल रहल बा। असल दाँत चिआरत बाड़े। साँच आ ऊँच कविता दूलम होत जा रहल बा। नाँव हटा दिहल जाउ त पते ना चली कि कवितवा लिखले के बा? मौलिकता नदारद बा।

एह घोर क्षरण–काल में कौशल मुहब्बतपुरी के 'गुलमोहर के गीत' कविता के, प्रेम के, एह से जीवन के बाँचल रहला के पुरहर प्रमाण दे रहल बा। प्रेम के गहिर व्यंजना के मौलिक चित्रण एह संग्रह के कई कवितन में सुंदर ढंग से भइल बा। बिंब, प्रतीक, ध्वनि, लय आ बाहर–भीतर के संगति– हर लेहाज़ से इहनी के बेशक आदर्श मानल जा सकता बा, जइसे–

राह में/मोड़ पर खाड़
गुलमोहर के गांछ/लाल टेस फूल सहित
मिलन के चिन्हासी बन/मुस्कात रहे

तहरा प्रीत खातिर/रस्ता में
फूल लुटावत/इचको ना अघात रहे

हम देखलीं/तोहार देंह
गँवे–गँवे/गुलमोहर हो गइल
फूल–फूल गुनगुनात/सोहर हो गइल।

आ.. सादगी अइसन कि इश्क़ हो जाउ! हर वाद से परे जाके मनुष्य आ प्रकृति के साहचर्य के अरघ देत ई कविता प्रेम के अविनाशिता के प्रणव हो जाति बा। 'इचको ना अघात रहे' माने अतृप्ते रह जात रहे आ 'फूल–फूल गुनगुनात सोहर हो गइल' माने दृश्य सौंदर्य अदृश्य ध्वनि हो गइल। प्रेम में अतृप्ति एकरा एकनिष्ठता के प्रमाण ह। दृश्य के सीमा होला, ध्वनि सीमाहीन होले। प्रेम शरीर के सहज आकर्षण से शुरू होके अविनाशी ऊर्जा में बदल जाला एह बात के गवाही कवनों प्रेमी बेझिझक दे सकेला। सोहर लरिका भइला पर गवाला। हर सच्चा प्रेम लरिके अस निहछल, अविकारी रहेला।

'गुलमोहर के गीत' में प्रेम के दर्शन (philosophy) से सहज साक्षात् करावे वाली अनेक कविता संग्रहीत बाड़ी स। इन्हनीं सब के संचारी भावन में भलहीं विविधता होखे, स्थायी भाव एके बा– निर्वेद। श्रृंगार रस के स्थायी भाव रति जब शांत रस के स्थायी भाव निर्वेद में पर्यवसित हो जाउ त प्रेम अलौकिक हो जाला। इहे आर्ष काव्य–दर्शन ह।

कौशल मुहब्बतपुरी के कविता

सेवाति के बूँन

ओस के बूँन
फुनगी से
जड़ तक के
जतरा
पूरा कइलस।
ऊ आपन सबकुछ
पउधा पर
लुटा दिहलस।

ऊ पउधा के
कण–कण में
समा गइल।

ओह दिन
पिआस मेटावेला
बरखा के बूँन
ना आइल।
ओह दिन
पउधा के जिनगी में
छोटकी बूँन
सेवाति के बूँन
बनके आइल।

'हर पेड़ के,
हर जीव के,
आपन अलग
सेवाति के बूँन ह।'
ई कहत
कुबड़ा मजूर अपना छोटका पूत के मुँह में
नून–रोटी के कौर बना के
रख दिहलस।

गुनावन

गवरइया के एगो झुंड
आइल रहे
बीच आँगन में
बइठ के
देर ले
चिचिआत रहे
अइसे–जइसे
कवनो पंचइती में
होखे बोलत–बोलत
दाना चुगत।

कबूतरो अइलन सऽ
एक झुंड
पूरा छप्पर के
चक्कर काट के
बइठ गइलन सऽ
आउर घूमत–घामत
खोजलन सऽ दाना।

मुंड़ेर पर
बइठल कउआ
जाने का
उचारत रहे कि
घर से दूध–भात
निकल के आइल
रखा गइल ओरियानी तर
आउर
भींजल अंखियन के कोर से
झांकत बहुरिया के
मन बोलल
कब अइहें परदेसी!

बसन्त

जिनगी जब
रंग में आइल
जाने काहे
जमाना के ताज
हिल गइल।

आउर ऊपर से
बासन्ती रंग में खिलल
फूलन के क्यारी देख
लोगन के करेजा
चिढ़ के दरक गइल।

धरती पर भगवान
प्रेम के रंग में
सुरुज के चमक ले
चाँन के रस्ते
उतर अइलन।

बाकिर
जमाना के डाह
भगवानो के जरा के
राख करे खातिर
बेचैन हो उठल।

तभियो
फागुन के बेयार
आम के मोजर
टपकत महुआ
फूलन के मादक सुगंध
जइसे जलन पर
मरहम हो गइल।

पतझड़ हार गइल
आउर
बसंत जीत गइल।

रंग-बिरंग बसंत

गिर गइल पात
गुलमोहर के
पतझड़ में ।

खिल गइल
लाल टेस फूल
बसंत के आहट से।

भर गइल पेड़ गुलमोहर के
पंखुरियन से सज के।

आजुक साँझ टपक गइल लाली
सँझिया के बेला में।

चिढ़ गइल भोर रात भर लाली
नजर आई गुलमोहर के।

दिन भर पिअरी फइल रहल बा
अमलतास के फूलन के।

लाली आ पिअरी
चिढ़ावल दिन–रात
रंग बदलत सुरुज के।

भोरे टपकत महुआ कर रहल बा पीछा
फूल के मादक गंध से।

लवे–गवें सब टपकल भोर
टपकल साँझ पसरल दिन
बिसरल रात।
कट गइल जइसे
बहुरूपिया जिनगी
साँस में साँझ काटत
नीम के पेड़ तरे
गुजर गइल।

प्रेम में मिलन

अएना पर
चोंच मारत चिरई
अएना के भीतर पइसल
अपना प्रेमी से मिले खातिर
बेचैन रहे।

ओकरा ई मालूम ना रहे कि
ई मिलन
कबहुँओ ना होई।

मिलन के
फिराक में ओकर चोंच
ठोकर से
टूट गइल।

ऊ उदास
एकटक
अएना निहारत
चुपचाप
बइठ गइल।

❑ कौशल मुहब्बतपुरी, ग्राम + डाकघर-मुहब्बतपुर,
भाया -देवरिया कोठी, जिला-मुजफ्फरपुर,
पिनकोड–843120 चलभाष–9934918535

गुरविन्द्र सिंह के कविता

सगरी अकिलिया प फिर गइल पानी
गँउवा क डीह भइले पढुआ गेयानी

कामे ना आइल कुछ पोथी आ पतरी
खेती क काम भइल गरवा क फँसरी
झलके बुढ़ापा उमड़ते जवानी

भलहीं शहर जाइ जुगुती लगइते
थइली में दाम रहित मानजान पइते
बोलित पइसवा त छँटते फुटानी

आइल बिहउती मिलल नजराना
किच–किच में छिड़ गइल अजबे तराना
ग्यानी जी ढोवेंले चर–चर परानी

खेती आ नगदी के मतरा बइठावस
राति में लइकवन के अपने पढावसु
रचे लगले जिनिगी क नवका कहानी!

मिथिलेश गहमरी के दू गो ग़ज़ल

एक

नया–नया लिबास रोज उनकरा सियात बा
एहर तऽ आजो पेवने प' पेवन सटात बा !

तोहार द्वारिका भले सरग मतिन चहक गइल
हमार वृंदावन तऽ चारुओर से झुरात बा !

सुरुज के आज कान केहू फूँक देले बा जरूर
अँजोर के मुँडेर पर अन्हार मुस्कियात बा !

बताईं कइसे, केतना बा उमिर हमार घाव के
कि राहे–राहे ठेंस बाटे, डेगे–डेगे घात बा !

जशन मनत बा हरियरी के, रेह के सिवान में
नजर के हमरा दोस बा, कि अउरी कवनो बात बा !

हुजूर एगो बात बा, बुरा न लागे, तऽ कहीं
ऊ नाव आगा का बढ़ी, जे रेत में खेवात बा !

सुनात बा, कि नेह नइखे केहू से केहू के अब
ई आदमी के जात कवना आड़े–घाटे जात बा !

समय कहत बा जान लऽ, सँवाच लऽ ए 'गहमरी'
ए' मतलबी जहान में, के अइसे अब भेंटात बा !

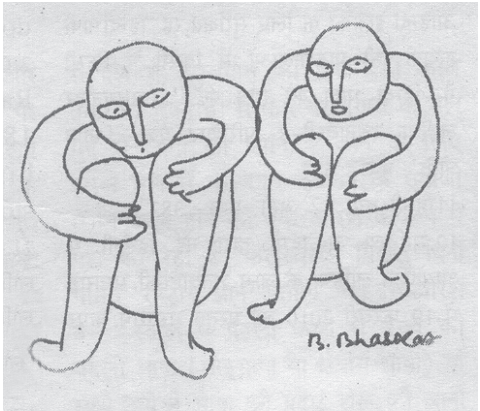

दू

सुनुग रहल केहू, केहू निंझा के बइठल बा
सुजान लोग, करेजा जरा के बइठल बा !

नजर से भेंट जो होई, त' राज खुल जाई
बता दिहीं, जे मुखौटा चढ़ा के बइठल बा !

कवन फरक पड़ी हो रहजनी से ओकरा पर
जे अपना आपके खुदहीं लुटा के बइठल बा !

तोहार बात सभा में रखी ऊ कवना तरे
सरम के मारे जे माथा नवा के बइठल बा !

जिकिर अँजोर के, एह रात में करीं केसे
चिरागे जब मुँहे करिखा लगाके बइठल बा !

नियाव केकरा से 'मिथिलेश' माँगे चल दिहलऽ
जे दुख हरत रहे, देखनी कोन्हा के बइठल बा !

❑ गहमर, गाज़ीपुर, उत्तर प्रदेश

औकात मत बताईं मालिक

बिम्मी कुँवर सिंह

भोर भिनसहरे टेसू के अम्मा के किल्ली खटकवले से ही नरेन बाबू के घर के बिहान होत रहे। बुला पनरह बरिस से उ एह घर मे चऊका बासन, झाड़ू पोछा के काम करत रहली आ अब त एह घर के उ सदस्य लेखा हो गइल रहली।

दुख-दरद, हास-हुल्लास में घर के उ सबसे बड़की हित रहली। पूजा-पाठ, काज-परोजन में उनकरो से राय-सलाह जरूरी से लिहल जात रहे। एक-एक गो हित-नात के पूरा लेखा-जोखा उनका भीरी रहत रहे। के कब आइल, कब गइल उनकरा से कुछु ना लुकाइल रहे। आ दिन प दिन उनका से मेल-मोहब्बत अउरी बढ़ते जात रहे।

ओह समय टेसू खाली एक बरीस के रहली जब उनकर बाप बिना केहू से कुछु कहले चुपचाप आसाम भाग गइले। उनकरा संगी-संगतिया के सूचना प टेसू के अम्मा उनका के जाँगर भर खोजली, पुलिस में रपट लिखवली, बाकिर कबनो फायदा ना बुझाइल त भागि के फेरा मान के पटा गइली।

बिना मरद के मेहरारू के जिनगी त बिना सिचका के केवाड़ी लेखा हो जाला, बाकिर का मजाल जे केहू उ चऊखट लांघ के उनका पजरी आ गइल होखे। राह चलत मनचलन के सोझे चप्पल उठा के लखेद लेत रहली । देह के नाव प खाली हड्डी के एगो ढाँचा भर रहे, जमुनिया रंग आ साधारने रूप रहे।

अऊर उ इहो मानत रहली कि इहे रंग रूपवा देखी के उनकर दुल्हा उनका के छोड़ के भागि गइले। दुख के पहाड़ कुछ लोगन के भीतर से खोखड़ कई देला त कुछ लोगन के जिनगी जिये खातिर उकसा देला। इहे हाल अबरी टेसू के माई के हो गइल रहे।

उनका चाल में अतना तेजी रहे कि मानो उड़त चलत बाड़ी। शुरू-शुरु में त दू-तीन गो घर में चउका बासन के काम करत रहली। बाकिर एकदिन नरेन बाबू के मेहरारू के टायफाइड हो गइल अऊर उ खटिया ध ले ली, तबे से टेसू के अम्मा बाकी सगरी घर के काम धंधा छोड़ के एही घर के हो गइली।

ओह समय घर में खाली नरेन बाबू के मेहरारू अपना दूनो बेटा संगे रहत रहली, पाँच बरिस के राकेस अऊर दूसर का दूई बरिस के संतोख। नरेन बाबू आर्मी में हवलदार रहुअन, एही से साल भर में खाली एक भा दू महीना के ही छुट्टी आवत रहुअन।

टेसू के अम्मा के बातूनी स्वभाव से नरेन बाबू के मेहरारू के मन हिल-मिल गइल रहे, ऊनकरे से उ भर मोहल्ला के हाल समाचार ले लेत रहली, आस-पड़ोस में केहू के घरे सादी-बिआह, छठियार-सतइसा होखे त नरेन बाबू के मेहरारू, टेसू के अम्मा सँगे जात रहूई ।

ऐहू से उनके बड़ा सहारा हो जात रहे । जब टेसू के अम्मा आपन काम निपटावस त ओह घरी टेसू आ संतोख संगे-संगे खेलत रहस जा। समय के पहिआ तेजी से घूमत रहे आ

अब बाल बच्चा सब भी बड़ होखत रहलन, नरेन बाबू भी रिटायर हो के घरे आ गइलन, एक दू महीना आराम कइला के बाद उ घर के बाहर बनल अपना कटरा में कपड़ा के दोकान खोल के ओही में बइठे लगलन। ऐह से उनकर मनो लाग जात रहे आ चार पइसा के आमदनी भी मिल जात रहे। जिनगी केकर एकदम सोझ धुरी प चलल बिआ, जे उनकर चलित!!

एकदिन उनकर बड़का बेटा राकेस के तबीयत बिगड़ गइल, आ ओकरा बाद तो छन्ने -दिने बिगड़त रहें, आ ठीक होखे के नाम ना लेबे। बहुत दवाई-बीरो भइल बाकिर देह कहे कि अब हम अथिर ना होखब!, पहिले घर के लोग हलुकाहे लिहल, बाकिर जब देह के दवाइओ ना सुने त भागल पराइल लोग पीजीआई में गइले।

ओजुगा मय देह के जांच भइल आ जब रिपोर्ट आइल त उ देख के मय परिवार के गोड़ तर के धरती घसक गइल, रोअन पीटन मच गइल, राकेश के जांच के रिपोर्ट आइल रहे कि उनकरा खून में कैसर बा । नरेंन बाबू के मेहरारू शिवाला में मूड़ी पटक-पटक के रोवे लगली "शंकर जी एगो लइका त कम बुद्धि के देलऽ त सबुर रहे कि दूसरका त ठीक बा नू, अब रौवे कही त कि इ कवन जनम के बदला ह प्रभू?"

टेसू के अम्मा समझा बुझा के घरे ले अइली "कि अब जवन हो गइल ओकरा के मिटका त ना सकीना जा, बुला इहे बिधी के बिधान होखी।"

घर में पूजा-पाठ, हवन-वैद, ओझइती-सोखइती के संगे-संगे राकेस के घरही राखि के इलाज होखे लागल, बाकिर अइसन रोग रहे जवना के तबाह होखे खातिर कवनो दिन साइत धराइल ना रहे। उ साले भर जीअलन , एक रात दरद से बेहाल छपिटात-छपिटात दम तूर दिहले ।

नरेन बाबू के छोट बेटा संतोख जनमते मंदबुद्धि रहअल। पलखत पावते गली मोहल्ला भा सड़क प घूमे लागस, आस-पड़ोस के लोग आ ना त टेसू के आमा ध के ले आवस ।

संतोख के अमावस लेखा भबिस के लेके नरेन बाबू भीतरे-भीतर चिंता से सुनुगत रहअल। उ दूनों बेकत के इहो फिकिर लागल रहे, कि उनकरा ना रहला प बेटा के देखभाल के करी।

गते-गत, हीत-नात में भी इ बात कह देले रहले कि कवनो गरीब-गुरबा के बेटी जेकर माली हालत ठीक ना होखे ओकरा से बे दहेज के अपना बेटा के बियाह क दिहें। धन के लालच भी देले कि उनकर बढ़ावल बेबसाय के कवनो समुझदार हाथ मिल जाएं।

नरेंन बाबू के मेहरारू अपना नइहर के एकलौती बेटी रहली। ओनियो से खेत-बधार- सम्पति मिलल रहे। माई बाबू के अकेल बिटिया रहली से गाहे-बगाहे अपना नइहर भी जातें रहली, ओह समय मय घर दुआर टेसू के अम्मा ही सम्हारत रहली।

टेसू संतोख के साथे-साथ खेलत-हसत बड़ भइली। उ संतोख के गायत्री मंत्र, हनुमान चालीसा क ख ग घ अउर ए बी सी डी बोलल सिखा देले रहली।

संतोष आम मंद बुद्धि लइकन से तनि-मनि अलगा रहअल।

जबले टेसू नगिचा रहस उ ठीक रहस, खा पी के खेलत रहस, बाकिर जइसे ही उ अपना माई संगे घरे जाएं खातिर तइयार होखस उ केहू के मान में ना आवस, दांत प दसों नोह रगर के इ-इ-इ क के चिचियाए लागस। मय समान हेने-ओने बीगे लागस, घर से बहरि भागे के कोसिस करें लागस ।

अब टेसू भी सयान हो गइल रहली ।

एह साल बारहवां के परीक्षा खूब बढ़िया नम्बर से पास क ले ले रहली, आगे ऊ बीटीसी क के अध्यापिका बनल चाहत रहली। अपना बाबूजी के ही कद काठी लेखा छोट, खूब गोर-चिट्टी रहली, नाक नक्श से नेपाली झलक आवत रहुए, कारण कि उनकर आजी नेपाल के रहुइ, मजूरी के काम करे खातिर उत्तर प्रदेश अइली अउर टेसू के दादा से बिआह क के फैजाबाद के हो गइली।

कबो- कबो जब नरेन बाबू कवनो दोसर काम में बाझल रहस भा वसूली खातिर गाँवें चल जास त दोकान के चउकी टेसू सम्हारत रहुई, अउर एकदम सटीक हिसाब मालिक के देत रहली। उनकरा काम से नरेन बाबू खूब खुश रहस। ईनाम में हर महीना कुछ ना कुछ ज़रूरी समान कबो सलवार-कमीज, सुइटर-साल, किताब-कापी, अउर सिंगार-पटार के चीज-समान कीने खातिर पइसा भी दे देत रहअल।

एक दिन भोरे भिनसहरे टेसू के अम्मा बरतन धोवते-धोवत नरेन बाबू अउर उनकरा पत्नी से टेसू के

जिनगी आ भबिस के बात करत घरी ओकरा बिआह के भी चिंता करें लगली। उ जिरह कइली कि कवनो रउरा सभे के नजर में दू पइसा कमाये वाला राजभर के परिवार होखे त टेसू के बियाह करा दिहल जाओ।

संतोख अउर टेसू ओजुगे बइठ के चाह पिअत रहे लोग। उनकर बात सुनके संतोख खिसिआइन भूत लेखा दाँत प नोह रगरे लागल, इ-इ-इ करत गरमे चाह देही प उझिल लिहले।

हाथ-गोड़ में अइँठन होखे लागल। सब केहू धर पकड़ करते बा तले,

कप उठा के उ खूब गहिराहे टेसू के आमा के लिलार प ठाय देना मरलन। दूनो मुठ्ठी मुंह में ठूँस के घुलाटी मारे लगलन। मनीप्लांट के गमला प आपन मूड़ी दसन बेर पटकले होखिहे, कपार खूने खून हो गइल रहे।

अइसन उ तब करत रहले जब उनकरा मरजी के खिलाफ कोई काम होत रहे भा उ बहुत खीस में रहत रहअल। मजे के बात रहे कि कंट्रोल भी उ टेसू से ही होत रहले। टेसू के बात में, उनकरा देह के गंध में अइसन जादू रहे, भा कि चुम्बक रहें कि उनकर भारी से भारी बउरहपन एक्के छन में थथम जात रहें।

ओह घरी टेसू उनकरा के दोसर बात में फुसला के बहुत मोश्किल से सम्हरले रहली। रात ढलान प रहे, दूनों माय बेटी खा पी के सूते खातिर अपना-अपना खटिया प चल गइल लोग। बाकिर ओह दिन संतोख खातिर टेसू के मन में प्रेम अंकुरा गइल रहें। उ अइसन महसूस करे लगली कि संतोख के बिना उनकर जिनगी अधूरा बा।

अइसही त ना नू कहल गइल बा कि परेम गली अनिहारी ऐ सखी, सोच-बूझ के हेलिहा !!

ओकर नाजुक उमिर अभी इ समुझ-बूझ ना पावत रहें कि मंदबुद्धि संगे जीवन बितावल, रेती में इनार खोदला लेखा होला। टेसू के नीन ना आवत रहे, उ घरी-घरी करवट बदलत रहली, उठ के क बेर सुराही में से पानी ढार के पिअत रहली। खटिया प गोड़ मोर के, ठुड्डी के घुटना के बीचे फंसा के बहुत देर लें बइठल सोच-विचार करत रहली, फेर अपना माई के झकझोर के जगवली,

उनकर माई आँख रगरत उठली, बहरी के चादँनी छन-छन के खिड़की से कोठारी में आवत रहे, ओही अजोरिया में उ गुड्डी के ओरी देख के बोललली

"का भइल बिटिआ?"

उ हिम्मत जुटाके एक्के साँस में कह गइली

"अम्मा हो, हम संतोख के साथे बिआह कइल चाहत बानी!"

उनकरे अम्मा के आंख फाटल के फाटल रह गइल।

"का कहत बाटू बिट्टी! दिमाग सनक गइल बा का रे ?",

टेसू रिरियात माई से जिरह कइली, "हँ रे माई, संतोख के परेम में हम सनक गइल बानी, तू एक बेर ऐह बिआह खातिर ह कह दे !!"

"नाही बिट्टी! कबो ना, लड़क बुद्धि से जिनगी के दरिआवो हेलल ना जाला। आ इ कवनो गुड्डा गुड़िहा के खेल ह का? जवन आज कइली काल्ह तोड़-फोड़ के फेक दिहल गइल, इ त सगरी जिनगी के सवाल बाटे हो बबुनी।"

"अऊर इ फूल जस देह हम पगला के हवाले क देई? नाहीं, नाहीं बिटिया, इ पाप करे से पहिले हमरे सगरो देहीं मां पीलूइ पर जाई, अउर हम नून जसि गलि जाइब। भावना में जन पड़ा बिट्टी।"

टेसू अपना माई के समुझावे के बहुत तरह से कोसिस कइली, बाकिर उनकर अम्मा एक्को बात सुने खातिर तइयार ना रहली। आ जब टेसू आपन बात एक के बाद एक रखत जात रहली त ओनकर माई उनकर सबसे नरम नस के ध लिहली आ सिहंक-सिहंक के रोवत कहली,

"तोहार बप्पा जब छोड़ के गइल रहले, तब तू एक बित्ता के रहलू बच्ची, केतनी बार कुइयाँ में कूदन खातिर डेग बढ़वनी, केतनी दफा सल्फास के गोली आचर में बान्ह के सूतल रहनी कि खा के खतम करी इ जिनगी, बाकिर बस तोहार फूल जइसन देही इयाद पर जाए, आ हम अपना के रोक लेत रहनी। हमरे जीये के तू आसरा बनलू आ हम तोहरे खातिर जीए-कमाए लगनी।

हम चहतीं त बहुते भतार मिल जाएत हमके बिट्टी, केतने लार टपकावत मनई के जोबान हम अपना गारी के बिखधार से काट घलनी। बाकिर तोहरा भबिस खातिर हम अईसन कदम ना उठवनी, अऊर अब जब तोहार जिनगी बनावे के बखत आ गइल त तन्नी-मन्नी सुख-सुविधा खातिर पगले से नाही बिआहब बच्ची, सुन ल!" दूनों माई बेटी के कवनो तरीका से रोवते-सिसकते रात बीतल। भोरे किरिन फूटते अन्हुआइल भागत टेसू के अम्मा नरेन बाबू के घरे चहुँच गइली अउर सिसिकत-सुबुकत रात के मय बात उ दूनों बेकत से कह गइली। ओकर बाति सुन के दूनों

मरद-मेहरारू के मुँहे बवा गइल, ऊ दूनो जना भकुआ के एक दूसरा के ताके लागल लोग।

उ नरेन बाबू से जिरह करत रहे कि टेसू के समुझाईं कि जिनगी अतना छोट नइखे नू कि केकरो हाथ ध के चल दिहल जाओ, बाकिर हेने त नरेन बाबू के मन के मुराद भगवान जी पूरा करत रहुअन। मंदबुद्धि बेटा के भविष्य सच्चा अउर समझदार हाथ मे दिहल कवन माई-बाप ना चाहीं।

अपना ख्याल से जब नरेश बाबू बाहिर अइले त, गहिराहे बात टेसू के अम्मा से बोलले

"त का कमी बा ए घर में, ऐश-आराम, सुख-सुविधा मय त मिली तहरा बेटी के, एक्के छन में धूर से उठ के मखमल प बइठे के सौभाग मिल जाई। जवन ओकरा के एह घर में मिली उ त तू क गो जनमों में भी ना दे पइबू !"
पानी से भींजल हाथ के अपना आँचर में पोछत उ नरेन बाबू के गोड़तर आ के धम्म से बइठ गइल, 'साहेब इ का कहत बानी रउरा !! आपन जाँगर हम खटवनी, चौका-बासन, गोबर-पाथन कइनी बाकिर टेसू बनी के कौनो कमी नाहि होखे दिहनी, अऊर अब ऐशो-आराम बदे पागल सँगे बिआह देईं! नाही साहेब ई ना होई, रउरे समुझा सकत हई हमरी बबुनी के....!
हम रउरा गोड़ प गिरत बानी।
टेसू के माई के मुँह से अपना बेटा के पगला सम्बोधन सुनके आग बबूला हो गइले ऊ...
'तू संतोख के पागल कह बाड़ू, हम तोहरा के अपना घर के सदस्य बना के रखनी। जब तब एडवांस में जतना रोपया पइसा मँगलू उ तोहरा के देत गइनी, कबो हिसाब ना पूछनी। टेसू के स्कूल में नाँव लिखवा के पढ़ाई करवनी, कबो कापी किताब, फीस आ डरेस के कमी ना होंखे दिहनी। सुख सुविधा के मय चीज तोहरे घरे मे सजा दिहनी जा। ओकर नेकी तू अइसन देबू हम सोचले ना रहनी। संतोख के बेटा बोलत रहलू बाकिर तू त बिसधरिन निकललिस रे, ढोंगी औरत, आज आपन बेटी की बारी आइल त हमार बेटा पागल हो गइल!! तू छोट लोगन के इहे कमी होला, कि तनिके चर्बी चढ़ल ना कि अपनी अवकात बिसार देलू जा...।'

अतना बात सुनते एक्के झटका में दहाड़ मारके उठ ठाड़ भइली टेसू के अम्मा 'ना साहेब ना, अवकात के त बात रउरा करब मत, केतना बड़ आदमी हई रउरा हम अबहीं बताबत बानी, जब रउरा फऊज की नोकरी करत रहीं, तब से रउरे घर के हम सम्भारे हई, जब मेम साहेब बेमार हो जात रहली तब चूल्हा,चौका, बासन के सगे-सगे दूनो बच्चा लोगन का गू मूत भी हमही साफ करत रहे। कतनो जर-बोखार में सरीर तपत रहे बाकिर कभो काम करे से अपन जागर नाही चोरावत रहनी, अपनी बिट्टी अऊर राकेश, संतोख मा एक्को रत्ती कौनो फरक ना कइनी...। नमक खइले रहनी राउर त अब ले जीभ पर कील ठोकले रहनी साहेब, अऊर ई देवी जइसन मेम साहेब संगे तोहरे चलते दगा क दिहनी...! जौन एडवांस में पईसा देबे के बात रउरा कइनी ह त सुनी साहेब... ओह एडवांस पइसा से त बेसी हम रउरे देही के आगि बुताये रहे, जब मेम साहेब अपने नइहर जात रहली। अऊर कवन गरंटी बा कि अपने पगले से हमरी टेसू के बियाह रउरा कौनो दूसरे मकसद से करत बानी, नाहीं साहेब नाही हमर औकात रउरा मत बताईं।"

पहिले अपने गिरेबान में झाँक लीं कि रउरा मेम साहेब संगे केतना वफादार हईं!! हम जात हई अपनी बिट्टी के लेके दूसरे सहर में, ओकरे भाग मा जौन होई उ मंजूर रही हमके, अब एजुग हम एक मिनिट नाही रुकब...।'

बिजुरी से भी तेज वेग से उ घर के चौखट लाँघ के उधिआत भागत रहें, तले सोझा से आवत टेसू के ऊपर ओकर नजर गइल उ ओकर हाथ कस के धइ के दूर निकल गइल, बहुत दूर!! अंधाधुंध भागत,बेटी के घसीटत, पागल मतिन भागल जात रहें...। जहाँ केहू टेसू अउर ओकरी अम्मा के औकात ना बता सके...।

पता
Mrs Bimmi Singh DD 14, TNPHC flats, Police quarters, Melakottaiyur , Chennai, Tamilnadu 600127
Mobile number – 8160492100

"आजुओ"

शारदा पाण्डेय

महाभारत युद्ध के छत्तीस साल बाद पहिली बेर कृष्ण के मन अइसन अनमनाइल कि ऊ अपना के असहज पवलन। ई का हो गइल। अपना खातिर कबो ना सोच के जवना लोगन खातिर पूरा जिनिगी समर्पित का दिहनी, उनुका अंतर्मन के गहराई में अइसन गिरह बन्हाइल ई कबो हमरा विचारों में ना आइल। सोचत–सोचत कृष्ण हिरण्यकपिला नदी के किनारा पर अइलन। नदी स्वभाव वश बहत रहल, लहर आवेंसँ–जासन; ऊपर–नीचे वर्तुला–कार लहरात जिनिगी के गीत गावत। बीच में टूटत–बनत अनायास थरथरात, उठत–गिरत पुलिन के ओर बढ़त, कर्म के निरंतरता के गाथा कहत। कृष्ण तन्मय होत गइलन अपना जीवन कृतित्व के धार में बहुत कब तट से तनी दूर खड़ा एगो गाढ अश्वत्थ के नगिचा आ गइलन, उनुका बुझइबे ना कइल। फेड के मरकती पतइन के उल्लास उनुका सामगान नियर आमंत्रण लागल। ऊ आइ के एगो मोत सोर पर बइठि गइलन) उनुकर दृष्टि एकबेर चारो ओर घूमि गइल। बिल्व, आम्र आ अर्जुन के बड़ वृक्ष तनी अवेरू टूर, सघन छायादार वट वृक्ष, जवना में लाल–लाल फलो झिलमिला जात रहल पवन के झोंका से। बुझाय जइसे चिनगारी चमकत होखे। ऊ फेरू तनी अपना अवरु समीप देखलन तऽ एकाध मदार आ पलाशो लउकल। जहाँ बइठल रहलन, उनुका से तनिकिये अंतर से लहलहात, झूमत इ–चार वृन्दो अपना सुगंध से वातावरण के पावन बनावत रहली।

आजु बलदाऊ नइखन। हमरा ले पहिलही चलि गइलन, कर्त्तव्य के पालन करे में तत्पर होके। जाए के तऽ सभे के बा? जे एजू मृत्यु लोक में आइल बा, ऊ मृत्यु से कइसे बाँची? ऊ तऽ मृत्यु के हाथ के कंदुक हऽ। बलराम भइया हमरा पर खिसिआइ के कहलन, "कृष्ण! तूँ उचित ना कइलऽ। तूँ जानत रहलऽ कि दुर्योधन हमार प्रिय शिष्य हऽ। ओकरा नियर गदाधारी एह युग में हमरा अलावा केहू अवरू नइखे। हम सुभद्रा के परिणय आशीर्वाद सहित ओकरे से करे के चाहत रहनीं। पारिवारिक संबंध समृद्ध होइत। स्थिर राज सुख रहित। बाकिर तूँ तऽ अपना सखा से अपना बहिन के हरण करवा दिहलऽ, कि ई क्षत्रियोचित विवाह कहाई। कुंती फुआ के संगे हमनियो के संबंध अवरू आत्मीय हो गइल। एह पर हम चुपा गइनी एह संबंध में दोहरा घनत्व बा। बाकिर युद्ध के अंत में धोखा से युद्ध नियम के विपरीत दुर्योधन का जाँघ पर आघात कइल कवनो तरह से न्यायोचित ना कहाई; तूँ ऊहो करववलऽ भीम के प्रतिज्ञा तहरा खातिर अधिका महत्वपूर्ण रहल। हम जानऽ तानी एह कुल्ह के पीछे का रहल? द्वौपदी के प्रति तहार आपन भाव।" ऊ निर्निवेश देखत रहि गइलन।

कृष्ण के मुँह पर क्षण भर खातिर एगो साँझ के झाँई आइल, ऊ झटक दिहले नीति के प्रयोग सही समय पर कइल पक्षपात ना कहाई। बाकिर द्रोपदी के तिरछा आँखि कइके दोसरा ओर क्षितिज के ओर देखल उनुका ना भुलाइल। जइसे चारों ओर से कई गो कोमल काँट रहि–रहि के अंतर्तम में गड़े लागता। पाँच भाइन में बँटाइल कवना नारी के नीक आ सम्माननीय लागी। जब कि समाज में सती आ पतिव्रता के एगो मानदण्ड बा। कृष्ण के कुन्ती के असीम गोपनीय पीड़ा आ कुल्ही पुत्रन के लुब्ध भावपूर्ण दृष्टि के भाषा समुझ के नकरला के विवशता अइसन असम्भव लागल कि ऊ द्रुपदजा के ओर आँखि ना उठा के

मिश्रान्न के स्वीकृति नीयर आदेश के टाले के कवनो उतजोग ना कइलन। समय–समय पर द्रोपदी आपन क्षोभ उनुका आगा खुल के व्यक्त कइले बाड़ी। द्रोपदी के ई गम्भीर व्यथा उनुका के बान्हत गइल बिआ। कृष्ण के आँरिव में ऊहो वेदना आर्द्र बनि के उतरा गइल जब ऊ कृष्ण स्वयं सुभद्रा के सपत्नी रूप में द्रोपदी के जीवन में प्रवेश करवलन सखा अर्जुन के प्रति जदि उनुका मन में अतिरिक्त मोह रहल तऽ द्रोपदी के प्रति आकर्षण ना असीम विश्वास। पांचाली पाँच पति के जइसे साधि लिहली ओइसे अवरु कवनो नारी से सम्भव ना रहल। उनुकर वास्तविक प्राप्तव्य तऽ अर्जुने रहलन बाकिर। ऊ पारिवारिक शांति, संबंध के प्रगाढ़ता अ माता– सासु के प्रति मर्यादा पालन के हिमालयी उदाहरण रखली। ऊ ईहो जानत रहली कि धनन्जय के मन भलहीं द्रोपदी में आसक्ति के सीमा तक डूबल होखो बाकिर नारी के प्रति आकर्षण कम ना रहल। चिदांगदा, उलूपी के साहचर्य एकर साक्षी रहल। एही से कृष्ण का एह चञ्चलता के बान्हे खातिर अंतिम उपाय अपना भगिनी सुभद्रा के उनुका के सौंप के प्रयास कइलन। जवन सफल रहल। याज्ञसेनी के झटका तऽ लागल बाकिर ऊ कृष्ण के सखी रहली उनुकर मन्तब्य ऊ समुझ लिहली कि अर्जुन के मन के थिराये खातिर अतना बड़ त्याग कइले। द्रोपदी के कुल्ही पुत्रन के ननिआउर मिलल। पालन–पोषण विश्वस्त हाथ में गइल नाहीं त जीवन भर वनवास झेलत द्रोपदी का करती? कसक ईहे रहल कि ऊ कृष्ण के बान्धवी बनि के रहि गइली। नील– मणि के रंग वाली द्रोपदी कृष्णा कहइली, बाकिर कृष्ण के मन जानेला कि कृष्ण रंग में रंगल पांचाली कृष्णा कब के आ कइसे हो गइली? कि उनका मन के कुल्ही तार कृष्ण में समा गइल। कृष्ण के साँस कृष्णा के टेर के अनुधावक बनि गइल। कृष्ण एह भाव के आवते एगो दीघे निःश्वास लिहले। उनुका आँखि में नीला आकाश छा गइल।

ओह आकाश के बिस्तार में कब गुडाकेश अर्जुन आत्म रूप सखा, भ्राता बनल आके खड़ा हो गइले कि कृष्ण के रोम–रोम जइसे अपना भुजपाश में बान्हे खातिर आतुर हो गइल। बाकिर आजु के कृष्ण नाऽ त भावाकुल कृष्ण रहले ना महाभारत आजु कृष्ण गीता गायक केशव–मधुसूदन। आजु अपना आँखि के आगा अपना यादव वंश के विनाश के दर्शक कृष्ण रहले, जहाँ ऊ केवल जीवन के उदासीनता आ नियति के कार्य कलाप के साक्षी रहलन। अइसन मानसिक स्थिति में उनका मन परिगइल कि अर्जुन अनुकर कुल्ही सहयोग विस्मृत कइ के आहत आ आरोपी स्वर में कहलन कि, 'कृष्ण तूँ आपन आत्मरूप सखा रहत हमरा के 'भ्रातृ–हंता' काहे बनवलऽ? हमार हृदय एकरा खातिर कबो क्षमा ना करी।" कृष्ण अपना भीतर उतरत, सम के आरोप के गिरह सझुरावत मन में भावन के टकराहट सुनत अनासे ओही सोर–पर आपन सिर– राखि के, करवट लेइ के ओढँग गइलन। एह घरी उनुका आंतरिक चेतना में कुल्ही स्थिति आ घटना स्पष्ट चित्रनियर स्थिर हो गइल। इहनी लोगन के प्रति भावात्मक अनुरोध के कारण कृष्ण कबो आपन हानि–लाभ, यश–अपयश, कलंक के बारे में सोचबे ना कइलन। बस कर्त्तव्य, जवन उचित लागल करत गइलन। कुंती के सेवा से प्रसन्न ऋषि दुर्वासा उनुका के 'देवावाहन' मंत्र देके देवपुत्र पाने के वरदान दिहलन, ई घटना लोकश्रुति बनि गइल रहल। बहुत सम्भव रहल कि ऋषि भविष्य द्रष्टा रहलन एही से ऊ कुन्ती के जीवन के सार्थकता देबे वाला मंत्र दिहलन। भीष्म पितामह के आगा वाली घटना के सूचना भा भनक निश्चिते मिलल होई, जेकर–तार ऊ कर्ण के रूप गुण के देखि के रंगभूमि में कुन्ती के संज्ञा शून्यता से जोड़ लेले होइहें। हम तऽ कर्ण के स्वर्णिम कांति, केश के पाछा से झाँकत स्वर्णिम कुण्डल के आभा, जवना के कर्ण प्रयास पूर्वक छिपा के राखत रहलन देखनी तबे पहिली बेर चँउकि गइल रहनी। एकरा बाद एक बेर– शस्त्राभ्यास करत कर्ण के चरण पर आँखि परल तर कुन्ती फुआ के चरण से पूर्ण समरूपता लउकल। हम आश्वस्त हो गइनी कि ईहे फुआ के पहिला अवांछित पुत्र होई, जवन मंत्र के सिद्ध प्रभाव के प्रमाण बनल होई। बाकिर केहू से कबो कुछ ना कहनी। फुआ के मुख के अचल गम्भीरता के कारण इहो हो सकेला ई हमरा भान भइल।

कर्ण अर्जुन में धनुष विद्या के प्रवीणता कबो प्रतिद्वंद्विता के सीमा से हटि के प्रतिहिंसा में बदल जात रहे। द्रोपदी स्वयम्बर के समय से तऽ इ लोक में उजागर हो गइल। हमार मन सदा फुआ के परिवार के संगे रहे। ओहू में आयु के आ भावात्मकता के कारण अर्जुन हमार सखा; लोग कहे कि हमनी के रूप–रंग– में भी कुछ समानता रहे। स्वयम्बर के समय से मिश्रान्न बनला के घटना से द्रोपदी कृष्णा बनि गइली। उनुकरा योग–क्षेम से बन्हा गइल। कर्ण के लहक जब द्रोपदी खातिर अपशब्द तक आइल तऽ अनजानही ओकरा प्रति मन क्षोभ से भरि गइल; जवन चक्रव्यूह में भाञ्जा अभिमन्यु के अमानुषिक हत्या से जुड़ि के क्रोध में परिवर्तित हो गइल। एकर प्रतिक्रिया भइल कि युद्ध के प्रारंभ में हम कर्ण के उनुका जन्म आ भाता कुंती के

संबंध बताई के दुर्बल बना दिहनी। इहे ना कीचड़ में फँसल पहिया निकालत समय अर्जुन के उत्तेजित कइनी निहत्था कर्ण पर प्रहार कऽइ के अभिमन्यु के निर्मम बध के बदला लेबे खातिर। नियति आ गुरु परशुराम के शापो एह में सहायक भइल। कर्ण घायल होके युद्धभूमि में गिर गइलन। कहलन, 'कृष्ण! तहार बड़ भाई हमहूँ रहनी। बाकिर – तहरा प्रेम के ना क्रोध के पात्र भइनी।'

तब ले प्रतिहिंसा में जरत प्राण तनी ठंडा गइल रहल। कहनी, "कर्ण! कर्म के परिणाम तऽ सभ के भोगे के परेला। ओकरा से के आ कइसे बाँची? बाकिर तहार दानधर्मिता, सखा भाव, प्रेम, उदारता आ कर्त्तव्य–मर्यादा निष्ठा के प्रति हमरा मन में असीम सम्मान बा।" कर्ण हाथ जोरलन, उनुकर आँखि लोरिआ गइल। कहलस, "कृष्ण! हमरा चिताग्नि के समय तूँ अवश्य रहिहऽ। हमरा आत्मा के संतोष होई।"

सोचत–सोचत कृष्ण के मन आर्द्र हो गइल। तटस्थता व्यक्ति के सच्चाई के आगा खड़ा करि देले। उनुकर मन कर्ण के प्रति दया, ममता, आदर से भरि गइल कि ऊहे ना उनुकर जननी तक उनुका के दुर्बल बनावे में, पाँचो पाण्डव के सुरक्षित करे खातिर युद्ध के समय जाके उनुका के आपन पहिल बेटा कहली आ पाण्डवन के उनुकर छोट भाई बता के रक्षा के बचन लेबे में संकोच ना कइली। इहाँ तक लालच दिहली कि "तूँ दुर्योधन के साथ छोड़ के आ जा तऽ युद्ध समाप्तो हो जाई, तहार सहयोग ना रहला के कारण; आ द्रोपदी तहरो प्रति समर्पित हो जइहें।"

कर्ण के करेजा में तीर जइसन लागल। उनुकर मन टूट गइल कि जन्म होते उनुका के नदी में बहा देबे वाली महतारी उनुका लगे वात्सल्य के चलते नइखी आइल। आजुओ ऊ संबंध–कथन से उनुका भावुक धारायल मन के दुर्बल बनावे आ संवैधानिक पुत्रन के जीवन के सुरक्षा देबे के भीख माँगे आइल बाड़ी। द्रोपदी आजुओ उनुका दृष्टि में भिक्षान्य बाड़ी। कर्ण के मन में द्रोपदी के प्रति कवनो आकर्षण ना रहल। ऊ तऽ स्वयम्बर में मत्स्यवेध कऽइ के अपना के योग्य प्रखर ध नुर्धर सिद्ध करे के चाहत रहले। पुरुषार्थ से भाग्य–लिपि के पाछा करे के इच्छा रहल। बाकिर भरल समाज में पाञ्चाली उनुका जाति के उछाल के उनुका के प्रतियोगिता से बाहर कइ के अपमानित कऽ दिहली। कर्ण एह–घाव के दंश जीवन भर झेलले।

कृष्ण के मन में चिन्तन के द्वन्द्व उभरल कि हम तऽ जीवन भर समय–समय पर दिग्भ्रमित हो जाए वाला अर्जुन के सधले रहनी, उनुका के सफलता के सोपान तक पहुँचवनी। यश के आकाश तक समर्पित कइनी तबो अर्जुन के मन में एगो फाँस गड़ले रहि गइल। का ऊ बिना हमरा सहारा के कर्ण के जीति सकत रहलन? उनुका के दोसर अवसर कब मिलित? अर्जुन के तुलना में कर्ण अधिका विवेकशील, दृढनिश्चयी आ सम्मुख प्राप्त स्थिति के चीन्हे में समर्थ रहलन। प्रमाण बा कि ऊ कुन्ती के ओर से द्रोपदी के दान के प्रबल प्रलोभनों के बाद पारिवारिक, सामाजिक स्वीकृति के जटिलता अनुभव कइले कि स्वीकृति दिहलो पर ऊ, पृथा के कारण पार्थ कहइतन बाकिर पाण्डव ना। काहें कि ऊ वैधानिक पुत्र तबो ना रहितन। पाण्डु के नाँव उनुकर अभिधान ना रहित। ई स्थिति प्रवाद के कारण, मित्र के संगे विश्वासघात के उदाहरण के मानक बनित; सम्मान के आधार ना। ई सोचते कृष्ण अनासे ओह आत्मलयता के स्थिति में भी कर्ण के प्रति नत मस्तक हो गइलन। हृदय प्रकाश से भरि गइल। मन ग्रंथिहीन हो गइल।

तबे उनुका बुझाइल कि उनुका गोड़ में अइसन तीक्ष्ण काँट चुभि गइल कि चिहुँकि गइल। आँखि खुल गइलन। चेतना बहि आइल। उनुका चरण में एगो तीर केहू मारि देले रहल आ अब घाव से रक्त स्त्राव होत रहे। उठ बइठे के मन ना भइल। ऊ देखलन एगो व्याध हाँफत दउरल आवता। उ लगे आवते कृष्ण के देखलस। चरण से बहत रक्त के देखलस। कृष्ण के चीन्हि के पश्चाता से करुण–क्रन्दन करे लागल। ओकरा आँखि में भय, पश्चाताप आ अइसन कातरता भरत रहल कि कृष्ण– के देव स्वरूप जागृत भइल। ऊ अभय दान दिहलन। ऊ रोवत क्षमाप्रार्थी व्यक्ति बोलल– "महाराज दूर से वृक्ष के ओट के कारण हम समुझ ना पवनी। पीताम्बर, चरण के नीला अरुण छवि कुल्ह मिला के हमरा मृग के भ्रम, भइल आ ई अपराध हो गइल। हम जरा नाँव के व्याध हईं हमार जीवन लेके हमरा के अपराध मुक्त करी।" कृष्ण विमोहक मुस्कान से ओकरा के आश्वस्त करत कहलन, "जरा! तूँ तऽ हमरा के ग्रंथि हीन करे अहलऽ। प्रभु राम तऽ जान बूझि के फेड़न के ओट से बालि के ऊपर तीर चलवलन, जबकि तूँ भ्रमवश तीर मरलऽ। ई तहार जातिगत पावना रहल। ई अपराध ना हऽ। तूँ निरपराध–बाड़ऽ। अब तूँ शीघ्रता से एहजू से चलि जा। विलम्ब मत करऽ। हम आजुओ अपना के सर्वसमर्थ अमर बूझि के भीतरे–भीतर जोहत रहनी। बाकिर जरा तूँ आइ के हमार नियति समुझा दिहलऽ। अब जा ईहे यथार्थ हऽ।" कहि के कृष्ण कमल–नेत्र के निमीलित कऽ लिहले ।

वृक्षन पर पक्षियन के कोलाहल बढ़ि गइल। सूर्य भगवान तनी ठहर गइलन स्तब्ध होके। हिरण्य कपिला नदी ओइसहीं बहत रहे।

142, **बाघम्बरी गृहयोजना, भारद्वाजपुरम्, प्रयागराज**

जागल रहिहऽ

दिवाकर प्रसाद तिवारी

अपनी जवानी में झपटिया कीर्तन पार्टी क मुखिया रहल। कीर्तन के अलावें कहीं कथा वार्ता प्रवचन होखे त ऊ ओहूजा बिना बोलवले पहुंचि जा। बीच–बीच में कहत रहे–– 'वाह रे भगवनऊ! तू का से का क दिहलअ।' ई ओकर तकिया कलाम रहल। बाकिर सुनल सुनावल बाति पर ऊ मन में तर्को बितर्क करे। अंग्रेजी की कारन ऊ हाई स्कूल फेल रहे। ओहि दिन ऊ राति खां कीर्तन क के दीक्षित गाँव से लौटत रहल। भादो क अन्हरिया राति, झिमीर झिमीर झींसी परत रहे। ओ साल सूखा पड़ल रहे। बरखा खातिर गाँव गाँव में कीर्तन होखे आ लरिका कुलि माटी में लोटि लोटि के गाँवे सन– 'कांच कचइटी पियरी माटी मेघा सारे पानी दे।' गाँव की लग्गे वाली, धुन्नी मिसिर की बारी के कोने वाला इनार में मेघा कुदल। छप्प क आवाज आइल। बाकिर झपटिया सोचलसि 'अब त गाँव की लग्गे बानी, भूत सारे का बिगारी!'

घरे पहुँचि के झपटिया जब खटिया पर ओठगंल त ओकरी मन में तरह–तरह का सवाल ऊधम मचावल शुरू कइलें सन् –– 'कागभूसुंडी जी कौवा होके एतना ज्ञानी कइसे हो गइलें? हनुमान जी वानर होके कइसे उड़े लगनअ? कृष्ण जी लरिका होके अपनी संवसे मामा के कइसे मारि दीहलें? का ममवा से आँटल होइहें? नरसिंह जी प्रहलाद के बचावे खातिर खंभा में से कइसे निकरि अइलें? खंभा में केहू कइसे रहि सकेला?' फेरू अपनिये जवाबो सोचलसि–– 'पंडी जी लोग कहेला कि ये लोग में दैवी शक्ति होला। हो सकेला ई साँच होखे। हम जो तरे सोचब त हमके पाप लागी आ भगवान अनराज हो जइहें। एसे ई कुलि बाति मानिए लिहले में भलाई बा। केहू से पूछला पर लोग कहे लागेला की तोर कीर्तन कथा वार्ता कहल सूनल कुलि बेकार बा। ते ढोंगी हवे। डर लगले पर झुट्ठे हनुमान चालीसा पढ़ेले। हे मन, चुप्पे रहले क कार बा। सब मानता त हमरो मनले में कवन हर्ज बा?' झपटिया सूति गईल।

ई 70–80 बरिस पहिले क बाति ह। बड़की बारी दू कोस में फइलल रहे। कुलि आम ही के फेंड़ रहलें। एतना गज्झिन की दिनवे में अन्हार हो जा। ओकरी बाद कटत कटत, खेत बनला की बादो, आधा कोस ले बारी रहि गइल। झपटिया बरहज से बजारि क के सांझि खां लौटत रहे। कोस भर क रस्ता रहे। जइसन ओकर नाव झपटी ओइसने ओकर चालि रहे। बिलारि, कुक्कुर, बानर, साही, साँप जंहवे देखे झपटि के मारे बाकिर भीतर से किछु डेरइबो करे। अगहन क दूबर दिन, पाँच बजे की बादे मुन्हार हो जा। झपटिया धोती खुठिया के हाली हाली चले लागल। सोचलसि जल्दी से कासाकुटी पर पहुँचि जाईं। ओकरी आगे डर ना रही। बीच बारी में पहुँचल तले पीछे का ओर से धम्म क आवाज सुनाईल। झपटिया मानि लिहलसि कि हो न हो, ई भूते ह।' ऊ लिलाजोर से भागल। के पीछे का ओर ताके? बारी की बहरा आवत आवत ऊ ढेलार खेत्ते में ढीमिला गइल। धोती फाटि गइल। ठेहुना छिला गइल। कवनो तरे हांफत–हांफत गाँवें पहुँचलसि। मुँहामुँही बाति गाँव में फइल

गइल कि झपटिया के भूत लोटारि लोटारि के मरले बा। रातिये क ओझा सोखा क भेंड़वारि लागि गइल। झार फूँक होखे लागल।

ओही गाँव क सुदर्शन इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में पढ़ि के आईएएस, पीसीएस क तइयारी करत रहलें। ऊ फिजिक्स में एमएससी क चुकल रहलें। गाँव में उनकर शोहरत रहे की ऊ सबसे गियनगर बानें। ऊ देश दुनिया क कुलि बाति जानेलें। इंटर, बी ए में पढ़े वाला लइका उनके घेरि के पूछलें सन– 'भइया ई बताईं कि भूत–प्रेत कयिसन होलें, कँहवा रहेलें, का खालें पियेलें?' सुदर्शन कहलें कि 'ए भाई! जुग जमाना एतना आगे बढ़ि गइल, विज्ञान एतना आगे बढ़ि गइल, लोग चनरमा पर जाता, मंगलो पर गइले क तयियारी बा, मेडिकल साइंस एतना आगे बढ़ि गइल बा, तब्बो लोग भूत प्रेत चुड़ैल डाइन मानऽ ता, आ डेराता, सोखा ओझा के चक्कर में परि जाता। साँच पूछलऽ त हम ई कुलि ना मानीलें। तनी समुझे के चाहीं, झपटिया के हमहूँ देखनी हं आ ओसे कुलि बाति पूछले जनले क कोशिश कइलीं हं। कुछ अक्क बक्क बोलत रहल ह, बोखारे से धुत्त रहल ह। हमरा ई बुझाता की बारी में फेंड़ें पर से अपने में लड़त लड़त कवनो बानर नीचे कुदल होई, भा कवनो सुक्खल मोटि डाँढ़ि टूटि के गिरल होई। झपटिया बूझले होई कि कवनो भूत कुदल बा। तोहन लोगन भुला गयीलअ का? एही तरे दू अढ़ाई महीना पहिले रामेश्वर भाई क मेहरारू (राखी भउजी) भिनुसारे लवटे गइल रहली त बंसवाड़ी में से सीटी क आवाज सुनि के भगली आ अपनिये लुग्गा में अझुरा के गिरि परली। लुग्गा में कत्तो कत्तो गंदा लागि गइल। भागि के घरे आके कहली कि चुरइलि पोकिअवले रहलि ह आ पकरि के कहलसि ह कि आव तोहके बुकवा लगा दीं। ऊहे हमरी देही पर गंदा लगा दिहले बा। मेहरारू लइकिनी मिलि के उनके खूबे नहवावल लोग। ऊ बोखरिया गइली। सोखा बोलावल गइलें। सोखा के देखते चिल्लाये लगली– 'भाग भाग, हम केहू के छोड़बि ना। आपन लोग लइका सबके खाइबि चबाइबि। उनकर लइका लइकनी डरन भागि के आन घरे चलि गइलें। तपेसर सोखा उनकी खाने में पीपरे क ठूंसा लगाके कुछ बुदबुदात उनके मूँहे पर फुकलें आ भउजी से डाँटि के पूछलें–– बोल, छोड़बे कि ना? छोड़बे कि ना? जहवां से आइलि बाड़े ऊंहवाँ लवटि के जइबे कि ना?' भूखल पियासल भउजी दरियें लोटा गइली। धीरे से बोललीं–– 'छोड़ि देब। ई रोज–रोज कहति रहलि ह कि कईसन चुरइल, हम ना डेराइलें। एही से एके धइली हं। अब जा तानी।' एतना कुलि कहिके सुदर्शन कहलें कि ये भाई! ई कुलि मन क बहम ह। चुरइल ऊरइल ना होली सन। टोना टोटका कुछु ना होला। पछीमही बेयारि चलति बा। जब ऊ बंसवारी के भीतर से चलेले त सी सी क महीन सीटी अइसन अवाज होला। ओके सुनि के मेहरारू लोग बुझेला कि चुरइलि सीटी बजावतिया। अब ऊ हमके धरी। पहिलही से ओ लोग का मन में बइठि गइल बा कि चुरइल डाईन होली सन आ पकरि के बुकवा लगावेलिसन। ई अर्द्धचेतन में बइठल बाति क नतीजा ह। देखत नईख लोग कि जस जस बारी बंसवारी कटत जाति बाड़ी सन तस तस भूत प्रेत चुरइल डाइन भागत जात बाड़ी सन। ना त पहिले अकसरहां सुने के मिले कि पकवा इनार के फेंड़े पर क भूत, भा पूरबी बारी के मोटका फेंड़ें पर क नेटुआ फलाने के ध के पटकि देले बा, कांहे कि ऊ सुरती बना के ओके ना दिहलें, अपनिये खा लिहलें। उनुके चाहत रहे कि सुरती बना के तनी सा ओकरी खातिर नीचे गिरा दिहले रहतें। एतने नाही, अबहिनों ई माने वाला लोग बा कि लरिकाई भा जवानी में मरल फलाने क आत्मा परेत हो गईल, बरम हो गइल बा। ऊ कहता कि जबले हमके थान ना दियाई हम घर खानदान में केहू के चौन से ना रहे देब। अब रहि गइल बाति कि आत्मा होले कि नाहीं। एपर उपनिषद आ गीता में ढेर कुलि कहल गइल बा बाकिर एहू पर वैज्ञानिक लोग खोजबीन करता। ओ लोग क कहनाम ई बा कि हो सकेला आत्मा होखे बाकिर ई पराविज्ञान (पैरा साइंस) क विषय ह। अबहिन कुछु कहल ना जा सकेला। एकरी अलावे इहो सोचे के चाहीं कि आखिर नौका जमाना के बड़का बड़का शहरियन में भूत प्रेत चुड़ैल काहे ना उपटेली? काली माई मिलियो जां त बरम बाबा, डीह बाबा ना मिलेलें।'

झपटिया वाली घटना के बीतले छव महीना हो गइल रहे। चैत बैसाख क महीना आ गइल। एक दिन दुपहरिया में सुरिन्दर क भैने (भांजी) रिंकिया आध कोस पर जूनियर हाई स्कूल से इम्तिहान दे के लौटति रहे। रहता में, सुनसान में, दू ठो जबर झंखाड़ आमे क फेंड़ रहने सन। जोर से पछुआ झोरले रहे। ओ के लूह लागि गईल आ ऊ घरे आवत आवत डेरा के कांपे लगलसि। बोखारे से बुत्त हो गइलि। ओकरी मुँहे से बोली ना निकले। ओकर लाल मुँह देखि के मामी कहली–– 'बस

कर! एके त भूत बेयारि चपेटि लेले बा।' सुदर्शन बगल में अपनी घरही रहलें। मामी जा के उनसे कहली–– 'ए बाबू, कवनो झरवइया बोला देतीं, रिंकिया के भूत ध लेले बा।' ई सुनते ऊ हंसि परलें आ कहलें कि ठीक बा। हमहूँ एकर मंतर सीखि ले ले बानी। अब्बे चलि के झारि देत बानी। ऊ सोचे लगलें–'भूत प्रेत के बहम क मनोवैज्ञानिक कारन भी होला। जब मनोबल कमजोर हो जाला त एह तरह क बहम अउरी जोर मारेला। ऊ रिंकिया के मामी से दू ठो लवंग ले के गायत्री मंत्र पढ़ि के झारि दिहलें आ रिंकिया से कहलें कि हई लवंग खा के पानी पी ले।' ओकरी मामी से कहलें कि एके एक गिलास पानी में नींबू चीनी नमक क घोल बनाके पिया दीह। भूत भागि जाई।' आ सचहूं भूत भागि गइल।

तपेसर सोखा क छोट भाई नगेसर सरकारी सर्वेक्षण विभाग में चपरासी रहलें। जंगल पहाड़ झाड़ झंखाड़ वाला इलाकन में अपनी साहब के साथे रहि के उनके नोकरी करे के परे। जूनि पर ठीक से खयिला पियला क इंतजाम ना हो पावे। ऊ सुखि के चुकाटी होत गइलें। छुट्टी लेके गाँवे चलि अइलें आ बेमारी क दरखास भेजि भेजि के आपन छुट्टी बढ़ावत गइलें। जब तनि रेंगरा गइलें त सोचलें कि ससुरारी से हो आईं, ओहिजा से बड़ी बोलाहट बा। जेठ क तपन, ओहू में पछुआ क थपेड़ा। गाड़ी से भटनी पहुँचलें आ उत्तर जाए खातिर गंडक हेलि गइलें। बिहार का ओर दू कोस पर ससुरारि रहे। साधन सवारी ना रहे,पैदल जाए के रहे। कपार बथ्थे लागल। एगो छोटहन पीपरे के फेंड़े के नीचे बइठलें, बाकिर चक्कर आवे लागल। कौनो तरे हिम्मत जुटा के ससुरारी पहुँचलें। देखते लोग चिहा गइल। ई त पहुना बेमार बुझा ताड़ें। लोग हाल–चाल पूछल। पहुना (नगेसर) कहलें–– 'गंडक ए पार के पीपरे पर क भूत ध लेले बा।' कवनो दर दवाई ना भइल, खाली झाड़ फूँक भइल। तीनि दिन बाद लवटि के घरे अइलें। गोरखपुरपुर में डॉक्टर से देखावल गइल। दवाई होखे लागल। खरविरउवो चले लागल। कपारे पर धवरबरुआ छपाये लागल। उनके अवसाद (डिप्रेशन) क रोग ध लिहले रहे। कमजोरी अलगे से रहे। रति रति भर उठे बइठें, एन्ने ओन्ने भागें। छ महीना बीति गईल। एक दिन दुपहरिया में बोली बन्न हो गइल। तवले सरंगी आ करताल पर घूमि घूमि के निरगुन गावत भीखि माँगत दू जने जोगी आ गयिलें। ओमे एक जने सूर रहलें आ ऊ अपने दोसरका संहतिया क कंधा पकरि के पीछे–पीछे चलें। तपेसर बो जोगी लोगन के देखली त उनकी आँखि में आशा क किरण चमकलि। ऊ हाथ जोरि के कहली–– 'जोगी बाबा! बाबू के जल्दी से झारीं, बोली बन्न बा, का जने दई का करिहें?' जोगी बाबा सरंगी के डंडी से नगेसर के झरलें। नगेसर तन्नकी सा आंखि खोललें। फेरू आंखि मुना गइल। जोगी लोग गावे लागल–– (एक)– 'केहु केतनो बोलावे त ना बोलेके' (दू)–– जागल रहिह बिलार तोहें झपटी। बरम्हा के झपटी, बिसनू के झपटी, शंकर के ले जा के रहिया में पटकी। जागल रहिहऽ––।' ओन्ने नगेसर हिचकी लिहलें। बिलार झपटि लिहले रहे।

5/444, देवरिया रामनाथ पश्चिमी, सी सी रोड, देवरिया-274001, मो० 9452047727, 8887547045

होखे, बस ओतने करीं–
जै हरी टीसन धरीं

अशोक कुमार तिवारी

जीवन में भाषा के होखल बहुत जरूरी बा काहें कि भाषा में 'शब्द' होला आ हरेक शब्द के बहुत – बहुत अर्थ होला। कवनो बात भा चीज के समझे–बूझे खातिर ओकरा के अरथियावल बहुत जरूरी होला, अब जइसे 'भाषा' के लेलीं। भाषा शब्द में प्रयुक्त मुरधनी 'श' के खवो के रूप में प्रयोग होला जइसन कि तुलसी बाबा के 'मानस' में अक्सरहाँ प्रयुक्त भइल बा। तऽ एह अर्थ में भाषा के एगो अर्थ भइल 'कहल गइल', दोसरा अर्थ में भाषा के एगो अर्थ होला 'आभासित' होखे वाला। भाषा शब्द के अउरियो – अउरियो अर्थ होला भा हो सकेला, आगे बढल जाउ। भाषा के इकाई होला 'शब्द'। कहल बा कि शब्द 'ब्रम्ह' हऽ, अब 'ब्रम्ह' का हऽ एकरा के डिफाइन कइल ओतना गजरा नइखे, कांहेकि ब्रम्ह के तात्पर्य परब्रम्हो होला आ परब्रम्ह के से तात्पर्य बा जवन कि बुद्धि से परे होखे। एगो ब्रम्ह ओकरो के कहल जाला जवन कि धऽ लेला त बोखार छोड़ा देला। लागेला देह के खून सुखावे, कुल – खानदान के सफाई अभियान चलावे आ डीह–डिहवार से लेले – देले ओझा – सोखा, डाइन–भकसाइन के दुवारि के धूर फँकवावे। तबे चौन के साँस घींचे देला जब अपना मन वाला कऽ घालेला। एक बार प्रेम से बोलीं पिपरा वाला ब्रह्म बाबा की जै।

प्रेम से बोलीं वाला बात प अपना गाँव के एगो खीसा मन पर गइल। हमरा गाँव में प्रेम आ सलेन्दर दू भाई बा लो। एक बेर गाँव के काली माई किहाँ अठजाम कि. रतन ठनाइल। किरतन शुरू होखे से पहिले ब्यास जी नारा देत भइले कि एक बेर प्रेम से बोलीं काली माई की जै। सब लोग नारा लगा लिहल। एक जाना तनी सोझबकाह रहले आ उनका प्रेम से तनी मनमोटाव हो गइल रहे त ऊ फेंकरि के कहले 'रउवा सब प्रेम से बोलीं, हमरा प्रेम से बोला–चाली नइखे। हम प्रेम से ना बोले जाइब, जवन कहेके बा ऊ सलेन्दर से कहब।' जायेदीं महराज हम्हूँ का ब्रम्ह पुराण आ आगो–मागो ले के बइठ गइनी, का कहे के बा आ का कहाइल जाता, खैर कहेके ई बा कि जीवन में भाषा के होखल बहुत जरूरी बा काहें कि भाषा में शब्द होला, शब्द के अर्थ होला, अर्थ से सब चीजन के मुल्यांकन होला आ जबले कवनो चीज के मुल्यांकन ना होला तबले ऊ चीज मूल्य विहीन, बेमतलब होला। बेमतलब माने जवना के कवनो मतलब ना होखे भा कहीं तऽ बेकार, जवना के कवनो कार माने कार्य ना होखे। कुल मिला के कवनो चीज जवना के अर्थ ना होखे ऊ ब्यर्थ होले। अर्थ के एगो माने होला 'धन' त एह माने में ब्यर्थ के माने भइल बे–धन। अर्थे शब्द के सटान वाला एगो शब्द बा 'स्वार्थ' जवना में स्व माने आपन, अर्थ माने धन यानी स्वार्थ माने आपन धन। अब एगो बात एहिजा जान लिहल जरूरी बा कि धन माने खाली रुपये सोना – चानी गहना ना, गोबरो के गोधन कहल जाला आ गोधन माने खाली कुटहीं वाला 'गोधन बाबा' भा गोबरे भर ना दूध, घीव, दही – सजाव, माठा आ गोमुत्र सब गोधने हऽ। त स्वार्थ के माने होला ऊ कार्य जवना से आपन कवनो अर्थ सिद्ध होत होखे, लाभ होत होखे। लाभ के संगे एगो अउरी शब्द हऽ 'शुभ'। अक्सर देखले होखब सभे शुभ आ लाभ एके संगे लिखल रहेला।

कहल जाला कि शुभ आ लाभ गणेश जी के लइका हऽ लो खैर। शुभ आ लाभ जहां एक संग लिखल रहेला उहाँ ईहो देखले होखब, बिचवा में स्वास्तिक के निशान बनल रहेला। स्वास्तिक चिन्ह के ओ. रिजनल मतलब का होला, हम ओह पर ना जाके नारमली डिफाइन करऽतानी कि स्वास्तिक के चिन्ह ऊ हऽ जवन गणित में प्लस के चिन्ह होला। अन्तर अतने बा कि एह प्लसवा में चारों किनरवा पर लरछा अस फेंकले रहेला। प्लसो के माने होला 'धन' आ लाभो के माने 'धन; त 'बाँस के जरी बाँस आ ओकरो जरी बाँस' एह सिद्धांत के आधार पर हम कहऽतानी कि शुभो के माने 'धन' होई माने कुल्ह मिलाके 'धन–धना–धन'। अब 'बाँस के जरी बाँस आ ओकरो जरी बाँस' वाला सिद्धांत प ई मत सोचब सभे कि बेमतलबे के बाँस कऽ दिहले, एकर खास मतलब बा। एकरा के एहू तरे समझीं कि लाभ लइका हवे गणेश जी के आ शुभो गणेशे जी के त गोवंश के गोवंशे नू होई? दोसर थोड़े हो जाई? त हो गइल नू शुभो माने धन आ लाभो माने धन। आछा हम त कहऽतानी कि दुनिया के हर शब्दे के अर्थ होला धन काँहे कि अर्थ माने धन आ दुनिया में हर शब्द के कुछ ना कुछ अर्थ होला। इहाँ तक कि 'ब्यर्थो' शब्द के अर्थ बा। शुभ शब्द के एगो अर्थ होला अच्छाई आ एगो अर्थ होला शुभ्र माने सफेद भा झकझक उज्जर भा बेदाग। बेदाग माने जवन दगाइल ना होखे। दगइला के मतलब केहू के कष्ट ना पहुँचल होखे। माने लाभ भा धन ऊ ठीक बा जवना के सँगे शुभ जुड़ल होखे। कहे के माने ई कि अर्थार्जन होखे त अइसे होखे कि ओकरा से केहूके कष्ट ना होखे। जदि बिना केहूके कष्ट दिहले, बिना सतवले धनोपार्जन होई त ऊ लॉगलाइफ टिकाऊ होई आ जदि केहूके दुख देके सताके होई त ओह धन में सतावे जाये वाला के आहो शामिल रही। बरियार के कष्ट देबेके त सवाले नइखे, कष्ट रउवा ओकरे के दे सकेनी जे कमजोर बा आ जदि कमजोर के हाय लेब त आज ना तऽ काल्ह ऊ रउवा के भसम कइये दीही। कहलो गइल बा "निर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय। मुवे खाल की श्वांस सो, सार भष्म हो जाय।" कहेके तात्पर्य ई कि जवन 'लाभ' बे केहूके सतवले मिले उहे 'शुभ' बा। ना तऽ अशुभ हो जाई। अबके जतरा में अतने काहें कि "होखे बस ओतने करीं – जै हरी टीसन धरीं।"

❑ **सूर्यभानपुर, बलिया**

गीत

✍ **शिवजी पांडेय 'रसराज'**

अबकी होलिया में अइहऽ जरूर,
जनि तूँ अबेर करिहऽ!
ना त टूटि जाई बनल दस्तूर,
जनि तूँ अबेर करिहऽ!

सरिसउवा झनकल गेहूँ गदराइल,
अलुवा कोड़ाइ के स्टोर में धराइल,
लहसल खेतवा में चनवा–मसूर।
जनि तूँ अबेर करिहऽ!

तहरे उमेदि में सँवरनी घर बार हो,
कठिन समे जुझनी, मननी ना हार हो,
आन होखे न पावे चूर–चूर।
जनि तूँ अबेर करिहऽ!

अइबऽ त खई लेइ, मड़ई छवाइबि,
नया–नया चीज 'रसराज' किनवाइबि,
तहरा रँगवे–रंगाइबि भरपूर।
जनि तूँ अबेर करिहऽ!

❑ **ग्रा० पो०–मैरीटार, बलिया**

दारा सिंह

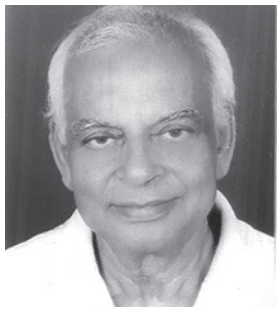

राजगुप्त

ओनइस सौ चौसठ के बाति हऽ, बी0ए0 (कृषि) में पढ़त रहली, पढ़ाई से अधिका खेलकूद, एन0सी0सी0 में ढेर मन लागे। ओह समय पढ़ाई के बाद एन0सी0सी0 के परेड होत रहे। सीनियर अण्डर अफसर रहलीं क्रास बेल्ट बान्हि के चलत, मन में बड़ी उत्साह रहे। बुझाव कि कहीं के दरोगा हईं। हफ्ता में तीन दिन परेड होत रहे। ढेर अउँजाह बुझाउ त परेड का दिन ड्रेस पहिर के चलि जाईं। के अपना घर के कपड़ा खराब करी। ढेर लड़िका ड्रेस पहिर के कालेज आवें। ओह जमाना में कपड़ा के कमी रहे जाड़ा में सुईटर एक्का दुक्का लड़िकन पर लउके। जवानी में जइसे केहू के ठण्ढे ना लागेला। छोट–छोट लड़िकन के महतारी खाली गाती बान्हि के घामा में भेजि देली।

एक दिन के बाति ह। ड्रेस पहिर के कालेज जात रहलीं। आगा बढ़लीं। दशरथ चाचा के दोकान पर भीड़ि लागल रहे। सोना चानी के दोकान पर भीड़ि देखि गोड़ थथमि गइल। जिला के नामी गिरामी दोकान पर अइसन भीड़ि, आगा बढ़ि के सवचलीं। दशरथ चाचा कहले, दरबा के एगो सिकड़ी पंचाइती तौल करावे के भेजले रहली हँ। ऊ सीकड़िये दोकान पर नइखे लउकत। पता ना हमरा के लिया के दिहलसि ह कि ना। बिसभोर हो गइली। सज्जी दोकान खोजवा के हारि गइलीं मिलल ह ना। एह से दरबा पर बेरि बेरि मन जाके अंटकि जाता कि भीड़ी–भाड़ में सीकड़ि दिहलसि ह ना, देले रहित त दोकन में न रहित। ओह में पाँख ना नू लागि जाई कि हवा में उड़ि जाई? हमार दरबा के ईमानदारी पर सोरहो आना शक होता। बोलऽ कहवा रखले बाड़े जबाब दे। जेकर पूंजी जाला ओकरा ढेर बुझाला। बताऊ, जल्दी बताउ। एतना कहि के आव–देखले ना ताव दारा सिंह के गाल पर खीसि में दू चटकन खीचि दिहले। दारा सिंहवा तिलमिला के रहि गइल। ओकरी आंखि में से लोर बहे लागल। जल्दी बक् दे नाहीं त पुलिस के दे देइब त सज्जी मोटाई झारि दिहे स। मालिक मारीं मति हम चोर ना हईं। दारा गाल सुहुरावत कहले। ढेर घमण्ड में चूर बाड़े त हमहीं सज्जी भूत झारि देइब। दशरथ जी खीसि में भूत भइल रहले।

मालिक हमरा घमण्ड का? अपना जाति के सोभाव पर। सज्जी देश में नेपालिए पहरेदार बाड़े। ओहनी के ईमानदारी पर कबो केहू शक–सुबहा ना कइल। उल्टे चोर कोतवाल के डांटे इ भल ना कहाई। एतना दिन से काम करत बानी का कबही एगो ग्राम के अन्तर पड़ल बा? एक–एक दू–दू किलो के बिखो गलवावे खातिर से जात रहली ह का कबहीं कवनो फरक पड़ल बा। हम पांच ग्राम के सिकड़ी ले के काहाँ भागबि? रउरा त हमरा बाप–महतारी के नावो नइखी जानत, नाहीं कवना गाँव के हईं पतो नइखी जानत? जे से पुलिस में रिपोट लिखवा सकीं? रउरा किहाँ केतना दिन से खपल बानी। बजारो में केहू हमरा पर अँगुरी ना उठा सकेला?

ड्रेस पहिरले रहलीं। उत्साह रहे। आगा बढ़ि के दशरथ जी के हाथ पकड़ि

लिहलीं। चाचाजी जवन भइल तवन साँच सभका सोझा आई। ना मारी पीटीं ना पुलिस के बोलाईं। सच्चाई राति बिरात ले पानी के बुलबुला की तरे सोझ आई। हम कहलीं।

दशरथ जी गारी फजिहत करत हांफे लगले। जानत नइखी फउजि में बनिया बटालिन नइखे बाकिर गोरखा बटालियन लड़ाई में सरहद पर आगा भेजल जाले। हमरा नीक से मालूम बा। हमरा ओकरा नीयत पर शक नइखे। रउरा दुख पहुँचल बा, जवन कहीं? महल्ला में राति बिरात बरखा–बूंनी, आन्ही पानी में जेही एक हाला हांक लगा देला ओकरा के दारा सिंह के जुरूते जबाब मिल जाला। केहू ना केहू के कवनो ना कवनो समान घटले रहेला। मेहरारू अदबदा के छते पर से हांक लगा देली स। निसुराति का तगदिया बेवपारी आवे ले स। हजारों रुपया लेके हमरी दालान के कमरा में सूते ले स। का मजाल कि आना पाई के कतही फरक पड़ल होखे। ओइसन ईमानदार दारा हबे। एतना बाति दशरथ जी से कहि के हम कालेज चलि गइलीं।

कालेज से लवटते दारा के देखलीं। दोकान के एक ओरि कोना में बइठि के सुसुकत रहे। बेचारा के आँखि लाल हो गइल रहे। चाह पानी खातिर पुछारि कइला पर ना नुकूर क देत रहल। सबेरहीं से कुछ खइले पियले नइखे। पानियो खातिर मुँह फेरि लेता।

हमरा के देखते अउरी जोर से सुसुके लागल। हम दोकान के नोकर संजय से चाह पानी बिसकुट मंगवलीं। पानी के गिलास तारा के पकड़वलीं। बे अन्दाज घटर–घटर केतना पानी पी गइल। हम दशरथ जी से कहलीं, "उनकर चिअउरी कइलीं। मारब पीटब जनि। यदि दाल में काला होई त फजिर तकले ओरिया जाई? सांच के कवनो ना कवनो हल भल निकल जाई।" एतना कहि के हम घरे चलि अइलीं। होत फजिरे दशरथ बाबू हमरा घरे आ गइले। आकें हाँक लगवले। रजेसर बाबू रजेसर!।

"का हो चाचा, का बाति ह। बहुते घबराइल बाड़।"

"नीचे उतरऽ त बताईं।"

"का चाचा जी का बाति ह? बहुते घबड़ाइल बानीं? समाचार ठीक बा नू?"

"हम ओकरी डेरा पर सबेरही गइल रहली हँ। दारा सिंह के कहीं सचला पचान नइखे, बुझाता राति बिरात कही भागि गइल बा।"

चाचा जी के बाति सुनि हम चिहा गइलीं। मने में सोचलीं। गलती ना कइले रहित त भागित काहें। के? हमरा शक के सुई तेज चले लागल। कतनो ईमानदार आदमी के नीयत कब डोलि जाई भगवानो ना बता सकेले। मिठाई जहर हो गइल। जुरूते तारा के डेरा पर गइलीं। नेपालनी पहरेदार कुल्हि खाना बनावत रहले पता चलल। बेगर केहू से कुछ बतवले रातिये खा भागि गइल बा। ओकर बिस्तरा उलटली पुलटली। झारलीं। एगो चिट गिरल, अजीबे लिखल रहे। हम मिला के पढ़लीं। लिखल रहे, "हम चोर ना हईं।" हम मुंह लटकवले हजारन बाति सोचत घरे लवटि अइलीं। एतना दशरथ बाबू के धीरज धरवले रहली ह। कवन मुंह लेके उनका सोझा जाईं? हमरा नीक से इयाद पड़ता ओह दिन बेगर ड्रेस के दोसरा रस्ता से कालेज चलि गइलीं। दारा सिंह के एतना सच्चाई के बादो हमरो मन पनछुछुर हो गइल। साँझि खा पूछारियो करे दशरथ चाचा के दोकान पर ना गइलीं। ओही बेरा केहू आके बाबुजी से कहि दिहलसि कि रजेसर झूठहू दोसरा के बाति में टाँग अडा दिहले हऽ। राउर इज्जत कके दशरथ जी चुपा गइले। नाहीं त चउकी पर गइल रहित त डन्डा के मारि से सज्जी उगिल देले रहित। रजेसर बाबू बहुत बड़ नोकसान करा दिहले। मारूहू पीटे के दशरथ जी के बरिजि देले रहले ह।

राति का पुछारि करे बाबुजी हमके बोलवले। कहले दोसरा के बाति में तोहरा दखल दिहला के का जरूरत रहे? दारा केतनो साँच होखे त का, ओकरा मन में पइठल बाड़ऽ? बाबुजी के डांट सुनि पीछिउड़ होखे लगली त जोर से बाबुजी कहले जिम्मा लेले बाड़ऽ त डांड़ दिहऽ?

कालेज के लाइब्रेरी से किताब पढ़ीला ता डांड कहाँ से देइब? फजिरे अतवार रहे। अतवार के इची देरी तकले सूतींला। फुरसत में ओंग्घी बहुत बहुत बढ़िया से लागेगा। अबले सुतले रहलीं तबले केहू के आवाज सुनाइल। राजेसर बाबू ए रजेसर बाबू! हम झटकवाहे उठि के जँगला पर अइलीं। पुछारि कइलीं। के ह? "संजय" आवाज मिलल। झँकली। का हो का बाति हऽ? सिकड़िया मिलि गइल ह? –"कहाँ हो?"

जातने बानी हर अतवार के चादर बदले खातिर दोकान झराला। जहाँ मलिकार बइठेलें। ओइजे जाजिम थोरकी भर फाटल रहल हऽ। मलिकार के जानते बानीं

कवनो कागज पत्तर जाँघ के नीचे ध लेले। कागज पत्तर हलुक होला दबा जाला। सिकड़ी भारी। मलिकार के दाये बाएँ करत भर के सिकड़ी फाटल चादर में अमा गइल होखी।

"दशरथ बाबू जानि गइले न।"

"हऽ" मने मन सोचलीं दोकान में हेराफेरी होखबे करेला। उल्टे चोर कोतवाल के डाँटे? केकरा के दोस दिआई? आन्ही मानी दोस बुढ़िया भरोस। हम त भगवान पर पूरा भरोसा कइले रहली कि हे भगवान! दारा सिंह चोर ना निकले। काहे से कि दारा बहुते बढ़िया आदमी रहे। फेड़ क तना अइसन गुठेल देहिं। डारि केतना पतिल होला? जइसे हाथ गोड़ अइसन शरीर हम खुशी मन से अगरा गइलीं। बाकि अफसोस होखे लागल कि ओकर पता ठेकान हइये नइखे कि ओकर सनेसा देईं? हम नीक से जानत रहली। कुकुर चाम के रखवार ना हो सकेला बाकिर दावा बा, एगो नेपाली बढ़िया पहरेदार हो सकेला।

चान पर जइसे गरहन लागल होखे दारा सिंह पर ओइसहीं करिया कोठरी की तरह ओकरा पर दाग लागि गइल रहे। जबले सच्चाई के पता ना चली तबले ओकर जिनिगी नरक लेखा बनल रही। आंख के पुतरी में जइसे बरौनी समा गइल होखे। सीता जी पर अक्षरंग लागल त सीता माता जइसे धरती में समा गइलीं। अहिल्या पर श्राप लागल त पत्थर हो गइली बाकिर राम के चरण पड़ते अपना शरीर में आ गइली बाकिर दारा पर के लागल दाग कइसे मेटी, कवनो उपाई ना बुझात रहे।

बरिसो–बरीस बीति गइल। जाने केतना बरिस बीति गइल। साँच सिंग्घी मछरी अस कानो में अमा गइली। अतना बरीस में हम एगो लड़िकी के बाप हो गइली। सुन्नर बेकति हमरा बेर बागर गाभी जरूर मारे की केतना दिन से कहत–कहत थाकि गइलीं कि चलीं कहीं घूमि आवल जा। बाकिर रउरा कान पर ढ़िलियो रेंगलि ना। हमार सखी बिआह बादे पहाड़ घूमे चलि गइलीं। जवना के हनीमून कहल जाला। बुझाइल? ओह दिन अपना सुन्नर बेकति के समझवलीं। देख भाई ओइसन मारी हमार पाकेट नइखे। एक सौ बीस रुपया तनखाह पावे वाला मास्टर मौज मस्ती करे पहाड़ पर जाईं? अब हाथ सकेत बा। दोसर तनखाह पर अबे माई बाबू के हक बा। आजु जवन उत्साह बा बाद में धरकच में बझला में सज्जी खुशी कपूर हो जाई। हमार मन कवनो त्रिभुज ना ह कि क से ग में जोड़ि देइब आ कोण से कोण मिला के सांचों के समान सिद्ध क देइब। हम एगो नीक बाति कहतानी। मजिगरे मानी। मुँह देखाई के पइसा बचा के रखले बानी। लइकी के हमरा दूध के सिवा कुछ खाये पीये के हइये इनखे, जवन खर्चा बा हमनिये पर न बा। ओतना में खुशी–खुशी घूमि आइल जाईं।

हमरा के फुसिलाई के जवन बिहंसि मीठ बोलल कि हम काटि के रहि गइलीं। सुन्नर बेकति के बाति मानहीं के पड़ल। सखी हमार दारजिलिंग गइल रहलीं। बहुते बड़ाई करसु हमनियो के ओइजे चलल जाय। राति के दस बजे गाड़ी मिलल। दोसरा दिने सांझि खां गाड़ी सीलीगुड़ी चहुँपल। ओइजे होटल में रूके के पड़ल। दोसरा दिन पनपिआव क के छुकछुकवा गाड़ी मिलल। बड़ी मजा आइल। गाड़ी अइसन कि पैदले चलि सकत रहे आदमी। झुकझुकवा गाड़ी पर बइठि के झरना, पहाड़, फेड़, पउधा, गाई–बकरी देखि के मन बांसन उछरे लागल। पहाड़ के सुन्नराई में सबकुछ भुजा गइल। सुन्नर मेहरारू संगे केतना नीक लागल। बरनन कइल सुरुज के दिया देखलवला के बराबर कहाई।

दारजिलिंग पहुँचि के एगो होटल में पहाड़ी लिया गइल। मार बहिनी रे, लकड़ियों के कहीं घर होला। मेहरारू हमार लकड़ी के महकउवा होटल देखि एकदम से अगरा गइल, "आय हाय बड़ा नीक लागता जी।"

"हमरो। हमहूँ लकड़ी के घर ना देखले रहलीं। जवना के महक करेजा में भूइडोल लिया देव।"

मेज पर जाई के रजिस्टर में नाव पता भरलीं। फेरू समान नोकर ले के पांच पम्बर कमरा में चलि गइल। मैनेजर साहब समझावत कहले। सबेरे चाय पानी ओकरा बाद अण्डा रोल आ चाय गम्भीर नाश्ता कइके घूमे चले जाईं। आईं त सांझ खा फेरू नाश्ता आ राति के खाना बदल बदल के मिलीं। मछरी, मांस–मुर्गा खाई ले ना। तीन सौ रूपया रोज लागी।

मैनेजर साहब के बाति सुनि हमनी का दूनो परानी चवनिया मुस्की काटि दिहली जाँ।

हाथ मुँह धो–पोछि के जबे नाश्ता के टेबुल का ओरि चललीं जा, केवाड़ी केहू बजावल।

"साहब नाश्ता लगा दीं?"

"हंऽ हंऽ लिआवऽ।"

बेयरा के रूप में हम दारा सिंह के देखते गोड़ का तर से धरती घुसुकि गइल। हमार आँखि चियरा गइल। दारा सिंह हमरा के देखते नाश्ता मेज पर लगा के सुसुके लगले। मुँह अपना अगौंछी से ढांपे लगले। हम कहली। इचिको लजाये–शरमाये के बाति नइखे। तू सचहूँ के अंगूठी के नगीना बाड़ऽ। जब सिकडी के साँच बतवलीं त दारा सिंह के मुँह एकदम अनभव गुलाल के फूल अइसन खिलि गइल। तू हीरा बाडऽ हीरा, अंगूठी के नगीना। एतना कहला के बाद दारा लौकी के लत्तर अइसन हमरा के भरि अँकवारी लपेटि लिहले।

कहले 'बाबू हम चोर ना हईं।' पता ना कइसे केकरा मुँहे हमरा घरे सनेसा पहुँचि गइल रहे कि दारा सिंह चोरी करे में नोकरी से हटावल गइल बाड़े? से बाति सुनि के हमरा माई बाबू के रोवला के ठेकान ना। छोटी चुकी गाँव में हमरा छी मानू होखे लागल ह। जब सुनलीं त लागल अइसन अछरंग में जीयल धिक्कार बा। जब मैनेजर साहब सुनले त बहुते हमरा के समुझवले। आहे पर केहू पर शक ना करे के चाहीं। रउरा सच्चाई बताइब त बहुते खुश होइहें। बलिया के बाति मैनेजर साहब से बतवले रहलीं त मैनेजर साहब कहले, हमरा से बाति हजम नइखे होति तोहरा अइसन आदमी चोरी कऽ सकेला। ओही लाज के मारे हम अपना गांवे लात ना धइलीं। ओतना दिन के तनखाह मैनेजर साहब किहां जमा बा। हम प्रण कइले बानी जबले अछरंग ना मेटी तबले गांवे लात ना धरब। रउरा ना बचवले रहिंती त पुलिस हमरा के मुअली के मारि मरिते सऽ। पता ना केतना दिन हरदी दूध पीये के पड़ित। पुलिस केहू के होला भला मुआ देते सन। बाकिर भगवान सच्चाई के जिन्दा रखे खातिर केतना रूप बनावेलन।

राति खाँ मीट–भात–रोटी खा के सूति गइलीं जा। फजिरहीं उठि के जल्दी–जल्दी तैयार होखे लगलीं जा। पता चलल कि पायखाना पिछुवारी बा। ईंटा से घेटि के तिरपाल बिछा के पानी बिटोरल बा। ओही में से लेके मर–मयदान होखे के पड़ी। बस एक बाल्टी पानी मिली, चाहे कपड़ा धोइईं भा नहाईं। सुन्नर बेकति कहलसि कि कवना देश में आ गइली जा। पहाड़ पर पानियों के अकाल? हमनिये किहाँ नीक बा। मन करे त सउँसे ईनार के पानी से नहा लीं। कोठरी खुलले छोड़ि के चलि अइली जा। लक्ष्मी नाव के दाई रहली। कोठरी झारे पोछे खातिर। ओकरे के लड़की के देख रेख करे के देके हमनी का नहाये धोवे में बाझि गइली जा।

सलहंते नहा धो के अइलीं जा त लछमिनिया हमनी के बुचिया के देके कोठरी से झटकवाहे बहरिया गइल।

दारा सिंह नाश्ता पानी चाह ले अइले। मेज पर राखते कहले। घूमे जाये के पहिले खाना आ जाई। रउरा सभे आराम से तैयार होई? खाना–ओना खा के जब तैयार होके घूमे खातिर बहरिआये लगली त सुन्नर बेकति हमके हांक लगावत कहली सुन्नतानी जी। हमार बटुआ नइखे मिलत। सज्जी खोजि भइलीं ना मिलल ह?

एतना सुनते हमार होश उड़ि गइल, जइसे देहि पर केहू बरफ फेकि देले होखे। जब झटकवाहे दारा सिंह के चिल्लइली। दारा सिंह दउड़ि के अइले। कहली कि हो मलकाइन के बटुआ नइखे मिलत। एतना सुनते दारा सिंह कपार पर हाथ धइ के भुइंया बइठि गइले। बड़ी देर बाद कहले। लक्ष्मी न कोठरी झरलसि ह। खैर चिन्ता जनि करीं। जरूरत पड़ी त मैनेजर साहब किहाँ हमार पांच बरीस के तनखाह जमा बा। घूमे फिरे आइल बानी त बेफिकिर के घूमी फीरी। पहिचान खातिर हम बानी न। दारा सिंह क बाति पर पतिया के हमनी का घूमे निकल गइली जा। घरे तार जाई मनीआर्डर से पइसा आई हफ्तन लागी जाई। एतना में त कोठरी के भाड़ा अधिका हो जाई। मुँह लटकवले हम घूमे चलि दिहली। चलत चलत गाभी मरली। ल दुख में आटा गिल। बड़ी घूमे घूमे के मन रहल। पूरा भइल न? मन रहल ह। पूरा हो गइल, जवन हो गइल ओकरा पर कवन बस?

हमनी के फिकिरिये ओढ़ले। होटल से भारी मन से बहरिया गइलीं जा। सांझि खां लवटली जा त पता चलल दारा सिंह कहीं भागि गइल बा। बड़ी अफसोस भइले। गाइ गइल कानो के त गइल अपना साथे नौ हाथ के पगहो ले गइल। कोठरी में घुसते सुन्नर मेहरि बोलल। एजी, मुँ मति लटकाईं। चिन्ता–फिन्ता छोड़ीं जवन होई नीके होई। जनि बोली अछरंगी बोली। लागत बा करेजा में गोली। सुन्न बेकति बात के बेबाति से हमनी दुनु परानी हँसे लगली जा। मन बहलावे खातिर लइकी से खेले लगलीं जा। ओकरा के गुदुरा गुदुराई हँसे लगली जा।

सबेरे कुबेरा जगलीं जा। मन भारी भारी भइल रहे। आजु बहरी ना जाइल जाई। एही बीचे गाइड आ गइले त। साहब एइजा के मशहूर चीजु ना देखलीं। त

कुछ ना देखली। काल्हु सबेरे चली सनराइज आ सनसेट के करिश्मा देखीं लो।

पाँच बजे जाड़ा–पाल्ला में कहाँ जाई आदमी। हमनी के कुछ जानकारी रहित त गरम कपड़ा घर से लिआइल रहतीं जा। अफसोस करत कहलीं, "हमनी के नइखे जाये के।" अइठी–बइठीं करत नाश्ता–पानी के बेरा हो गइल। नाश्ता–पानी कइ के दारा सिंह के बारे में सोचे लगली। हमरा पक्का विश्वास बा। उ भागल नइखे। लछमिनिया के खोज में निकलल बा। पता लगाइये के आई। हमरा पूरा विश्वास बा। हनुमान जी सीता के खोजि लीहें। एतना सोचि हमनी का एगो पार्क में चलि गइलीं जा। जहाँ एक से एक सुन्नर जोड़ा मौज–मस्ती करत लउकल। कुल्हि खेला देखि के मन जुड़ा गइल। सांझि होखे लागल। सुरुज एकदम से ओलरि गइले। सुन्नर–सुन्नर चीजु देखि के ओइजा से हटे के मन ना करत रहे। मन मलत होटल पर लवटि अइली जा।

सांझि के बेरा दारा सिंह आ होटल के मैनेजर साहब सगहीं अइले। हम दारा के देखि के चिहा गइली। बाकिर मैनेजर साहब के चेहरा फूल अइसन खुशी देखली के मन में संतोष जागल। सुन्नर बेकति कहले रहे कि जवन होई नीके होई। नाश्ता के बाद लछिमिआ आ गइल। आके हमार गोड़ छानि लिहलसिं। जइसे विदाई में अपना बाबुजी से भेंट कइके बिअहुता रोवेली सन।

मालिकार हमके क्षमा कइ दीं। हम चोरिन ना हई केतना बरीस से होटल में सफाई पोंछा करींला। कवनो कलही शिकायत नइखे भइल। एह घरी दुःख में रहली ह। जवान बेटी के बिआह करेके बा। हाथ खाली बा। कहीं से पइसा के जोगाड़ नइखे हो पावत। हमनी के गांव गरीब गांव ह। केहू के हाथ में पइसे नइखे त उ दोसरा के उधार का दी। दोसरा गांव के लड़िका तय कइले बानी। कहले रहे कि हमके दू तीन हजार रुपया के बेवस्था कइके दे द। ओतने में बिआह आ खिआई–पिआई हो जाई। इमली देखि जइसे मुँह में पानी भरिजाय ओही तरे हेतना पइसा देखि के मन डोली गइल। बिआह जल्दिये करे के बा ना त बेटी बेचवा हमरा सुन्नर धिया के भगा के ले के चलि जइहे स। दाम लगावत बाड़े स। कलकत्ता–बम्बई में बेचि दीहे स। ढेर ढेर दिन से जुझल बाड़े स। कबही इ घटना हो सकेला। एतना सोचते रहलीं तबले बेटी बेचवा से डेरा के मलिकाइन के बटुआ चोरा के गाँवे भागि गइलीं। हमनी किहां ओन्हनिये के राज बा। जवना घर में गरीबी देखिहें स भौंरा अस मेंडराये लगिहे स। एही पेंचा में पड़ि के हमार मन डोलि गउवे। हम चोरिन कहाइब। सबुर कइ लेइब बाकिर बेटी कोठा पर चलि जाव सपनो में ना सोचब। चोरी के पाप पुन्न से मीटि जाई बाकिर बेटी बेचवा के पुश्त नरक में जाई। अबे घरे चोहँपि के सोचत बिचारत रहली तबले दारा पहुँचि गइले घरे। बहुत समझवले, "तोहरा बेटी लछिमी के, तोहरी करेजा के कोठा पर ना जाये देबि जा। आपसु में मिल जुलि बिआह करा देइब जा।"

लछिमी जवन बेग लवटवले रहे। ओही बेग में दु सइ रूपया हमार बेकति निकाल के लक्ष्मी के हाथ पर राखते कहली, "हई लड़िका के हाथ पर तिलक राखि लइका छेंकि दीहऽ। हम घरे जाके मैनेजर साहब के मनिआर्डर कई देइब। ससुर बाप से कहब, ना बेवस्था होई त आपन गहना बेंचि के तोहरा के रूपया भेजब। सभकर बेटी बराबर होली।

❑ राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया,
मो०. : 7985409070

भोजपुरी का समृद्धि क आग आ राग : अशोक द्विवेदी क कविता

प्रो0 चितरंजन मिश्र

अशोक द्विवेदी हिन्दी आ भोजपुरी के बहुत समर्थ विचारवान आ नया जमाना के जोग–जुगुत, पेंच–दरपेंच समुझेवाला रचनाकार हवें। उनकी कविता का गद्य में भोजपुरी के कोर– निछान शब्द त होखबे करेला, जहाँ जरूरत समुझेलें, आ कहना दोसर शब्द अजगुते ना आवेला त तत्सम शब्दन के भी बेफिकिर होके हस्तिमाल करेलें, आ करेलें पढ़ला पर बुझाता कि सचहुँ उ नोशब्द के बदले कउनो दोसर शब्द एह जगह पर ऊ गहिर अर्थ नाहीं दे पावत बा, जवन द्विवेदी जी अपनी रचना–कविता का गद्य से दिहाल चाहतानें। द्विवेदी जी वे बहुत बड़वन–बड़वन प्रतिष्ठित सम्मान मिल चुकल बा, इहाँ तक कि भोजपुरी रचना के अपनी विशिष्ठ भंगिमा के देखत उहाँ के साहित्य अकादमी का भाषा सम्मानो भी मिलल बा– जवन उनकी रचना आ विचार के भीतर निहित ताकत क परमान बा। भोजपुरी में अइसे त बहुत कम उपन्यास देखात बा बाकिर द्विवेदी जी क उपन्यास 'बनचरी' अपनी कहाव, शिल्प, संयोजन, भाषा–भंगिमा के बोले एगो अनुठा प्रयोग की तरे बा। उहाँ के एह उपन्यास के पढ़िके केहुओ के बुझा सकेला कि भोजपुरी भाषा में केतन सर्जना शक्ति बा, आ अशोक द्विवेदी जी ओके अपने भीतर केतना गहराई से पचवले बानीं।

द्विवेदी जी एह बहु चर्चित कविता संकलन, जेकरे बारे में साहित्य अकादेमी के पुरनका अध्यक्ष पद्मश्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी, भोजपुरी के अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन के महासचिव और गंभीर आलोचक अरूण नीरन जी बहुत पहिलहीं कौनो भेंट का समारोह में चर्चा कइलें रहे सभ, बाकिर ई हमरे कउनो अभागि आ गलती रहे कि हमके ई संकलन बहुत बाद में पढ़े (हालहीं) मिलल। जस–जस एके पढ़त गइलीं तस–तस आपन गाँव–ज्वार, खेत खरिहान, लरिकाई के दोस्त, मित्र, आदर, कुआदर सब मन के भितरकी भीत से निकलिके सामने आके ठाढ़ होखे लगलेंस। बुझात बा कि हम अपन गाँव के गली–मोहल्ला में ऐह टोला से वोह टोला तक एह टोली से वोह टोली तक फेरू बिना कौनो काम के अइसहीं घूमत बानीं, आ जवन बाति, जवन दिक्कत, जवन जहालते तब ना समुझि में आवत रहे अब साफ–साफ दृश्य चित्र का लेखा सामने आगे खड़ा हो जाता। 'कुछ आग कुछ राग' क पहिलकिये कविता 'गाँव के कहानी' चार खण्ड में गाँव के समूच्चा धत–करम उवाचे वाली बा। शहर आपन सब लच्छन कुलच्छन गाँव के सौंपि के ओकर पानी सोखि लेता आ ओके मिट्टी बनावत जाता। एह कविता में गाँव आपन तब हाल–बेहाल, खुशहाली के साथे हाजिर बा। लगातार बर्बादगी हो रहल बा बाकिर अशोक जी की आँखि में जवन राग बा ऊ देखत बाड़न कि ओही गाँव में जवने में हमनी का बरबादी देखि के बिछिला जा तानी जा, कुछु जियला क कुछु बनला क कुछु बचवला का ललक भी अबहिन जियतार बा। अशोक जी क कविता क ह खास बात बा कि ऊँहाके गाँव के जरत सिवान में झरत पतइन के नीचे इतियात दूबि देखि के एगे नया सपना परोसि देब के हौसिला आ हिम्मत के साथ, अपनहूँ भीतर क हरियरा राग सहेजत रहत बानीं। ई राग बहुत जरूरत राग बा। वर्ण–व्यवस्था का

ऊँच–नीच में फँसल–धँसल गाँव में जान पेरिके गाँव आ शहर के खुशहाल बनाबे वाला समुदाय में ई जवन समानता के भाव क अँइठ आइल बा, ओके द्विवेदी जी बहुत सझुरा के कविता में सहेजल बानीं देखीं–

'हँ, हो बहिनी
हमन केकरा ले बाऊर?
अरे तहरा जमीन बा
त हमरा जाँगर बा, नोट बा
बस एगो जतिए नु छोट बा!

देखल जा सकेला कि जमीन की मुकाबले ओकरा बाबत में जांगर के तो अइल क क्रातिकारी विचार एह शब्द में समाहल बा। जमीन केतनी रहे जागर की बिना त व्यर्थ हो जाई। जमीन होईके का करि, जो जाँगर ना रहीं। जांगर क ई स्वाभिमान जाति की आधार पर बनल ऊँच–नीच की भावना के चुनौती देबे वाला बा। कवि का कहला क ढंग एतना खास बा कि एह समय क जाति आधारित बटवारा जोने में जांगर पेरे वाला जाति समूह के छोट समझला क भावना रहे आजु ऊहे जाँगर ए बँटवारा क एह भेदभाव की खाई के पाटत देखात बा। एकर आगे बढ़ि के अगुवानी करेके होखे के त ई चाहे कि जवने समाज के लोग त्याग जाति की दुनिया में तनी मेल–जोल, राग–रंग, मोह मुरौउवत का आधार पर अपना के छोटका आ बड़का बूझता करेके चाहीं। ओकरी मन से ई भाव खतम

एहसे त उजरत गाँव क मोह भोजपुरी कविता बहुत खास विषय हरदम से रहल बा, बाकिर अशोक जी कविता में, वो ही उजाइ में एगा निमान सपना भी देखत बा। दूर दूसरे देश में अपने गाँव के बिसूरत अशोक जी बहुत मार्मिक कविता लिखले बानी, ओही में ई सपना भी बा जौने के हम बहुत मूल्यवान मानऽतानी

तोहसे बिलग होके, इहाँ एतना दूर
अपना के, बचावल कठिन बा
तहार सउँपल थाती के जोगावलो मुश्किल
मीता, जइसे गुड़ अपना मिठास
आ मरिचा अपनी तिताई से जनाला,
जइसे धान के देस पुअरा से चिन्हाला
हमार पहिचान तोहसे बा!
तहरा से पूरा होला हमार सिरजन
तोहरे से सजेले हमार कल्पना
आ रचेले अइसन संसार–
जवना में खुश रहे जिया–जन्तु
चिरई–च्यूँटी सब!
केहू ना रहे छछाइल
सब के मिले दाना–पानी
सभे लउके अघाइल।

'केहू ना रहे छछाइल / सबके मिले दाना–पानी / सभे लउके अघाइल' इहे त सचहूँ असली–सच्चा, रचनाकार क सपना हो सकेला कि केहू कउनो चीज खातिर जरूरत चीज खातिर बुनियादी जरूरत वाली चीजे खातिर तरसे ना, ओकरा जरूरत क सब चीज सहजे मिले लागे। माने कि सबकर माली हालत एतना दुरुस्त रहे कि सब आपन जरूरत पूरा क सके। कम शब्दन में कहल गहल ई बाति सर्जना के सउँसे इतिहास क सबसे खास बात ह। एही से कहल गहल कि कवि दोसरका ब्रह्मा ह, ओकरा जइसन दुनिया चाहीं ऊ अपनी सर्जना में ओइसन दुनिया बनालेला। त अशोक जी भी अइसन गाँव क सपना देखतानी खाली गाँवे के नाहीं कवि त अइसने देश आ दुनिया भी बनावल चाही जौने में केहू छछाइल ना रहे, सब अघाइल रहे। बाकिर भाई अशोक जी, शहरी लोगन के भूख क, उनुकी छछइले क सीमा ना रहि गइल बा। उहाँ त एतना भूखि बा, पइसा क आ प्रतिष्ठा पद क, हसब आ हैसियत क कि कहला मान क नइखें। हमरा त ई बुझाता क जबले कुछ लोगन क पाँख ना कतरल जाई, कुछ लोगन का बढ़ंती पर, दिन–रात देशवो बेचि के आपन कमाई बढ़वले की अनैतिक हबिस पर रोक ना लागी, तबले हर आदमी की संतुष्टि लायक ई दुनिया ना बन सकी। 'गुनी आ ज्ञानी' कविता में अशोक जी ठीके कहि रहल बानऽ कि दुनिया में तनी मेल–जोल, राग–रंग, मोह–मुहब्बत जवन देखत में त बहुत खास बात ना पटना से चलि आवत रहल ह, ऊ अचानके बहिबिला गइल। देखत में त बहुत खास बात ना बुझात बा, बाकि तनी मजिगरे सोचला से एगो गहिर बाति बा कि 'गुनी आ ज्ञानी' का बीच में अचानके एतना मोट दीवाल कइसे उठि गइल कि दुनूँ क रास्ता क अलग–बिलग हो गइली? कविता सघन विवेक आ गहन विचार के बीच से रूप आ आकार लेले बा– देखी कि कवने तरे एकठे महीन बात के कवि पीठिंया ठोक भाषा में सामने ले अइले में सफल बा–

समाज संकट में जब–जब पुकारे
गुनी संग ज्ञानी–
आ ज्ञानी संग गुनी मिलिके उबारे।
का भइल अचानक / एक युग भितरे

कि उलटि गहल चाल समाज के
कि विपरीत हो गहल बुद्धी
ज्ञान का जोम में
गुन के गहना फेंकाई गइल
समाज आ संस्कृति के/पुरान बिरिछ
एकदम निझाइ गइल

कवि क सवाल बा, हमसे, रउरे से, समाज से सबसे, देश के साथ विचार क से, गुनी ज्ञानी लोग से कि थोरही दिन में कवन अइसन? घालमेल हो गइल कि, जहर क बीज लत्तर बनि के सरपत आ संस्कृति की अमर बेल के चारों ओर से घेर के सुखा दिहलस कि समाज बेतरतीब हो गइल। भारतीय लोग अपना जीवन क जोने सभ्यता आ संस्कृति की प्रवाह की धारा से सीखि के पुरहर मनुष्य बनावत रहे, ऊ प्रवाह क धार कइसे सूखि गइल? कवि क सवाल कौनो सामान्य सवाल ना होला ऊ समाज से जवाब ना माँगेला, जवाब त कवि बुझते रहेला, ऊहो अशोक द्विवेदी जइसन विचार संपन्न, बोध संपन्न कवि के, कवि समाज के सूखत सोच के हरियराबेला, आ चेतावेला कि नालेज आ विज्डम (ज्ञान तथा कौशल) के नया ब्रिटिश औचनिवेशिक सोच आ सभ्यता अलग देले बा ओही अलगाव क परिणाम बा कि ज्ञानी लोग कौशल के महत्वहीन बनाके आपन महत्व बनवले में सफल बा, आ एह में खाई के पैदा कहले में वर्चस्वी बाजार कमी बड़ी भारी भूमिका बा कवि एह खतरा से सचेत कहल चाहेला कि हमनी के बाजार की चक्कर में अपनी व्यवहार के ना गँवाबे के चाहीं, अपना सभ्यता आ संस्कृति के बचाके ही अपना समाज के बचावल जा सकेला, ना बची त ई हमार समाज भितरे–भितरे खोंखर होत चली जाई। अदिमी जानवर आ मसीन सब एक्के तरे हो जाई। ई बड़हन खतरा आजु सभ्यता आ संस्कृति क सामने बाजार तकनीक से पूँजी की वर्चस्वी चरित्र से आ गइल बा। एके ध्यान देबे के चाहीं।

'आँचर तू ऊजर रखिह' ठेठ भोजपुरी में छोट बहर क गजल खास अपना परंपरा की सन्त कवियन की कविता क याद दिलावे वाली बा। अपना घर के आपन बनवले रहे खातिर जेतना जतन हो सकेला कवि ओह सबके बहुत कम शब्दन में कहले में सफल बा। इहें बात कबीर दास, तुलसी दास आ महात्मा गाँधी जी कहत रहि गइलन कि जीवन को कम खर्ची और इमानदारी से जीना चाहिए। कठिनाई पर विजय पावे के खातिर करेजा पर पाथर धके सहनशील होखे के चाहीं–

कम में गुजर–बसर रखिहऽ!
घर के अपना घर रखिहऽ!
मुश्किल दिन जहिया आवे!
दिल पर तूँ पाथर रखिहऽ!

बढ़ि रहल नफरत के कारोबारी समय में कवि प्रेम दिपना ररवे क प्रेरना देत देखत बा सब जगह। पुरही संकलन में। एह गजल में ई बात साफ–साफ शब्दन में सोझा आइल बा–

जब नफरत उभरे सोझा।
तूँ ढाई आखर रखिहऽ।
XX XX
एह करिखाइल नगरी में
दामन तूँ ऊजर रखिहऽ!

अपनी दामन के चमकत ऊजर राखल करिखाइल जुग–जमाना में मुश्किल त बा बाकिर कोशिश एही क होखे के चाहीं कि हम अपनी आँखिन में अपना के पानीदार आ ऊजर बनवले रहीं कविता क ई चरम संदेश हर कवि क अभीष्ट होखेला। कहल जा सकेला कि 'कुछ आग कुछ राग' संकलन क कविता पढ़त गुनत विश्वनाथ प्रसाद तिवारी क कथन बिल्कुल सटीक बा 'कि इन रचनाओं में एक ओर यदि अपने समय का नंगा यथार्थ है, तो दूसरी ओर भोजपुरी क्षेत्र की उस विशिष्ट आकृति, प्रकृति, जीवन और परिवेश की लय और ध्वनि है, जिसके लिए यह भाषा अलग से रेखांकित की जाती है। उनकी कविता में भाषा का अनुशासन भी है और निरीक्षण शक्ति भी, जो एक कुशल कवि की विशेषता है।" हालांकि तिवारी जी क ई कथन उनकी और दूसरे कविता के बारे में बा, बाकिर एह संकलन के बारे में भी ई एकदम से सटीक बा।

'माटी के सोना' कविता के बहाने कवि पूरी औद्योगिक सभ्यता के जवना में साक्षरता आ चतुराई के ज्ञान का पर्याय मान लिहल गइल बा कवि एक ग्रामीण स्त्री के वात्सल्य के भाव के बहाने चुनौती देत दिखाई पड़त बा। पढ़ल–लिखल लोग केतना डरपोक सुविधा जीवी आ आत्मकेन्द्रित होत जात बाकि उनुसे उनुकर महतारी बाप भी छूटत चलि जाता, बाकिर एक निरक्षर सांवला स्वस्थ, परिश्रमी बेटा अपना माँ के अइसन लाड़ला बनत बा कि माँ ओके अपना सोना माने लागत बिया। हमनी का सभ्यता में पिता क चरम आकांक्षा त इहे हो गइलबा कि बेटा पढ़ि–लिखि के खूब कमाई करे, चाहे केहू के लूटि

के घर भरे, चाहे जनता के लूटे आ सरकारी योजना के रुपया लूटे, रुपया से सोनवे न खरीदी। लेकिन ई त लइकवे सोना बा– ई मानल आ कहल सँउसे, सबकी सुख सुविधा के लीलि के अपने सुख सुविधा के बढ़ौले में फँसल सभ्यता वाली मुख्यधारा की गाल पर जोरदार तमाचा बा। अइसन लइका के माता–पिता के बीच क ई संवाद द्विवेदी जी क बहुत दमदार कल्पना आ सृजन शक्ति का प्रमाण बा। उनहीं क बेंवत बा ई लिखले कऽ

कबो, कबो देखि के ओकर फुर्ती निरालस
आ अनथक मेहनत बाबुओ दंग रहि जासु
अकेल में माई से ओकरा करस बड़ाई
चमक उठे उनका आँखिन में जोति.....

भलहीं पढ़लिख के। धन दउलत। ना कमइलस तोहर बेटा। बाकि अलम त भइल बूढ़ बाप–मतारी के। मुस्कियाइ के रहि जाव माई। गरब भरल चितवन से ताकत जइसे कहत होखेः कबो ना लुकाइल चुहानी। आ घर के अलोता हमार सोना!''

पिता क अपनी बेटा की बड़ाई करत पिता की आँखी के जोत, माई क मुस्कान, गरब भरल चितवन, बेटा का निरलस फुर्ती, कबो ना चुलही में लुकाइल ई सब प्रयोग कविता के एगो विशिष्ट अर्थ से भर देत– जवन औपनिवेशिक वस्तुवादी सभ्यता क एगो विकल्प रचला क ताकत भोजपुरी की विचार विवेक संपन्न अशोक द्विवेदी की कविता में बा। उनुकी जीवन में, तबे न कविता में बा। जीवन में ना रही त कविता में अचके कहाँ से आ जाई। चाहीं त ई कि एह संकलन की हर तरह की रचनन पर अलग आभा लिखल जाव– लेकिन ऊ स्थान आ समय की सीमा के देखत फिलहाल एतने, विस्तार से फेर कबो देखल जाई। बधाई अशोक द्विवेदी जी, भोजपुरी के कोश के सभ्यता आ संस्कृति की चिन्ता से भरल अपनी कवितन से समृद्ध करे के खातिर।

❑ 162, सन्त हुसेन नगर, पादरी बाजार रोड, गोरखपुर-273014, 9415314472

गीत

✍ **राकेश कुमार पाण्डेय**

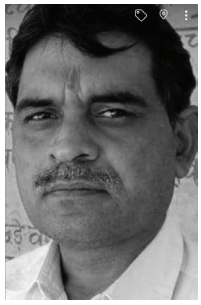

सपने में लउकेला सजनवाँ रे! भऊजी,
माँगेला गवनवाँ के दिनवाँ।
कइसे तेजब आपन ई भवनवाँ रे! भउजी,
माँगेला गवनवां के दिनवाँ।

बारी उमिरिया मोरी लोचरी शरीरिया।
कइसेके पहिनब हम गढ़ूअर चुनरिया।
सूझे नाहीं कउनो बहनवां रे! भउजी।
माँगेला गवनवाँ के दिनवाँ।

नइहर के दुलुरुई गुन सिखहूँ न पउलीं।
सखियाँ सहेली खेलि नेहिया लगउलीं।
पाँचो सुख पउलीं नगीनवाँ रे! भउजी।
माँगेला गवनवाँ के दिनवाँ।

रहलीं भुलाइल हम खोलि के दुअरिया।
चोरवा पइसी गइलें धइले अँकवरिया।
सुतले में रहलीं हम अँगनवा रे! भउजी।
माँगेला गवनवाँ के दिनवाँ।

देखीला चुनरिया मोरी उड़े सतरंगी।
डोलिया कँहार संगे ओहार एकरंगी।
सेजिया पर लागीं हम नदनवाँ रे! भउजी।
माँगेला गवनवाँ के दिनवाँ।

❑ ग्रामसभा हुरमुजपुर,
जनपद-गाजीपुर, उत्तर प्रदेश

गीत

अनिल कुमार ओझा 'नीरद'

लागत बा बसंत अब आइल।।

तीसी,सरिसो खेत फुलाइल।
चना,मटर तक ले गदराइल।
देखि–देखि के मन अगराइल।
कलियनि पर भंवरा मड़राइल।
गंध प्यार के बा छितराइल।
महुआ, आम सजी बउराइल।
लागत बा बसंत अब आइल।।

वृन्दावन जस रास रचाइल।
प्रेम रंग में सभे गोताइल।
वन–उपवन तक बा मुसुकाइल।
कोइलरिया के गीति सुनाइल।
संउसे सृष्टि बाइ अँखुआइल।
लागत बा बसंत अब आइल।।

नव उमंग सभके मन उमड़ल।
सूखल हिय में बादरि घुमड़ल।
पतझर के गम सभे भुलाइल।
शिशिर नया जीवन ले आइल।
प्रियतम पर प्रिय बाइ लोभाइल।
लागत बा बसंत अब आइल।।

ई संवत जाये वाला बा।
नव संवत आवे वाला बा।
नवरातर आवे से पहिले।
लिहले हाथे ढोल–मंजीरा।
सभ के सभ बाटे फगुआइल।
लागत बा बसंत अब आइल।।

बसंत गीत।।

आके मन के नंदन बन में, हे बसंत अभिसार करऽ।
प्रेम–पर्व रचि के,फागुन के, अंग–अंग कचनार करऽ।।

झुकल पलक के खोलऽ पँखुरी, नयनन के बतिआवे दऽ।
अध फूलल कलियनि के जी भरि,आजु बिहंसि मुसुकाये दऽ।।
कंचन जइसन रूप से अपना, ऋतु के एह गुलजार करऽ।
प्रेम–पर्व रचि के,फागुन के ———।।

कुल्हि संकोच के तालाबंदी, आजु चटकि जाये द तूँ।
महुआ जइसन मातल यौवन, आंखि अंटकि जाये द तूँ।।
गली,बगइचा,बन,पल्लव पर, प्रेम–सुधा बउछार करऽ।
प्रेम–पर्व रचि के, फागुन के ———।।

अंतरमन के प्रेम अगिनि के,छू के, फूँकि के छार करऽ।
हरण करऽ हमरा उर के तूँ, आपन उर एह पार करऽ।।
रोम–रोम हो जाउ बसंती, कुछु अइसन उपचार करऽ।
प्रेम–पर्व रचि के,फागुन के ———।।

हम कान्हा अस बंसी टेरीं, तूँ राधा अस रास करऽ।
हम मुसुकाईं होठ–होठ में, तूँ खुलि के मृदु–हास करऽ।।
राजकुमारी बनऽ प्रेम के, हमके राजकुमार करऽ।
प्रेम–पर्व रचि के, फागुन के ———।।

आके मन के नंदन–बन में, हे बसंत अभिसार करऽ।
प्रेम–पर्व रचि के,फागुन के, अंग–अंग कचनार करऽ।।

होली गीत।।

बरिसत बा सुघर रंग।।

1)

बरिसत बा सुघर रंग,
भींजि रहल अंग–अंग।
हुलसत मन में उमंग,
खेलत गिरिधारी।।
संग खेले नन्द–गाँव,
रंग लेले ठाँव–ठाँव।
मोहन के अजब हाल,
देखत नर–नारी।।
आजु बाड़े नन्दलाल,
रंगन से लाल–लाल।
गालन प शुभ गुलाल,
लागत मनहारी।।
रंगन के बहत धार,
होली के बा बहार।
भरि–भरि के मारत जे,
मोहन पिचकारी।।

२)

पावन ई प्रेम रंग,
हुलस भरल ई तरंग।
हरसत बा अंग–अंग,
पा के सुख भारी।।
गोपिन के संग श्याम,
खेलत सुबह से शाम।
बिहंसि–बिहंसि लीला ई,
देखत नर–नारी।।
हरियर रंग श्याम पर,
राधा जब देत डालि।
ले ले के तब गुलाल,
डालत बनवारी।।
सुन्दर सूरति निहारि,
मोहित सभ नर–नारि,
हंसि–हंसि के बार–बार,
लूटत सुख भारी।।

होली के कुछ दृश्य कुँडलियाँ छंद में ——

१)

मोहन खेलत बिरज में, होली राधा संग।
डालत बाड़े श्याम जी, हाथ में लेके रंग।।
हाथ में लेके रंग, भरल बाटे पिचकारी।
बरसत बाटे रंग अलौकिक, अति मनहारी।।
रगरो–झगड़ा होई जात, राधा संग सोहन।
किसिम–किसिम के रंग उड़ावत, सभ पर मोहन।।

२)

राधा जी तिरछी नजर, देखली मोहन ओर।
कनखी मरले श्याम जी, नाचि उठल मन–मोर।।
नाचि उठल मन–मोर, अनोखा खेल रचाइल।
सात रंग सूरुज बिखरवले, मन अगराइल।।
अइसन दृश्य सजल, खेलन में रहल ना बाधा।
डाले लगली रंग चटक, मोहन पर राधा।।

३)

खेल ई प्रेमिल हो रहल, बरसाना में आज।
गावत बाड़े प्रेम से, श्याम सजा के साज।।
श्याम सजा के साज, राग मन मोहि रहल बा।
बरसाना में राधा के सभ खोजि रहल बा।।
कान्हा का अइले बरसाना, मचि गइल ठेलम ठेल।
ग्वाल–बाल मिलि धूम मचवले, श्याम रचवले खेल।।

❑ 28/4, भैरबदत्ता लेन, नन्दी बगान सलकिया,
हाबड़ा-711106 (प०ब०) 9830057686

पिअर चिरई

कल्पना मनोरमा

उमस भरल दुपहिया में कवयित्री निशा सुनान के कविता प्रभा के बन्हले रहे। इ सब कविते के कमाल रहे कि अब प्रभा नीक होखत रहली बाकिर ई का कि ओह दिन सुनान के कविता पढ़त घरी प्रभा तनि सुन मुस्किअइली फेर तुरन्ते उजबुक लेखा देवाल आ छत ताके लगली। उनकर गोर चेहरा एक्के छन में झवरा गइल रहें।

साँझ के खिरकी से आवत सूरज के अन्तिला किरन उनकरा बाथा से भरल माथा के सोहरावे लागल।

तबो प्रभा के मरूआइल आंखि में मोलायमियत ना लउकत रहे।

"कुछहू हो जाए/ मेहरारू कूटत रहिहें सन/ जनम– जनम तलक/ अपना संवेदना के धान/ अँन्हेरिया के ओखर में/ अउर स्त्री रहिहे सन हरमेसा हासिया प/ जदि ना बूझिहें लोग अपना जाँगर के त।" कविता के इ लाइन प्रभा के बेचैन कर देलस।

"मान लेनी कि मेहरारू आपन दुख के देवार अकेलही धकिआ के ले चली बाकिर लुकवावे वाला बात के अइसे जगजाहिर कर दिहल...?

एही बात के लुकवावे में हम आपन सज्जी ज़िनगी हवन क देनी।

लोग सुनिहें त का ना कहिहें, एही से मध्धिमे बोले के चाहीं अउर अपना मन के बाथा कतहूँ ना खोले के चाही। इहे तो सिखावल गइल बा मेहरारूअन के जुगों जुग से त का निशा सुनान मेहरारू ना हई? जे आपन बिडम्बना के हइसे उघार के लिख दिहली।

का उनका पता नइखे कि औरत अउर बाथा के रिश्ता गरभ–नाल लेखा होला।
दरद त मेहरारू लोगन के सलेहर होले, आख़िर कहवाँ जाई ओके छोड़के।"

प्रभा के बहुत दिन के बाद फेर से एगो अवसादी गस आइल रहे। उ टेबुल प राखल पानी के गिलास के मुँह से लगावल चाहत रहली बाकिर सफल ना भइली।

कुछ घरी बाद जब उनकरा के तनी राहत मिलल त डाढ़ सोझ क के मने मन बुदबुदइली.....

"हम स्त्री हई बाकिर अतनो उजबुक ना कि आपन सात गिरह में लुकवावे वाला बाति के हइसे ...!"

अब उनकरा दिमाग़ के नस फाटे लागल रहें। प्रभा अपना लगे हरमेसा से पसरल भुलवना में भुलाइल जात रहली। एही बीच उनकरा के अपना कलाई प तेज चिकोटे के एहसास भइल। उनकरा अवचेतन मन में एगो सवाल उठल कि, "का हमरा जीवन के चुभन अतना बढ़ गइल बा कि जब ना तब महसूस होखे लागत बा?"

इहे सोच विचार में उधियात उ देखली कि जवन हाथ उनकर कुरसी के हत्था प बेजान धइल रहली, ओकरा कलाई प एगो मोटहन मच्छर आपन डंक धँसवले खून चूसत रहे।

मच्छर के आर–पार लउकत पेट खून से लबालब भरके लटक चुकल रहे।

प्रभा ओकरा के धियान से देखली लेकिन हरमेसा लेखा तनिको ना डेरइली।

उनकरा मन में लगातार सवाल उठत रहे। जवन एगो प्रस्न प जा के ठहर गइल रहे।

"कि का इ मच्छर हमार खून पी रहल बा?"
"हँ, इ तहरे खून ह।" उनकरा भीतर से एगो झन्नाटादार आवाज़ आइल अउर भीतरे–भीतर गूंजे लागल।
"त हम आखिर एकरा के आपन खून पीये काहे देत बानी"? प्रभा बुदबुदात अपना से पुछली।
"एकर अंदाजा हमरा के ना, इ त तहरा के होखे के चाहीं।" रोशनदान प बइठल पिअर चिरई चहक के फुर्र से पाँखि फड़फड़ावत आकास देने उड़त चल गइल।
"रु क अरे रु क जो !"
एक छन खातिर प्रभा भकुआइल रहली फेर तुरंते दूसरका हाथे किताब के गते से ध के मच्छर के देह प धाँय देना मार देली, एक–एक हमला से मच्छर राम ओजुगे खतम हो गइले। प्रभा के नस में बहे बाला खून उनकरा हाथ पर फइल गइल रहे। टहटह लाल खून के उ अंगुरी से छूअली। उ एह बात से अचंभित रहली कि ओकरा कटला से उठत लहर ओही लगले बुता गइल रहे ।
उ रोशनदान से ओह चिरई के फेर देखल चाहत रहली बाकिर उ ना लउकल।
प्रभा निशा सुनान के किताब उठाके स्त्री कविता के लाइन ,"स्त्री रहिहें हमेसा हाशिया प" के काट के पेंसिल से आपन लाइन ,"स्त्री हासिया प ना/ बलुक रहिहे हमेशा जीवन के बीचोंबीच।" लिखके मुस्कुरइली।
"हमनी के हद से बेसी बरदास कइले तऽ दुसरा के मौका देला खून चूसे के । बात साँच बा कि ना प्रभा जी?"

केकड़ा

'हमनी के राउर बेटा बहुत बहुत पसंद आइल बाड़े बहिन जी। अब रउरा इ बताईं कि बियाह के बात के करी?' लइकी वाला बहुत नम्र होके ई बात पूछले।

बाकिर सरोजनी के लागल कि केहू उनकरा के छत प से ढाह देले होखे, आ उ गली में भहरा के चारो खाने चित्त भ गइल होखस। जब सरोजनी ना बोललीं त लड़की के चाचा फेर से आपन बात दोहरवले ।

"भाई साहब राउर मतलब हम ना बूझ पवनी? अतना घरी से हमही त बात कर रहल बानी। का ई काफी नइखे ?"

कहते सरोजनी सोचे लगली। पिछला दू साल से जब से बियाह खातिर अगुआ आ रहल बा लोग अइसन बाति अक्सरहा उठावेला लोग। पति से अलगा रहे के खेयाल एकरा से पहिले कबो बाउर ना लागल रहें। अकेलहीं बाल बच्चा के पढ़ावल– लिखावल। तब लोग–बाग ना पुछले...। सरोजनी सोच के अन्हेरिया कूप में डूबल रहली। 'हँ, उ बात त ठीक बा, बाकिर कवनो बड़–जेठ त होखी नू घर में। बिना बूढ़ा–बुजुर्ग के घर कइसन? आखिर बियाह के तय–तवाई हमनी के केकरा से कइल जाओ? बच्चा लोगन के बियाह कइल कवनो गुड्डा गुड़िया के खेल ना नू ह।' लड़की वाला जब अइसन बाति कहले त सरोजनी बिना अबेर कइले अपना जेठ के पता लिखवा दिहली। जे गाँव में रहेले। इ काम उ हर लइकी वालन के संगे करत आवत रहली।
गाँव में रहे वाला जेठ के पता आजो लिखवा देली बाकिर उ मने मन सोचे लगली कि का इ लोग जेठ से मिलके वापिस अइहें जा?' लइकी वाला चल गइल लोग। सरोजनी के गाँव केकड़ा के डिब्बा जइसन लागत रहे। उ कहावत उनकरा के बेर–बेर धियान आवत रहे कि केंकड़ा के डिब्बा प ढक्कन ना लगावल जाला।

■ बी–24, ऐश्वर्यम अपार्टमेन्ट, प्लाट-17,
सेक्टर-5, द्वारका, नई दिल्ली-75, 8953654363

दुनिया रंग-रंगीली

दिनेश पाण्डेय

रंग के मूल संस्कृत के √रञ्ज१ ह। भ्वादिगण आ दैवादिगण दुन्नो में होखला का बादो एन्हनि के सरूप एके मानल जाला। अब चाहे हरिना के शिकार (रजयति मृगान्। न–लोप) होखे चाहे चिरईं के खुश (रञ्जयति पक्षिणरू) करे के बात, बेगर √रञ्ज के बात ना बनी। ई रागर्थक धातु ह। राग२ में बरन, लाली, प्रीति, भाव, संवेग, हरख, आनंद, रोस, गीत–राग सबके अर्थबोध बा। जाहिर बा कि एकर अरथ के छाँहि रंग प पड़बे करी। रंग में राँगा, नाचरंग, रागरंग, रंगमंच, रंग पदारथ, खइर बरन, देहरंग, जुवपन, शोभा, प्रभाव, क्रीड़ा–कौतुक, उमंग, आनंद, दशा, प्रीति, रीति, खुशी वगैरह, सबके सब रँगाइल बाड़े।

अइसन जनाता जे शुरुआती दौर में √रञ्ज में रक्त३ वर्ण मुख्य होखी। रोस, लाज, अनुरक्ति, उत्तेजन, उन्माद, भाव–कुभाव सबमें चेहरा के भभूका भइल, आँखिन के रतनार होखल, सुबह–साँझ के रक्तिमता, रतनजोत के जरि से लेके परास के फुनगी तक, घुँघची के बीआ से लेके बिम्बा तक, गेरुई माटी से लेके पहाड़ के शिखर ले पसरल रकत–किरिन तक, समुंदर के सतह प पँवरत लोहित बरन से आसमान में उतर आइल रामधनु के सम्मोहन तक, देह से बहत लहू के तुचा प पसराव तक सगरे एही वर्ण के राज बा। बाद में समान गुन–धरम–असर से बाकी बरन का घुसपइस 'रंग' का भीतर भ गइल। 'रक्त' में रंगीन वस्तु, गहिर लाल रंग, अनुरक्त, प्रिय, सुहावना आदि के अर्थबोध बा। लाह आ गुंजा के संज्ञा रक्ता ह, रुधिर, तामा, केसर, सेनुर रक्तम् हवें, लाल आँखि वाला रक्ताक्ष, मूँगा रक्तकंदल भा रक्तांग, लाल वस्त्र रक्ताम्बर, खाल रक्ताधार, हृदय, तिल्ली आ जिगर रक्ताशय, लाल कमल रक्तोपल, मधुर कंठी कोइलर रक्तकंठ, सेनुर रक्तचूर्ण, सिंघ रक्तजीव, सुग्गा रक्ततुंड, कबूतर रक्तदृश ह। रजक, रजत, रजनी, रजस्, रजसानु, रजस्वल, रंज, रंजक, रंजन, रंजनी, राँगा, राग आदि शब्दनो के सोत ई 'रञ्ज' धातु ह।

सबसे पुरातन वैदिक साहित्य में रंग के प्रभाव आ छटा सगरी नजर आवेला। असल में अंधकार के गुफा से बहरी निकस आइल दुनियावी प्रपंच एगो बरन–संजाल के सेवाय आउ कुछ ना ह। प्रकृति के हर उपादान आ एन्हनि के पीछे के मातृशक्ति के एगो अटूट रंग–जोजना से जुड़ाव बा। धवर उषा– उदु श्रिय उषस् ४– अरुण बरन घोड़न– अरुण युग्मिरश्वै ५– के विशाल चंद्ररथ प सवार होके आवेली। ऊ आपन बिछंछल जोत से अन्हार के शक्ति के नाश क देवेली। उषा आ रात्रि के चरित बिचित्तर ह–

"सन्नादिवं परिभूमा विरूपे पुनर्भवा युवति स्वैभिरैवैरू।
कृष्णेभिरक्तोषा रूषदिर्भवपुभिरा चरतो अन्यान्या।।" ६

अलग–अलग रूप के दूगो जुवति, उषा आ रात्रि आपन गति से आकाश आ धरती के चारो ओर सनातन काल से चलत बाड़ी। करिया रात्रि आ दिव्य ललछौहीं उषा कबो संगे ना चलस, इनकर राह अलगे–अलगे ह।,

छन–बिसेखी के भेद से भोर आ साँझ के रंग–रूप साँवर, फिर पीयर आ फिर

लाल बरनवाली– 'यावीमरुषीमजुष्रञ्चित्रमुछन्तीमुषसम्' ७– बिछंछल उषा कहल गइल बा। कृष्णवर्ण रात आ शुक्लवर्ण दिन आपन रंग से संसार के रंगत रहेले। सविता घन–अन्हार राह से घूमत देवता आ मानुस के उत्तम काज में नियोजित करेलें। ऊ सब लोक के प्रकाशित करत सोनहुला रथ से आवेलें

"आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयत्रमृतं मर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।" ८

सूरज हिरण्यवर्ण,६ हिरण्यपाणि (सोनबरनी हाथवाला) हवें। उनकर घोड़ा शुभ्र (सफेद), शितिपाद (ऊजर पैर) आ हिरण्याक्ष (काउँस) हवें।१० अनते सूर्य के घोड़ा के शुन्ध्युवरू (सप्तवर्णी) कहल गइल बा। सूर्या के बस्त्र नीललोहित ह। उनकर रथशिल्प में टेसू आ सेमर से बनल गाढ़ रंग के प्रयोग बा।११ एक ऋचा में हरित सोमपान से इन्द्र के मोंछ (किरिन) के हरिताभ हो जाए के रोचक बरनन बा, ताज्जुब कि उनकर दूनो घोड़ो हरिताभ (सबुज) बाड़ें–
"हरीतइन्द्रश्मश्रूणी। उतोते हरितौ हरी।" १२

'हे इनरदेव, हरियर सोम पीये से राउर मोंछ हरियरहूँ भ गइल बा आ दूनो घोड़ो हरियर बाड़े।', अनते इन्द्र के घोड़न के शोणाघृष्णुनृवाहसा (रक्तवर्णी संघर्षशील आ गतिवान) कहल गइल बा।१३ इन्द्र के बज्जर हिरण्यं सहस्रमृष्टि (सोनहुला सौ धार के) ह जेकरा के त्वष्टा बना के देले रहन।

अरुणिम आकाश में रहेवाला सोम के कहईं हरिताभ त कहईं बभ्रु बरन कहल गइल बा। अग्नि हिरण्यकेश (भूअर केशवाला) हवें।१४ ऊ धूमकेतु हवें यानि उनकर रथ के धजा के रंग धूँआ अस बा।१५ रूद्र श्विती१६ (गोर) भा हिरण्यै१७ (सोनकांति) सरूप रंग के हवें। ऊ सूर्य के समान साँवरी रात के आपन उज्जर सरूप से दमन करेले (कृष्णां एनीम् वर्पसा अभिभूत) आ श्यामा रात्रि के दूर क के शुक्ला उषा के प्राप्ति करावेलें (असिन्किम् अपाजन् रुशतीम् एति)।१८
ई कुछ परतुक हवे ई बतावे बदे कि वैदिक साहित्य में रंग के जथारथ बोध आ तेकर चाह तत्कालीन मानुस का मन में कहीं गहिरोर पइसल बा। एह चाहना के हई रूप अचरज पैदा करेवाला बा जहाँ संतान, धन–संपत्ति भा भोजन तक में रंग–प्रभाव आपन तीव्र रूप में मौजूद बा। खरा सोना के गुण, सुभाव आ बरन के संतान के कामना के बानगी देखल जाव–

"तस्य ज्येष्ठं महिमानं वहन्तीहिरण्यवणार्रू परि यन्ति
यह्वीरू।"१९

इहाँ तक कि भोजनो ओज बढ़ावे वाला, पौष्टिक हिरण्यवर्ण घृतमन्नमस्य (आग प करकरावल घिव के वर्ण आस्वाद वाला) होखे, अइसन टिसुना मन में पलत बा।२०
पुराणो काल में सब देवशक्ति के कवनों–ना–कवनों रंग से गहिर संबंध बा। लक्ष्मी सोनकांति (हिरण्यवर्णा), शिवा गौरी, सरस्वती चंद्रकांति (इंदोर्विभ्रति शुभ्रकान्ति), महाकाली नीलम बरन (नीलाश्मद्युति), दुर्गा पद्मा, विष्णु नील, शिव गौर, कृष्ण श्याम, राम साँवर, हनुमत लाल, एही तरे सब देवपुरुष के आपन रंग ह। उनकर प्रिय वस्त्र आदि के तय रंग ह। गरह–नछतरो के रंग ह, सूर्य अग्नि, चन्द्रमा श्वेत, मंगल रक्त, बुध हरित, गुरु पीत, शुक्र श्वेत, शनि नील, राहू कृष्ण, केतु चित्तला हवें।
संस्कृत भा एकरा से बिगसल आन उत्तर भारतीय आर्य भाषा में रंग के नाँव अधिकतर प्रकृति के विभिन्न अवस्था दिन–रात, सुबह–साँझ, आँधी–बरखा, धूप आदि आ ओ में मौजूद बस्तु के रंग से सरिसता के आधार प बा। अग्निवर्ण आग के रंग अस चमकीला लाल रंग ह। अग्नि के सात जिह्वा मानल गइल बा। सबके रंग में भिन्नता बा–

"कराली धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता।
सुवर्णा पद्मरागा च जिह्वारू सप्त विभावसौ।।" २१

अरुण भोर के सुरुज के रंग, कुछ–कुछ लाल, भूअर, पिंगल, गुलाबी, सोनबरन, केसर बरन, के संज्ञा ह। कौसुम्भी, रोहित आ लोहित, केसर, अग्निशिखा भा कुंकुम के रंग हवें। काषाय, गैरिक गेर सरिस रंग हवें। पाटल एही नाम के बिरिछ जस गुलाबी लाल रंग ह। महारजन केसर अस, प्रवाल मूँगा अस लाल ह त रक्तवर्ण, रक्तिम, शोण, शोणित खून जइसन लाल रंग हवें। पिच्छल दाड़िम याकि अनार अस लाल रंग ह। श्वेतरक्त गुलाबी रंग ह।२२

काल, कालिमन्, कृष्ण काला रंग के बोधक हवें। एकर रंगछाँहिन में श्याम सूखल, कुम्हलाइल, झाँवर त श्यामल काला, गाढ़ नील भा साँवर के अरथ बोध करावेलें। कर्बुर भसम, धूम्र आ मेचक धूँआ अस,

मेघवर्ण बदरिआह, कपोतकंठी सिलेटी करिया रंग हवें।२३

उज्ज्वल, धवल, शुक्ल, शुक्लक, शुचि, शुभ, शुभ्र, श्येत, श्वेत सफेद रंग के विविध छाँह हवें।२४ मक्खनी, मक्खनियाँ भा माखनी मक्खन आ मोतिया मोती लेखा बारीक पियरछहूँ सफेद हवें।

कपिञ्जल, पीत, हरिद्राभ, सुवर्ण, पियर रंग के बोधक हवें।२५ कपिश भूअर, सुनहरा, कपिल भूअर, धूसर भूअर धुँआइल, मटमइल, नारङ्ग संतरा के रंग, श्याव, धूम्र आ धूमल गहिरा भूरा, काला आ वभ्रु कडार, पिङ्ग, पिशङ्ग, कद्रु आ पिङ्गल भूअर रंग के वाचक हवें।२६

आकाशवर्ण, नील, लाक्षा, नीललोहित नीला रंग आ एकर छाया ह। चित्र, किर्मीर, कल्माष, शवल आ कर्बुर धब्बेदार, चितकाबर त रोचना उज्जर आकाश भा गोरोचन (पियर) रंग के अरथ में प्रयोग होलें।

दुनिया में जतिने पदारथ ततिने रंग बाड़े, रंग के रहले रंग, रंग के ना रहले रंग। उत्तर भारतीय आर्य भाषा समूह के सब भाषा, बिभाषा भा बोली में शब्द भंडार के सोत एके रहला का ओजह से मामूली धुनि बदलाव का संगे सबमें आन शब्दन का तरे रंग बोधक शब्दनो में काफी समानता नजर आवेला। भोजपुरी रंगीली संस्कृति ह त एकरा में सुभावतन जिनिगी के बहुरंगी छाया के दरसन होखल लाजिमी बा। कवनों भाषा में बाकी गुन के अलावे ओकर एगो तागत एके बस्तु बदे समार्थी शब्दन के ऊ बहुलता ह जवना से ओह बस्तु के अलग–अलग स्थिति, रूपभेद आदि के सटीक परगटन होत होखे। एह नजरिए भोजपुरी के केहू शानी नइखे, रंगन के नाँव संदर्भ में एह तथ्य के जादे सोपट ढंग से देखल जा सकेला।

वैज्ञानिक लोगन के अनुसार करिया, ऊजर, लाल, नील आ पीअर इहे पाँच मूल रंग हवे, ओहू में करिया आ ऊजर अउवल में कवनों रंगे ना हवे, ई महज प्रकाश के मौजूदगी आ अभाव के स्थिति ह जेकरा ओजह से इन्ह रंगन के परतीति होखेला। करिया सामान्य रूप से काला (हिं०) रंग के बोधक ह। एह शब्द से बनल करियई भा कारा ओरमाइल घन बादर के कालिमा ह, करइल, करका करिया माटी भा केवाल माटी अथवा ओकर क्षेत्र ह, करखी मुँह में लगावल जाला बाकिर हरमेसे ना, ओह स्थिति में जब केहू के करम ओकरा के मुँह देखावे लाएक ना छोड़े तब। करँगा करिया दाना के धान के प्रजाति ह, करियठ/करियठी, करियवा, करलूठा एह बरन के मानुस–मानुसी के रंग बदे प्रयुक्त होला। अंजनी, कजरारा, कजला, काला, सियाह भा स्याह, करिया रंग बदे प्रयुक्त आन शब्द हवें। करिखाह के सरिसता कारिख से बा, कादो जगह बदलले एकर अरथो बदल जाला– 'ठाँव जान काजर, कुठाँव जान कारिख'। साँवर के मूल संस्कृत के श्यामल ह जवन तनिक हलुका करिया रंग के मानुस भा आन जीव बदे जादे बेवहार में आवेला। झाँवर करिया पथल भा पाक के करिया पड़ल ईंटा के रंग ह, तेज घामो में झुलस के चेहरा झाँवर हो जाला। कंजई कंजा के फली के रंग ह, कुछ नीलापन लिहले करिया, कौआपंखी काग के पाँख तुल्य, आबनूसी आबनूस की लकड़ी अस, लोहई हलुका करिया। सलेटी/सिलेटी एही नाँव के पथल अस आ सुरमई सुरमा लेखा करिया रंग के कहल जाला। धूमिल मलीन रंग याकि मइलपन के अर्थबोधक शब्द ह। धुँअठल, धुँआइल, धुँआसा, धुँआह, धुँधला में धूआँ भा धुंध के छाया होला।

उज्जर भा ऊजर संस्कृत के उज्ज्वल के तद्भव रूप ह, अरबी मूल के सफेद शब्द एही रंग के बोधक शब्द ह। उज्जर के छाँहिवाला रंगन में कपासी, कपूरी, दूधिया क्रमवार कपास, कपूर आ दूध जइसन सफेदी के अर्थबोध करावेलें। सूफियाना सादा भा हल्का सफेद रंग के बोधक ह। गोर संस्कृत के गौर के तद्भव ह जवन मुख्य तौर प उज्जर रंग के बोधक ह, एकर प्रयोग जादेतर आदिमी के चमड़ी के रंग बदे होला। गोरापन त्वचा के सुघराई के आदर्श मानल जाला। पौराणिक शिव के 'कर्पूर गौरं' कहल गइल बा, शिवानी के गौरी नाँव उनकर गोराइए का ओजह से पड़ल। धवर, धावर, धौर, धौला, शब्द के मूल संस्कृत के 'धवल' ह जवन अधिकतर गाय, बैल के त्वचा के सफेदी के अर्थ में आ एकरा अतिरिक्त चाननी, पहाड़ के बर्फीली चोटी, दिन के उजाला वगैरह बदे प्रयुक्त होला। रुपहला रूपा (रौप्य=चांदी) जइसन सफेदीवाला रंग ह। श्वेत के उजला, शरबती (हलुके पियर आ तनी लाल), संगमर्मरी, मोतिया (तनिक पियरछहूँ), मक्खनी, कपूरी, बादामी (भूरापन), प्याजी (इचि गुलाबीपन लिहले), स्याह (हलुके करिया), सिलेटी, खंजनी अनेक रंगछाया ह।

आम रूप से प्रकृति में लाल रंग के मौजूदगी व्यापक बा एसे एकर हर शेड बदे बेवहार के शब्द प्रयोग बेसी बाड़न। गुन सुभाव आ प्रभाव के नजरिए ई उछाह, नवजीवन, सफलता आदि के प्रतीक ह। ई सकारात्मकता में प्रगति आ नकारात्मकता में किरोध–बिरोध, दुस्साहस दे जाला। एकर जादुई असर बहरी–भितरी कहाँ नइखे?

तबे त कबीर बाबा एह के प्रसार आ असर प भउँचक भइल बाड़े–

"लाली मोरे लाल की, जित देखौं तित लाल।
लाली देखन हम गइन, हम भी हुइगा लाल।।"

लाल रंग के एगो रूप अरुनाई ह, ई भोर किरिन अस सुर्ख लाल, रक्तवर्णी भा सिंदूरी आभा वाली ललाई ह। किरमिजी (Crimson or Scarlet) मटमैला लाल रंग ह, कंदई, खुनिया, रकतार, रत, सुर्ख, आ सुरखाबी खून जइसन लाल रंग हवें, चंपई गहरा फिरोजी रंग ह जवना में नीली झलक होखे, जोगिया लाल मटमैला रंग ह। गुलाबी गुलाब, गेरुआ गेर, तनी जादे लाल मलयागिरी, तांबई भा तामई तामा, बादामी बादाम, रोहित, लोहित भा लोहई लोहपथल, नारंगी भा संतरई, तुरंजी सुर्ख–जर्द नारंगी, सेबिया सेब अस ललछौहीं रंग के बोधक शब्द हवें। करेजई भा चुनौटिया कसीस, मजीठ, हर्रे आदि के योग से बनल लाल रंग के एगो प्रकार ह जवन हृदय भा यकृत के रंग से मेल खात रंग ह। मजीठ पहाड़ में होखेवाली एगो लत्तर ह जवना के जड़ आ डंठल से एक प्रकार के लाल रंग बनेला जवना के मंजिटा, मजीठा भा मजीठी कहल जाला। कुसुमी, कुसुंभी, कुसुम्हीं भा कुसुम्बरी कुछ पीलापन लिहले लाल रंग ह, सिंदूरी सेनुर अस हलुके संतरई आ ईंगूरी एकरा ले जादे नारंगी ह, भगवा सूर्योदय या सूर्यास्त के रंग हवें। काकरेजीध्कोकची लाल आ गहिरा करिया रंग के मेल आ किसमिसी, शफतालवी, कनेरिया कुछ करछहूँ लाल रंग हवें। शंगरफी भा शंजरफी (Vermilion) सुर्ख, खूब लाल रंग ह जवन चित्रकारी, नक्काशी आ दवा का काम में आवे वाला, शंजरफ नाँव गाढ़ सुर्ख रंग के एक खनिज के आधार प बा।

नीला रंग के मौजूदगी ब्रह्मांड में सबसे जादे बा। ई आतम–तत्त आ जल–तत्त से संबंधित रंग ह। एकरा बदे अंगरेजी के ब्लू (blue) शब्द अथवा तनिक उच्चारण भिन्नता से 'बूलू' भोजपुरी में आम प्रचलन में आ गइल बा। समुंदरी बहुते हलुक समंदरजल अस, आसमानी हलुके नीला आकाश जइसन, जमुनिया भा जामुनी जामुन के फर के रंग के, नीलकंठी लीलकंठ के पाँख, फिरोजी फिरोजा नाँव के खनिज के नीलहरित रंग, मोरपंखी मोर के पाँख, बैगनी, भंटई भा तूसी बैंगन के फर के रंग सरिस नीला रंग के बोधक शब्द हवें। कोकई (तु०– कोक) कौड़ी सरिस रंच मात्र पिअरछहूँ आभा लिहले गुलाबी आ नीला रंग के मिश्रित रूप ह। कबूदी, नीलम भा नीलगूँ (Sapphire Blue) गहिर नीला रंग ह। फारसी में नीलम के याकूत कबूद कहल जाला। नीलोफरी गहिर नीला, कासनी, बनफ्शी, बनफशई, सोसनी, ऊदा (अ०– ऊद), सुर्ख फीका नीला रंग ह। नील रंग का बारे में 'पंचतंत्र' में एगो रोचक बात आइल बा–

वज्रलेपस्य मूर्खस्य नारीणां कर्कटस्य च।
एको प्रहस्तु मीनानां नीलामद्यपयोर्यथा।।२८

(बज्जरलेव) (भीति भा मूरत के मजबूत आ रंग पक्का करे बदे प्रयुक्त एगो मसाला), मूरुख, स्त्री, कोंकड़ा मछरी आ नील रंग कबो आपन रंग ना छोड़स।,

भारतीय संस्कृति में पीला रंग के खास अहमियत बा। ई मांगलिकता, बैराग आ संस्कृति से संबंधित ह। एकरा बदे भोजपुरी में प्रयुक्त पिअर भा पीयर शब्द संस्कृत के 'पीत; (पा़क्त) से व्युत्पन्न ह। धात्वर्थ के अनुसार एकरा में परिव्याप्ति आ तिरपिति के अर्थबोध बा। पियरी एह रंग में रंगल धोती–साड़ी, पीलापन आ पीला रंग के अर्थ में ह। पियरछौंहा, पियराई, पियराह पीलापन के अभिव्यक्त करेलें। कनइली कनैल के फूल, केसरिया केसर, हरदिया हरदी, सरसई सरिसो के फूल, कुंदन भा सोनहुला सोना, गंधकी गंधक अस हलका पिअर रंग हवें। जर्दी पीला होखे के अवस्था, भाव भा पीताभा ह, ई अंडा के भीतर के लुगदी अस पीला रंग के बोधक ह। बसंती–बासंती आमतौर प बसंत में फूलेवाला सरिसो के फूल अस पिअर रंग के बाचक ह। रामरजी चटक पिअर रंग ह जवन एक तरे के माटी, जवना के तिलक के रूप में प्रयोग होला, के रंग ह।

फेंटउआ रंग के कोटि में हरियर (हिं० हरा) रंग प्रमुख ह जवन नीला आ पिअर रंग के संजोग से बनेला। बिहारी के एगो दोहा में एह रंगमिश्रण के बड़ा रोचक प्रयोग मिलेला–

"मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं पड़े, श्याम हरित दुति होय।।" २६

निपुन राधा हमार भव बाधा के हर लेसि जिनकर छाँहि मात्र पड़े से कृष्ण हरियर हो जालें।, इहाँ ध्यान देवे के बात बा कि राधा के रंग गोर रकतार आ कृष्ण के रंग नीललोहित ह त उनका प हरियरी काहे ना छाई?

धरती प अधिकतर पादप समूह उनका मे मौजूद

पर्णहरित (Chlorophyll) के कारण हरियरछहूँ दीखेलें। काई ख्कावार (सं०), सीलन वाला पथल, खलेटी, जल सतह आदि प जमे वाली बारीक रेशा जइसन घास अस गहिरा, काही कालापन लिहले सूखल घास जइसन, धानी धान के पौध अस गहिर हरियर रंग हवें त अंगूरी तेकरा बनिस्बत कुछ हलुक, अंगूर नियन। सबुज–सब्ज खुलता ताजा आ सुआपंखी भा सुगापंखी चटक हरियर रंग हवें। मूँगिया (मूँग के रंग के) कुछ सियाह, सिवारी तेकरा ले जादे सियाह आ हलुके नीलापन के साथ हरियर फिरोजी ह। जमुर्रुदी जमुर्रुद (एक फर) जइसन सबुज (Emerald Green) रंग ह।

धूसर रंग के दायरा में धूर के रंग, भूअर (भूरा), धूमैल, मटमइल किसिम के रंग आवेले। शुतुरी शुतुर (ऊंट) के रंग के हलुके भूअर, मटियाला, मटियाह, खाकी, कपोती (कबूतर जइसन) एन्हनि बदे कुछ प्रयुक्त शब्द हवें। अगरई गहिर किशमिशी, जर्द–भूअर, ऊदी अगर के लकड़ी के रंग ह। गर्दखोर ऊ रंग हवें जवन गर्द–माटी से हाली खराब ना होखस। छींट कवनो सतह, कपड़ा आदि प पानी के छींटा से पड़ल धब्बा अस अनेक रंग, कबरा, चितकबरा–चितकाबर, चितला, चित्तीदार सफेद रंग प करिया, लाल याकि पिअर धब्बेदार, धारीदार कई रंग के पट्टी आ बघछल बाघ के रोआँ जइसह रंग हवें। कत्थई, खइर, खैरा खदिर के छाल से बनल कत्था जइसन रंग हवें। रंग के संख्या के अनुसार कोरा, एकरंगा, दुरंगा, तिरंगा, पँचरंग, सतरंगी, बहुरंगा होलें।

मानुस देह के रंग गोर, साँवर, चंपई, गेहुँई, तामई, पक्का पानी, पकिया, अंजनाभ, पियराह, करियठ, करिया भुचेंग होला। आँख के रंग कंजड़ (एही नाँव के एगो पंछी अस हरियर), काँउस, रतनारी, बिल्लौरी (स्फटिक अस), तोताचश्मी, चमकीली, काली, कजरारी, नीली, पियराह (पीलिया आदि बीमारी के दशा में), लाल (गुस्सा, उत्तेजना, रोग में) ह आ खुंखार पशु के दहकीली। केश के रंग करिया, भूअर, कपिश, पिंगल, सफेद, नृजाति आ वयस् भेद से गंगाजमुनी, धवल, सुनहला, लाल होखेला।

भारतीय सभ्यता–संस्कृति में 'अश्व' के बहुत महत्व दिहल गइल बा। वेद में इन्द्र के 'हर्यश्व' कहल गइल बा। उनुकर ई नाँव घोड़न के कारण ह। 'हरि' कुम्मैत भा लाखी घोड़ा ह जवन हलुके भुअराह भा पिअरछहूँ लाल होला। सौरमंडल बदे घोड़ा के रूपक देखे जोग बा–

"कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रह्न ऋजु उत शोणो यशस्वान।" ३०

जोतेलें भूअर–लाल घोड़ा जे एह अहथिर लोकन के इरिद–गिरिद घूमेलें, आसमान में तारा चमकत बाड़े।,

पुरातन में घोड़ा के संपूर्ण अध्ययन बदे 'अश्वशास्त्र' के अलगा से बिस्तार भइल। इहे कारन बा कि घोड़ा के रंग के बारीक–से–बारीक भेद के बाखूबी पहिचानल गइल बा। 'अभिधानचिंतामणि' में हेमचंद्र घोड़न के कइ रंग के जिकिर कइले बाड़ें, ई सब संस्कृत–प्राकृत भाषा में प्रयुक्त होत रहन। कर्क, कोकाह सफेद, खोङ्गाह३१ पिअरछहूँ सफेद, सेराह अमृत भा दूधिया रंग, हरियरू पीला, खुङ्गाह करिया, क्रियाह३२ लाल, नीलक अत्यंत नीला, श्रीयूह कपिल, वोल्लाह३३ श्रीयूह के पोंछ आ अयाल पांडू, उराह थोरिका पिअर आ करिया जाँघ, सुरूहक गदहरंगा, वोरुखान३४ पाटल वर्ण, कुलाह पिअर बरन ठेहुना करिया, उकनाह३५ पिअर लाल या करिया लाल, आकनद सुर्ख कमल, हरिकरू, हालकरू पिअर आ लाल रंग के मेल, पङ्गुलरू सफेद काँच सरिस आ हलाह३६ चितकाबर रंग के घोड़ा हवें। महासामन्त जयदत्तकृत 'अश्ववैद्यकम्' में घोड़न के बेसुमार रंगभेद के उल्लेख बा जवना में से प्रमुख रंगभेद के नीचे के श्लोकन में देखल जा सकेला–

"श्वेत कोकाह इत्युक्तरू कृष्णरू खुङ्गाह उच्यते।
पीतको हरितरू प्रोक्तरू कषायो रक्तकरू स्मृतरू।।
पक्वतालनिभो वाजी कयाहरू परिकीर्तितरू।
पीयूषवर्णरू सेराहो गर्दभाभरू सुरूहकरू।।
नीलो नीलक एवाश्व स्त्रियूहरू कपिलरू स्मृतरू।
खिलाहरू कपिलो वाजी पाण्डुकेशरबालधिरू।।
हलाहश्चित्रलश्चौव खङ्गाहरू श्वेतपीतकरू।
ईषत्पीतरू कुलाहस्तु यो भवेत् कृष्णजानुकरू।।
कृष्णा चास्ये भवेल्लेखा पृष्ठवंशानुगामिनी।
उराहरू कृष्णजानुस्तु मनाक् पाण्डुस्तु यो भवेत।।
वेरुहानरू स्मृतो वाजी पाटलो यरू प्रकीर्तितरू।
रक्तपीतकषायोत्थवर्णजो यस्य दृश्यते।।"७

भोजपुरी में अब्लख (अरबी मूल) सफेद आ लाल रंग के, चीनियाँ पूरा देह सुफेद आ लाल–लाल छींटा, छर्रा कइ रंग के धारी आ बूना, कुल्ला भूअर देह आ ठेहुना से सुम तक करिया टांग, अर्जंटध्रजली एक गोड़ सुफेद आ सारा शरीर दोसर रंग के, नुकरा एकरंगा सफेद, कुमइत (कुम्मैत) चारो टांग, पीठ, केश आ पोंछ

करिया आ शेष भाग लाल काला मिश्रित, आठगाँठ कुम्मैत सुम के छोड़ के सारा शरीर स्याह–सुर्ख, तेलिया कुम्मैत लाल रंग में बहुत हल्का करिया, सुरंग सुर्ख रंग, समन्द बादामी, अलाय पीयर देह, सिरगा सफेद पोंछ, संगली जहाँ–तहाँ पीयर रंग के धारी बाकी देह लाल, सबुज नीला रोंआँ के सफेद, करका सफेद, बिल्लौरी जियादह नीला सबुज, मुश्की हलुक करिया, करमुहाँ करिया मुँह के, लाखी मुश्की के देह प तनी जियादा लाली आ सिराजी सफेद रंग आ पीयर अयाल के घोड़ा हवें।

घोड़ा के तरे भारतीय लोक–संस्कृति में गायो के स्थान महत्वपूर्ण बा। कृषि कर्म के सारा दारोमदार गायकुल प रहल ह। एसे गायन्ह के सूक्ष्म बरन भेद के शब्द काफी बाड़े। कजरी करिया आँख, गोली, लल्लो (रोहितवर्णा) लाल, धवरी सफेद, श्यामा, साँवरी, कृष्णा भा करिअई करिया बरन के गाय हई। श्यामकाली, सुन्नकाली गाढ़ करिया रंग के गाय हई। कबरी, चितकबरी सफेद करिया धारी, सोंकनी सफेदी लिहले सलेटी, छर्री कई रंग, भूअरी, कपिला भूअर रंग, कड़ंजी, कंजी सफेद पुतलीवाली, टिकरी, टिकुली, चँहुली सफेद लिलार के, पियरी, सियरकटी सियार अस रंग, चरनामिरती कुछ सफेद खुर आ चँवरी उज्जर पोंछ के रंगवाली गाय होखेली।

भँइसि के रंग में सौंकारी बिलकुल करिया, ललछँहीं ललाई लिहले चमड़ी, लोहरी, खैरी खइर, भुअरी हलुक भुअराह, करिअई हलुक करिया, धूसरी करिया, ऐन भा थन कनपट्टी आँख आ कान के बीच सफेद धारी आ टीकर माथ प सफेद धब्बाध्धारी के भँइसि होली।

भोजपुरी में रंग के प्रविशेषण के भरपूर प्रयोग होला। रंग खुलता आ मोहक होखे त चोख, चटक, चहचहा, झकास, शोख, दबल होखे त फीका, हल्का, मटियाला होखे त अगरई, सियरभक भा भकभूसरा ह। झलक भा छाँहि रंग बदे –आहध्आही, –आर, –ई प्रत्यय के प्रयोग होला। रंग–बिसेख के प्रविशेषण में रत–रत (लाल), कुचकुच (करिया) दगदग (पिअर) बगबग (उज्जर) फहफह (सफेद), लहलह (हरियर), टहटह (इँजोर,लाल), टेस, (लाल) झाँवर, झोंकारल, भुचेंग, भुच्च (करिया), मजीठ (करिया, लाल) प्रमुख बाड़े। मनहूस रंग बदे मध्यम, दबल जइसन कमतीसूचक शब्द के प्रयोग होला।

रंग सूचक शब्दन के लाक्षणिक आ मुहावरेदार प्रयोग के कमी नइखे। ई 'दुनिया रंग–बिरंगी' त हइए ह, 'रंग बदलती' भी ह। गिरगिट में अनुकूलन भा प्राकृतिक सुरक्षा तंत्र से बाताबरन के अनुरूप रंग बदले के गुन ह। अदिमी में जानवर से सीखे के आदत ह। सीखे के दिशा हरमेसे बढ़ोतरी का ओर आ जोगात्मक होखे के चाहीं, सद्गुन के पिछलगू बनल आदर्श ह बाकिर नकारात्मकता के? अदिमी के 'गिरगिट अस रंग बदलल' कबो आदर्श ना हो सके, एकर परोजन आ प्रभाव के सुचिताई संदेहिते रही बाकिर आजु के इहे हकीकत ह। जानवर के बफादारी संदिग्ध ना होखे, अदिमी के रंग बदले के आदत सदा संदेह पैदा करेवाला अवगुन मानल जाई।

'रंग अइला' में मजा बा, 'रंग कटे' में उहे बात, 'रंग खेले में मजा का संगे फागो खेले के अर्थ बा। सब अवस्था के खेल ह, जेकर जवानी, ओकर जमाना। 'रंग चूअल' भा 'टपकल' जुवपन आ तंदुरुस्ती के निशानी ह, 'रंग पकड़ले' आ 'रंग प अइला' में जवानी का संगे बढ़ोतरी, 'रंग खुले' में रंगत में निखार, 'रंग चढ़ला' आ 'रंग निकलला' में रंगत, प्रभाव, स्वास्थ्य आ रसिकता, 'रंग निखरला' में चटकीलापन, गोरापन, 'रंग चोख भइला' में बेसी प्रभाव आ सुंदरता में इजाफा के भाव होला। कहल गइल बा कि जुवपन, धन, प्रभुता आ अबिबेक, एकहूँ अनर्थ के जड़ हवें, जहवाँ चारो होखस त का कहे के? 'रंग जमावल' (धाक) कुछ लोग के गुन ह त कुछ के फितरत, कयि लोग अनेरे 'रंग बान्हेलें' (रोब, अतिरंजना)। 'रंग ले आवे' (प्रभाव उत्पन्न कइल) के कला से केहू 'रंग जाला' (पूरहर प्रभाव में आइल) त केहू 'रंग में बन्हा' (प्रभाव जमल) जाला। 'रंग–बिरंग' (बहुरंगीपन, रसिकता, विचित्रता) त दुनिया के जथारथ ह बाकिर 'रंगरेली' (मजा लूटल) के अतिरेक कव बे 'रंग फीका' क देला। 'रंग उखड़े' (धाक खत्म, मजा बिगड़े), 'रंग उड़े', 'उतरे' भा 'फक् पड़े' (फीका पड़े, लाज भा डर से चेहरा जर्द होखे), 'रंग बिगरे' (बुरा हाल, प्रभाव बेअसर) अथवा 'रंग में भंग' (आनंद में बाधा) के हालात आ असर से के परिचित नइखे? आज–काल्ह जेकरे देखीं ऊ दोसरा के 'रंग देखावे' (फेरा में डाले) के नीत–रीत प चलत बा बाकिर उनुकर ई हरकत का 'रंग देखावत' (परिनाम) बा, ई अहसास कहवाँ बा? आन के आपन 'रंग में ढलल' (मन मोताबिक चलल) केकरा ना नीमन लागे? एकरा बदे भलहीं केहू के आपन रंग में 'रंग देवे' (छद्म प्रेम, भुलावा) पड़े, बखत अइले 'रंग बदल' लिआई, का हरज? ए में कवनों 'रंग भरल' (अतिरंजित) बात नइखे। ज'ले सवारथ के सिद्धि बा त'ले अबोध भाव से मीरा के

भजन के आसरे 'रंग काटल' जा सकेला– "मैं तो गिरिध्ार के 'रंगराची' (अनुरक्त बानीं)।"

ई त रहे हकीकत के कुछ 'रंग–ढंग' (हालत, बेवहार, लक्षन) बाकिर एकदमें निराश भइला के कवनों दरकार नइखे, दुनिया जव–जव आगर ह। शुभ आ निरमानो के शक्ति आपन 'रंग ना छोड़स' (गुन–सुभाव के अपरिवर्तनशीलता)। जब–जब नैतिकता के छय होला अइसन ताकत सक्रिय हो जालें आ कुटिल अनैतिक शक्ति के 'रंग (प्रभाव) हटा ' के भा कहीं कि उनुकर 'रंग मार' के 'रंग मचा' (रण भा कर्म में बीरता देखावल, धूम मचावल) देलें। ए से 'रंग पिअर' ना पड़े (भयभीत ना होखे के), जरूरत बा सत्य आ न्याय के शक्ति के साथ देवे के।

'सब्जबाग' (व्यर्थ उम्मीदी) देखावल कुछ लोग के अलोत–नीति ह बाकिर कहल जाला नु केहू एक बेरि धोखा दीहल त धिक्कार ह ओकरा प, बेरि–बेरि दीहल त लानत धोखा खाएवाला प। अब एह सोझ बात के बुझे बदे 'लाल बुझक्कड़' (जेकरा पाले हर बात जवाब होखे) बने के कवनो बात नइखे, ना 'लाल' अथवा 'लाल–पिअर' (गुस्सा) होखला के कवनो बात बा। 'लाल साफा–टोपी' (पुलिस) के जनबिमुखता होखे भा सरकारी तंत्र के 'लाल फीताशाही' (सुस्ती) एकरा पाछू जन–जवाबदेही के भूमिका कम नइखे। भोजपुरी के अगड़धत्त कवि कुंजबिहारी कुंजन के कहनाम जे–

"जब जनते बडुवे आन्हर त स्वस्थ सरकार कहाँ से आई,
जब जरिए फरल करइला त ऊपर का फरी मिठाई?"

जनतंत्र में जनता सबसे सरेख ह, ज'ले उनका में जहालत, खंडित सवारथ, मूढ़ता–बिमूढ़ता, आपसी एका के अभाव, दिमागी तौर प 'लाल बत्ती जरले' (दीवालियापन) रही, त'ले जनतांत्रिक सुधार के 'हरियर बाग' (व्यर्थ आशा) रचल बेअरथ होखी। आजादी के बाद कुकुरमुत्ता अस पसर आइल चंट आ स्वार्थी राजनीतिक समूह जनता के हर कमजोरी से वाकिफ बाड़न। भेदनीति ओन्हनि के कारगर अस्त्र बा जवना से ऊ आपन मकसद में सहजे कामयाब नजर आवत बाड़न– 'हरे ना फिटकिरी लागे, रंग चढ़े चोख' (बिना तूलतलाम के इच्छित परिनाम)। एहू माहौल में केहू के 'हरियरी सूझत' होखे (खुशी, भविष्य सुंदर दीखल) त बिबेकीजन का करिहें? तरे–तरे भलहीं 'लाल मरिचा ' भा 'सुर्ख' (कोहनाइल) हो जास, परतच्छ लाचारी उनुका सोझे बा। राजनीति के ई 'सबुज कदम' (मनहूस, अपसगुनी) सबकुछ नँसले जाता। अइसना में 'सब्ज होखे' (प्रसन्नता) के सपना ना देखल जा सके। अब त 'हरदी–चूना के रंग एक भ गइल', नीमन–जबून के भेद ना रहल, 'हरियर भइल' (तरोताजा, खुशी, स्मृति) दुल्लम भ गइल, पता ना 'हरा–भरा होखे' (समृद्धि) के जनकामना के का होई?

पदार्थवाद के अतिरेक, सवारथमुखी सुखेच्छा, हिकारती राजनीति आदि के कारन सामाजिक ताना–बाना में बिखराव आजु के जथारथ ह। 'करिया नाग' (बिखधर) सगरे बाड़े जिनकर 'करिया करतूत' (कुकरम) से आमजन 'करिया तिल चबावे' (कष्ट, परवशता) के हालत में चहुँप गइल बाड़े। लंपटजन 'मुँह काला' क के (अपकृत्य, कलंकित), 'मुँह करिखी' (दोष, कलंक) नइखन लावत बलु 'करिया हाँड़ी माथ प रखले' (कलंक लेले) उत्तान घुमत बाड़ें। 'करिया टीका–कारिख लगावल'– (कलंकित भइल) अब पहिचान आ प्रसिद्धि पावे के हथकंडा बन गइल बा। 'कारिख लागल' अब अपकीरति कटेगरी के चीझ ना रहल बुला। अब 'साँचा के बोलबाला, झूठा के मुँह काला' वाली कहाउति बेअरथ भ गइल, आज–काल्हु साँचे के मुँह 'करिया होखऽता', ए से कि थोरिक हया हुँहईं बाँचल बा, उनुके 'चेहरा जर्द होखता', ए से कि लोकभय के जगह उहवें निरापद बा। नीति–सिद्धांतो 'एक रंग–ढंग प ना रहले' (भरोसा न रहल), का प आस–बिसास जागे? 'करिया पहाड़' (भयानक, मोटा काला आदमी) के पाछू सुकसुकाह दिल होखी, 'तामई मुख' के अलोते 'सफेद चेहरा' होखी, उफान मारत 'खून के ललाई' के ओट में 'उज्जर रकत' होखी, एकर पुरवासाख केकरा भिर हो सकेला? सबे एक–दोसरा के 'करिया बार बरोबर समुझे' (तुच्छ समुझे) के उच्चग्रंथि से ग्रस्त बा। 'बदन नीला' (आघात के चिन्हँ) बा, 'आँख काली–पीली' (गुस्सा) तबो ई लोक 'करिया कउआ खइले' (दीर्घजीवी) बा त अचरजे के बात ह।

जादे उपदेस नीक ना ह। ई जानल तथ्य ह कि 'सूरदास के कारी कमरिया चढ़े न दूजो रंग।'

संचार नगर, खगौल, पटना।

संदर्भः–

१. रञ्ज रागे'।/२. रञ्जभावे घञ्। न–लोप।/३. रञ्ज करणे क्तरू।/४. ऋग्वेद ६.६४.१/५. ऋग्वेद ६.६५.१

/६. ऋग्वेद १.६२.८/७. ऋग्वेद १.७१.१/८. ऋग्वेद १.३५.२/९. ऋग्वेद २.३५.१०/१०. ऋग्वेद १.३५.११/११. ऋग्वेद १०.८५.२०/१२. सामवेद पूर्वार्चिक, मं०सं० ६२३

१३. ऋग्वेद १.६.२ १४. ऋग्वेद १.७९.१

१५. ऋग्वेद १.२७.११ १६. ऋग्वेद २.३३.८

१७. ऋग्वेद २.३३.९ १८. ऋग्वेद १०.३.१

१९. ऋग्वेद २.३५.९ २०. ऋग्वेद २.३५.११

२१. अग्निपुराण २२. देखे जोग, अग्निपुराण, ३६०ध्५५– "रोहितो लोहितो रक्तः शोणः कोकनदच्छविः। अव्यक्तरागस्त्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पाटलः।।" ख लाल के रोहित, लोहित आ रक्त कहाला। लाल कमल जइसन रंग शोण ह। अरुण ऊ ललाई ह जवन अस्पष्ट होला। पाटल गुलाबी के कहल जाला।, २३. देखे जोग, अग्निपुराण, ३ ६०ध्५४– "कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः।"

२४. देखे जोग, अग्निपुराण, ३६०ध्५२–५३ "शुक्लशुभ्रशु चिश्वेतविशदश्वेतपाण्डराः। अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः।" शुक्ल, शुभ्र, शुचि, विशद, श्वेत, पाण्डर, अवदात, सित, गौर, वलक्ष, धवल अफ अर्जुन, ई सफेद रंग के पर्याय हवे। ,

२५. देखे जोग, अग्निपुराण, ३६०ध्५४ "पीतो गौरो हरिद्राभः पालाशो हरितो हरित।"

२६. देखे जोग, अग्निपुराण, ३६०ध्५६ "श्यावः श्यात् कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते। ख्भूअर रंग के श्याव भा कपिश कहल जाला आ करिया के संगे लाल के धूम्र आ धूमल। कडार, पिङ्ग, पिशङ्ग, कद्रु आ पिङ्गल भूअर रंग के वाचक ह। ,

२७. देखे जोग, अग्निपुराण, ३६०ध्५७ "चित्रं किर्म्मीर कल्माष शवलैताश्च कर्वुरै।" चित्तीदार के पर्याय चित्र, किर्मीर, कल्माष, शवल आ कर्बुर हवे।,

२८. पंचतंत्र, १.२८३/२९. सतसई/३०. ऋग्वेद १०.२०.६ ३१. अभिधान चिन्तामणि ४ध्३०३/३२. अभिधान चिन्तामणि ४ध्३०४/३३. अभिधान चिन्तामणि ४ध्३०५/३४. अभिधान चिन्तामणि ४ध्३०६/३५. अभिधान चिन्तामणि ४ध्३०७/३६. अभिधान चिन्तामणि ४ध्३०८

तर्क के चउपाल

चमत्कार

अजित कुमार राय

सतजुग आ त्रेता क अनुभव त हमके नइखे, बाकिर वर्तमान वैज्ञानिक युग में तांत्रिक साधु भा हनुमान जी के मंदिर क पुजारी वगैरह का तिलिस्मी कारनामा से हमार कई बेर सामना भइल बा। ओह राजयोगी से भी साक्षात्कार भइल बा, जे हमरा मन में निहित निगूढ़ विचार के पढ़ लेंसु। विज्ञान क विद्यार्थी परावैज्ञानिक अनुभव से गुजरल बा। लेकिन इहवाँ साँप कटला पर झारे वाला बक्कस बाबा भा कइसनों हड्डी टुटला पर बइठावे वाला पोतन क चर्चा अभीष्ट नइखे। ना कवनो मदारी भा जादूगर क नजरबंद से उपजे वाला आँख क धोखा एहिंजा विषय बा।

एक बेर एक जुलाई के सत्र के पहिला दिने विद्यालय जात रहलीं। ओही दिन गाँव से कन्नौज आइल रहलीं। राजधानी होटल से आगे बढ़लीं त एगो साधू हाथ देहलन। मोटरसाइकिल रोक देहनीं त ऊ श्वेताम्बर संन्यासी पूछलन कि हमरो के लिहले चलब? त हम कहनीं कि बइठीं। उनकर सधुक्कड़ी भाषा, फक्कड़ाना अन्दाज आ संवाद का दार्शनिक भंगिमा से हम सम्मोहित हो गइलीं। तीन–चार किमी आगे गइला पर ऊ गाड़ी रोक दिहलें। कहे लगन कि हम नैमिषारण्य जात बानी। एक टीन घी क इन्तजाम हो जाई? यज्ञ खातिर।

त हम कहलीं कि एहिंजा घीव खाए के नइखे मिलत बहुत अदिमिन के आ रउआं हवन कुंड में एतना फूंक देइब! एक–दू किलो घी क इन्तजाम त हो जाई। लेकिन अबहीं हमके विद्यालय के देरी होता। लवट के बैंक से हो के आइब त राउर व्यवस्था क देइब। कहे लगलन कि एक मिनट गाड़ी से उतर जाईं। फिर बरिआई से बइठावे लगन। साधु जी कहलन कि एगो साफ कंकड़ खोज ले आव। सामने एगो छोट शिवाला रहे। त घास साफ रहे। एगो पत्थर क छोट कंकड़ी हम ले अइनीं। त कहलन कि मुँह में डाल ल, हमके ना चाही। मुँह में डललीं त कहतान कि एके टाफी नियर चबा जा। हम कहलीं कि आप क दिमाग खराब बा का? हमार दाँत तोड़वावे के बा? ऊ बारम्बार राजाज्ञा दिहले त हम दाँत से कंकड़ दबवलीं त चाकलेट जइसे मीठ लागल। धीरे धीरे टाफी नियर चबा गइलीं। फिर ऊ साधू जी कहलन कि रूपया बा? त हम सौ रूपया क एगो नोट निकलनीं। कहलन कि एके चपोत के अपना मुट्ठी में रख ल। मुट्ठी खोललीं त ऊ नोट हरियर स्फटिक क शिवलिंग में बदल गइल। ऊ आजो हमरा पूजा क आलमारी पर रखल बा। फिर हम कालेज चल गइलीं। लवटत समय मानीमऊ बैंक से दस हजार रूपया निकललीं। एक हजार एगो पाकिट में आ नौ हजार दुसरका जेब में रखि लेहलीं। हमरा संगे एगो फर्रूखाबाद क अध्यापक राधाकृष्ण भी रहलन। अइलीं त साधू जी हमार इन्तजार करत रहलन। हम एक हजार क गुलाबी नोट निकाल के कहलीं कि लेईं। त ऊ कहताड़न कि हमके भिखारी समझत बाड़ का? त हम कहलीं कि आपे त माँगत रहलीं हं। त फिर ऊ कहलन कि अच्छा दू बेर अपने चपोत के माथा से लगा लऽ। जब हम माथा से हाथ हटवलीं त ऊ एक हजार क नोट जाने कहाँ उड़ गइल। ऊ कहलन कि जा हम ऊ रूपया ले लिहलीं। फिर हम आड़ में जाके दुसरका जेब टटोले लगलीं। त ऊ शेष नौ हजार जस क तस रहे। राधाकृष्ण अपने बारे में पूछे लगल। ऊ साधू बतावे लगन कि तोहरा घर क दुआर पूरुब मेहें बा। दुआर पर एगो नीब क फेंड़ बा अउर एगो गाय बान्हल बिया। हम कहलीं कि मरदवा भाग इहवाँ से जल्दी। नहिं त ए माया जाल में बहुत नुकसान हो जाई। फिर उनकर बांह पकड़ के खींच लेहलीं। साधू जी के प्रणाम क के भगलीं जा। ऊ सांवला साधू सिद्ध त रहे बाकिर संत ना रहे। अइसन मकड़जाल में कई बेर फँसके निकल गइल बानी। ऊ एतना समृद्ध आ शक्ति शाली रहितत त उनके दुसरे से मँगला क का जरूरत बा! जे आपन दुख दूर नइखे क सकत, ऊ दुसरा क दुख कैसे दूर करी? अपना तंत्र विद्या क उपयोग लोक कल्याण खातिर होखे त ठीक बा, लेकिन अब ऊ प्रदर्शन क विषय अउर अहंकार क आभूषण बन गइल। रामकृष्ण परमहंस जी से एक आदमी आ के कहल कि फलाने महात्मा गंगा नदी का पानी पर खड़ाऊं पहिन के चलेलन। त परमहंस जी कहलन कि ऊ नाव क दू रूपया बचा लेलन। उनका सिद्धि क कीमत दू रूपया बा। आज हमनीका घरे बइठल अमेरिका में रहे वाला रिश्तेदार से वीडियो काल पर बतिया लेतानी जा, ई चमत्कार नइखे का? पुष्पक विमान से आम आदमी उड़ रहल बा, ई कवनो चमत्कार से कम बा? मोबाइल खुदे एगो जादुई छड़ी बा। तीन दिन बाद जम के बारिश होई, मौसम विभाग क भविष्य वाणी, आकाशवाणी आ दूरदर्शन से विश्व क समाचार बाँचे में संजय क भूमिका नइखे का?

एहू ले बड़ चमत्कार बा कि आशाराम आ राम रहीम भा रामपाल जइसन महागुरु–घंटाल लोग जेल का जुल्फ में कैद हो गइल बा आ कवनो चमत्कार क के बाहर नइखे आ पावत। सब कर भविष्य बतावे वाला आपन भविष्य नइखे देख पावत। धर्म के जेतना हानि नास्तिक मानुष से बा, ओसे ज्यादा नुकसान धर्म के गोरखधंधा बना देबे वाला पाखंडी लोगन से बा। हमनीका धार्मिक संस्कृति के ध्वस्त करे में विदेशी साजिश से ढेर एही बाबा लोगन क हाथ बा। अब राजनीति आ धर्म दूनों व्यवसाय बन गइल बा। श्रम–संस्कृति के उल्लंघन कइ के करोड़पति बन जाए वाला रोजगार! घर बइठल भरे भंडार। धर्म के ए विकृत रूप क सामाजिक विस्तार हो रहल बा। ईहो चिंता क विषय बा। धर्म के अफीम बना के नइखे बाँटे के। धर्म कबो दंगा ना करावेला। धर्म क गहरी समझ क अभाव में कुल फसाद होला। अध्यात्म त बतावेला कि तोहरो भीतर ईश्वर क उहे ज्योति जगमगाता, जवन हमरा भीतर। मनुष्य आ मनुष्य में कवनो तात्विक भेद नइखे। ई अद्वैत दर्शन भारत के सामासिक संस्कृति के मूलाधार ह। जीवात्मा के परमात्मा बनावे वाला ज्ञान योग सबसे बड़ चमत्कार हऽ। विश्व–मनस् भा समष्टि में विलयन का बाद कवनो चमत्कार क जरूरत अपना आपे खतम हो जाला।

❑ विष्णुपुरम् कालोनी न्यू कचहरी रोड,
सरायमीार कन्नौज-209827, 9839611435

आचार्य श्रद्धानंद अवधूत

राम बहादुर राय

आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी किंचित एगो व्यक्ति ना रहनीं बल्कि परम सत्ता के दिव्य अभिव्यक्ति रहनी। एहिसे कहल जा सकेला कि राउर जनम ना राउर अवतरण भइल रहल। जनपद बलिया में स्थित सुरहीं गाँव के एगो प्रतिष्ठित किसान परिवार में जून १९१९ में रावुर अवतरण भइल रहल। आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के गाँव सुरहीं राश्ट्रीय राजमार्ग–३१ पर बाटे। जब ट्रेन रूट से आवेके रहेला दिल्ली चाहे हावड़ा के तरफ से, तब बक्सर उतरि के उहँवा से कवनो साधन पकड़ि के गंगा जी पर बनल बाबू कुँवर सिंह सेतु चाहे एगो नया पुल बन गइल बाटे, अभी तीन लेन के एगो अउरी पुल बने खातिर इंतजाम सरकार कर रहल बा। पुल से गंगा ओह पार पहुँचत ही बिहार के सीमा पार कर के उत्तरप्रदेश के भरौली गाँव पहुँच जाइब उहँवा से दूगो रास्ता बाटे जवना में पहिला विपरीत दिशा में उजियार से होत गाजीपुर–बनारस.....दिल्ली....चलि जाई। दुसरका वाला राहि पकड़ि के जवन हमार गाँव भरौली... फिर सोहांव ...बसंतपुर तब सुरहीं..नरहीं होत सीधा बलिया जिला मुख्यालय निकल जाला। जब भरौली के तरफ से जाइल जाई तब सोहांव, बसंतपुर के बाद सुरहीं पड़ी आ उहे आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के गाँव सड़क के बाँयी तरफ बहुत सुंदर और बहुत पुराना हवेली नियर दुआर बाटे।

आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी

नाम–श्रीपति राय (बाद में श्रद्धानंद अवधूत) जन्म–जून १९१९/जन्म स्थान–सुरहीं, ब्लाक–सोहांव, जनपद–बलिया, उत्तर प्रदेश/ पिता श्री शिवनंदन राय और माता श्रीमती पारो राय जी/ शिक्षा–प्रारम्भिक पैतृक गांव सुरहीं, हाई स्कूल १९४४ में साहित्य रत्न (प्रयाग हिंदी विश्वविद्यालय), इंटरमीडिएट बलिया से, उच्च शिक्षा बनारस अउरी इलाहाबाद (प्रयागराज)/नौकरी–एक्साइज इंस्पेक्टर(१९४४–१९६४)/ नौकरी से त्यागपत्र–सन १९६४ में नौकरी से त्यागपत्र/सन्यास–सन १९६४ में कापालिक एवं सन १९६६ में अवधूत दीक्षा/संगठन से जुड़ाव–आनन्द मार्ग/पद–प्रथम पुरोधा एवं अध्यक्ष सन १९९०

आचार्य श्र)ानंद अवधूत जी के मुख्य रचना

(क)–भोजपुरी ––

१–महाविश्व / २–आदर्श भोजपुरी व्याकरण ३–आनन्द मार्ग का परिचय ४–मणिमाला –१ ५–मणिमाला–२

६–श्रद्धासुमन (खण्ड १ से लेकर खण्ड २१ तक..लगभग १0,000 श्लोक ।

(ख)–हिंदी ––

१–षोडस विधि (हमारे मौलिक कर्तव्य –सन १९७८ में) २–रत्नाकर भाग १–एवं भाग २ ३–अनमोल विचार

४–संस्मरण और विवरण (आत्मकथा) ५–हिंदी काव्य इत्यादि

(ग) अंग्रेजी –––

1–My spiritual life with Baba –1991 2–SiÛteen Point (Our Fundamental duty)

3–The great Universe 4 & A spiritual Treasure of Jewels etc

(घ) संपादन ––

१–प्रज्ञा भारती (अंग्रेजी में) २–आनन्द रेखा (हिंदी में) ३–आनन्द युग (हिंदी में)

आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के यात्रा

१–जर्मनी २–अमेरिका ३–कोलम्बिया ४–फ्रांस ५–इटली, ६–स्विट्जरलैंड ७–नेपाल इत्यादि

महान संत, विद्वान, तपस्वी सन 2008 रांची में निधन।

अवधूत जी बहुत ही विलक्षण प्रतिभा से भरल रहनी लेकिन दुर्भाग्य से इनका बाबू जी के देहावसान तब हो गइल जब आप मात्र नव वर्ष के रहनीं। प्रारम्भिक शिक्षा त पैतृक गाँव सुरहीं से ही भइल लेकिन हाई स्कूल, इंटरमीडिएट की पढ़ाई बलिया से सम्पन्न भइल। आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के बचपन के नाम अर्थात सन्यासी बनला से पहिले श्रीपति राय रहल। श्रीपति राय जी में बचपन से धर्म के प्रति बहुत उछाह रहल मसलन रोजे रोज समय से गंगास्नान, आसन, धर्म साधना में लीन रहत रहनी। क्रमशः इनकर पूरा झुकाव साधना धर्म के प्रति होत गइल। फिर गाँव के बड़–बुजूर्ग लोगन के संगे बइठि के रामायण, महाभारत, गीता के धार्मिक पाठ करत रहीं। अब इंटरमीडिएट की पढ़ाई के बाद आगे के शिक्षा–दीक्षा बनारस अउरी इलाहाबाद जवन अब प्रयागराज में, पूरा भइल। श्री श्रीपति राय जी साहित्य रत्न के परीक्षा प्रयाग हिंदी विश्वविद्यालय से पास कइनीं। तदुपरांत कुछ दिन तक गाँव के आसपास के स्कूलन में अध्यापनो का कार्य भी कइनी।

श्री श्रीपति राय जन्म से ही कुशाग्र बुद्धि के रहनीं ।सन १९४४ में आपके नियुक्ति सेंट्रल एक्साइज विभाग में हो गइल फिर पदोन्नत भइल तब एगो उच्चाधिकारी के पद पर लहेरिया सराय, दरभंगा बिहार में नियुक्त भइनीं। इहे जगह हवुए जहंवा से श्रद्धानंद जी के मन में परिवर्तन आइल। अइसन परिवर्तन भइल कि अपना पद से जनवरी १९६४ में त्यागपत्र देई के सब कुछ छोड़ि छाड़ि के १४ फरवरी सन १९६४ में आनन्द के मार्ग संस्था में सम्मिलित होके के श्रद्धानंद बन गइनी। आनन्द मार्ग के संस्थापक श्री आनन्दमूर्ति जी के सानिध्य में सन १९६४ में कापालिक दीक्षा आ सन १९६६ में अवधूत के रूप में दीक्षित श्रद्धानंद अवधूत बन गइनीं। आनन्दमूर्ति जी कहत रहनी कि श्रद्धानंद जी दूसर ग्रह पर भी बहुत नीमन काम कइले रहनी एहीसे हम एह पृथ्वी मांई पर काम करे खातिर इनकरा के लेके आइल बानी ।

सन १९७५ में हमनी के देश में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी के लगावल गइल आपातकाल में आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के गिरफ्तार करि के तिहाड़ जेल में बन्द कर दिहल गइल। जहँवा पर संघ के उच्च पदाधिकारियन के संगे–संगे चौधरी चरण सिंह, श्री चन्द्रशेखर, श्री राजनारायन, श्री प्रकाश सिंह बादल अइसन नेता पहिलहीं से ही बन्द रहलें। जेल में आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के नियमित साधना अउरी राम, कृश्ण, शिव के सम्बन्ध में व्याख्यान सुनि के सब लोग प्रसन्न हो जात रहल। अउरी अवधूत जी के सभ कोई बहुत बड़ाई करे लागल। तिहाड़ जेल के भीतरे अवधूत जी अपन पुस्तक 'महाविश्व' लिखनी जवन भोजपुरी भाशा में इहाँ के पहिला पुस्तक हउए।

आनन्द मार्ग संगठन में जनरल फाइनेंस सेक्रे. टरी अइसन विभिन्न पदन के निर्वहन करत संस्था द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आनन्द युग, आनन्द रेखा' आ अंग्रेजी पत्रिका 'प्रज्ञा भारती' के सम्पादन भी कइनी। सन् १९९० में आनन्द मार्ग के प्रमुख श्री आनन्दमूर्ति जी के देहावसान हो गइल। आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के संस्था के प्रथम पुरोधा चुनल गइल। आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी हिंदी, अंग्रेजी अउर बांग्ला सहित तीन भाशा में लिखत रहनी लेकिन विशेश रूप से भोजपुरी भाशा में ढ़ेर लिखत रहनी। ई सब भाशा में आध्यात्मिक विशय पर इहाँ के बहुत ढ़ेर पुस्तक प्रकाशित भइल बाटे। श्रद्धानंद अवधूत जी असाधारण प्रतिभा संपन्न होखला के बाद भी स्व सत्ता बोध से परे परमसत्ता के गोदी में अपना के आबद्ध मानत रहनी।

भोजपुरी भाशा के मान–सम्मान कइसे मिले, एकरा खातिर अनवरत प्रयास में जुटल आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी भोजपुरी व्याकरण, महाविश्व,आनन्दमार्ग एक परिचय, मणिमाला (दो खण्ड में) जइसन दस हृदयग्राही रचननन के सृजन करि के भोजपुरी भाशा के न सिर्फ

अमूल्य निधि सौंपनीं बल्कि भोजपुरी के व्याकरण देके भाशा के रूप में प्रतिश्ठापित करे के अनूठा अउरी अद्वितीय प्रयास कइनीं। भोजपुरी व्याकरण के सरल अउरी सहज रूप में देखे के होखे तब आप इहाँ द्वारा रचित पुस्तक 'आदर्श भोजपुरी व्याकरण' पढ़ सकत बानी

आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के आदर्ष भोजपुरी व्याकरण में कुल २० गो अध्याय बाटे।

पर्यावरण सम्बन्धित रचना के कुछ बानगी मैं पेश कर रहल बानी.....

ई दुनिया हमनी के घर हऽ
एकरा के सुघर बनाईं जा
एकरा के खूब सजाईं जा!

१–सभे ह आपन देस
देस–देस के लोगन से मिलऽ
सभ के प्रभु का भेश में देखऽ
सभके आपन नियर बुझऽ
सभके अपने गरे लगावऽ
तबे होई कल्याण।

२–आँखि त बटले बा, राति में ना सूझेला
जब दिन होला तबे देखाला।
लउके खातिर सूरज के उगल जरूरी हऽ
एहितरे दुनिया में, ईश्वर का प्रकास में,
सभ किछु साफ साफ सुझाई देला।

३–ए सागर के कुल्ही लहरिया
आकास के छुवत बाड़ी सऽ
ए पोखरिया के कुल्ही गगरिया
पानी से भरल बाड़ी सऽ
तहरे लगे जाली सऽ।

४–रूप में अरूप के देखऽ
सभ में स्वरूप के देखऽ
दृश्टि जब बदल जाई तऽ
सभ किछु पवित्र हो जाई।

आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के 'श्रद्धासुमन' (काव्य) भोजपुरी के अमर रचना हऽ एम्मे ईश्वरोपासना, समर्पण भाव आ तत्वबोध के बाटे। कुल इक्कीस खण्ड में प्रकाशित एह अमर कृति पर आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के भोजपुरी जगत के सर्वाधिक प्रतिश्ठित सम्मान 'भोजपुरी भास्कर' से सम्मानित कइल गइल रहल। एह काव्य खण्ड में लगभग–लगभग कुल दस हजार भोजपुरी के पद सम्मिलित बाटे। गम्भीर आध्यात्मिक आ दार्शनिक चिंतन के अतिरिक्त एकरा में पर्यावरण, सामाजिक आचार व व्यवहारिक जीवन के विभिन्न पहलुवन पर बहुत ही व्यवहारिक ढ़ंग से प्रकाश डालल गइल बा। एकरा में भोजपुरी भाशा के मानक रुप निखरल लउक रहल बाटे। हिंदी आ भोजपुरी के प्रख्यात साहित्यकार डॉ विवेकी राय जी के अनुसार 'श्रद्धा सुमन' भोजपुरी के विनय पत्रिका हउए। डॉ विवेकी राय जी श्रद्धा सुमन के समीक्षा में लिखत बानी कि... 'मैने इस काव्य की तुलना गोस्वामी तुलसीदास जी की विनय पत्रिका से अनावश्यक या आतिरेक में नहीं की है बल्कि स्वस्थ समालोचना की हैसियत से की है। श्रद्धा सुमन इस तुलना के सर्वथा योग्य है।

चूँकि डॉ विवेकी राय जी के आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के घरे बहुत आना जाना रहत रहल। डॉ विवेकी राय जी के जनम ननिहाल में भरौली हमरे घरे (राम बहादुर राय पुत्र श्री रामायन राय) भइल रहल। उनकरे मुँह से सुनिके हमार पिता जी आ हमार परिवार परिचित भइल रहल।

गुरू आनन्दमूर्ति जी ईश्वर के रूप में अवधूत जी लिखले बानी
तोहरे कृपा से देखत बानी
चारों ओर हम तोहके पावत बानी
दुनिया के चप्पा–चप्पा के ज्ञान तोहार
देखिके आश्चर्य करत बानीं

————————————

हे बाबा, मात्र तूं ही कऽ रहलऽऽ..
अबहियों तूं ही कऽ रहल बाड़ऽ...

xx xx xx

सभ केहू भगवान के खोजेला
भगवान भक्त के खोजेलन।.....

xx xx xx

जब तूँ आवेलऽ ए धरती पर
भक्ति के धारा बहा देलऽ
नदी नाला सुखा गइल रहेलन स
भक्ति के जल से भरि जालन सऽ
जब तूँ आवेलऽ धरती पर
भगवान में आस्था जगावेलऽ

धर्म की स्थापना खातिर अधर्म के नाश खातिर परमपुरुश के अभिप्रकाश के स्पश्ट घोशणा, साधक के साधिकार घोशणा के रूप में श्रद्धासुमन में उपलब्ध बा। लेकिन भगवान के ई लुका–छिपी के खेल षेश जन के कवना तरह से अज्ञात रहल एगो सुखद आश्चर्य जनक सत्य।

एह बेर आनन्दमूर्ति जी अइलन
धरम के फेरु संगठित कइलन
एतना काम कऽ के चलि गइलन
केहू ना उनके जानि सकल।

.....मसलन ऐसा महाकाव्य (श्रद्धासुमन) भोजपुरी भाशा अउरी आनन्द मार्ग के वर्तमान आ भावी पीढ़ी के भक्त लोग खातिर आज बहुत उपयोगी बा।

आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के घर के नाता प्रशांत राय जवन कि एगो भूगर्भ वैज्ञानिक बाड़न, उत्तराखंड में पोस्टेड बाड़न...हमार सहपाठी हउवन। हमनी के दूनों जना सेवा संघ इंटरमीडिएट कालेज सोहाँव से विज्ञान वर्ग से एक ही कक्षा में पढ़ले हंई जा। सन १९८३–८४ से ही हमार भी आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के घरे आना जाना होखे लागल रहल। इनकर पूरा परिवार पूर्ण सांस्कारिक अउरी उच्च स्तरीय पहिलहीं से रहल बाटे चाहे पढ़ाई–लिखाई होखे चाहे कवनो सामाजिक कार सेवा होखे। इनकरा परिवार में एक से बढ़कर एक पढ़ल–लिखल डाक्टर वगैरह रहलन। अभी एगो लड़िका गौतम राय वाणिज्य विशय से षोधकार्य कर रहल बाड़न।

अइसन अचूक आन्तरिक षक्ति आ प्रभाव वाला महान त्यागी तपस्वी अउरी आध्यात्मिक संस्था आनन्द मार्ग के पहिला पुरोधा प्रमुख रह चुकल आचार्य श्रद्धानंद अवधूत जी के १५ अक्टूबर सन २००८ के रांची स्थित नागरमल मोदी सेवा सदन में देहावसान भइल। इनकर दिव्य आत्मा भोजपुरी भाशा साहित्य के इतिहास में अनन्त काल तक न सिर्फ जियत रही।

❑ भरौली, बलिया, उत्तर प्रदेश
पिन कोड-२७७५०१ ९१०२३३१५१

"सांझे अनचाहा मेहमान भइली जिनिगी"

✍ विंध्याचल सिंह

हरा से पियर भइले पात पात झरि गइलें
डढ़िया झुरइली सुनसान भइली जिनिगी!

ओखरी कुटइलीं कबो चाकी में दरइलीं कबो
जाँतवा पिसाइ के पिसान भइली जिनिगी!

कबहूँ सियार आवे कबो घोपड़ार धावे
मकई के खेत के मचान भइली जिनिगी!

खरहर झरइली कबो कोना में धरइली कबो
टूटल फूटल बिगरल सामान भइली जिनिगी!

सभे हुलुकावल चाहे गरवा छोड़ावल चाहे
साँझे अनचाहा मेहमान भइली जिनिगी!

अँधिया तूफान आवे डगमग डोले लागे
धीरे धीरे टूटही पलान भइली जिनिगी!

काँट कुश रहिया में केने दू हेराइ गइली
खोजीं कहवाँ दूजिया के चान भइली जिनिगी!

❑ बुढ़ऊं, बलिया, उत्तर प्रदेश

भोजपुरी के गीत-गौरवः 'गंगा प्रसाद 'अरुण'

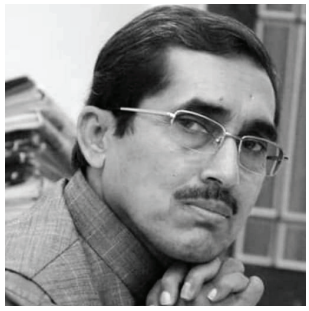

सुनील कुमार पाठक

भोजपुरी कविता पर कवनों बतकही बिना ओकरा गीतिकाव्य पर विचार कइले ना षुरु हो सकत बा ना ओरिआइये पाई। भोजपुरी गीतिकाव्य के परम्परा बहुते समृद्ध बा बाकिर ओकरा के उटकेरल एह आलेख में हमार मकसद नइखे, हम आज के भोजपुरी गीतिकाव्य परम्परा के समृद्ध बनाने वाला एगो मजबूत कवि–व्यक्तित्व गंगा प्रसाद अरुण जी के गीतन के गाँव में बिहरे के खेयाल से कलम उठवले बानीं।

भोजपुरी के आधुनिक गीतिकाव्य जवना में– विश्वरंजन, उमाकांत वर्मा, सतीश सहाय वर्मा 'सतीश',मोती बी.ए.,भोलानाथ गहरी,एंथोनी दीपक, अर्जुन सिंह अशांत, राधामोहन चौबे अंजन,अनिरुद्ध, अँजोर,परमेश्वर दूबे षाहाबादी,हरेराम द्विवेदी, रामनाथ पाठक 'प्रणयी', माहेश्वर तिवारी,अशोक द्विवेदी, कुमार विरल, विजेन्द्र अनिल, गोरख पांडेय,तैयब हुसैन 'पीड़ित', पी.चंद्र विनोद, कैलाश गौतम, आनंद संधिदूत, हरेन्द्र हिमकर, गोरख मस्ताना, रिपुंजय निशान्त, बलभद्र, प्रकाश उदय, सुनील कुमार 'तंग', अक्षय कुमार पांडेय आदि अनेक गीतकारन के गीतन पर बड़ा गंभीरतापूर्वक विचार होला– में एगो अतिमहत्वपूर्ण नाम जवन आजो अपना गीतन के गमक आ चमक से आपन धमक बरकरार राखे में पूरा तरे कामयाब बा, ओकर नाम हऽ–गंगा प्रसाद 'अरुण'। गंगा प्रसाद 'अरुण' जी अपना गीतन के बारे में लिखले बाड़न–

"सुधियन के सपना अतीत हो गइल
दरदे के बिना जे मीत हो गइल ।
बाहर के छलकल त लोर ऊ कहाइल
भीतर के ढुलकल त गीत हो गइल।।"

गीतन के परिभाशा अरुण जी का लेखनी से पढ़ि के हमरा बरबस पी. बी.शेली, सर वाल्टरस्कॉट आ कविवर पंत के पंक्ति– सब दिमाग में कौंधे लगली ह सँ–

1. "Our sweetest songs are tell of saddest thought-" & (P-B-Shelly)
2. "The rose is fairest when it is budding new And hope is brightest when it dawns from fears The rose is sweetest washed with mornin dew And love is loveliest when embalmed in tears-" & (Sir Walter Scott&'Lady of the lake'-)

3. "वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान, निकल कर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता। अनजान।" (सुमित्रानंदन पंत)

–ऊपर के एह पंक्तियन से ई स्पश्ट बा कि वेदना कवनों गीत के प्राण–तत्व होला, ठीक ओइसहीं जइसे अँसुअन–जल आ विरह में पलल प्रेमे मधुरतम हो पावेला। अरुण जी जब गीत के परिभाशित करत कहत बाड़ें कि भीतर के वेदना जवन बाहर छलक आवेला ऊ लोर कहाला आ जवन षब्दन में ढलिके अभिव्यक्ति पा

जाला –ऊ 'गीत' के संज्ञा से अभिहित हो जाला–तऽ ऊ गीत के प्राणतत्व के रूप में वेदना आ पीड़ा के रेखांकित करत दिखत बाड़ें।

अरुण जी अपना गीतन–संग्रह भूमिका में लिखले बाड़ें कि– "अइसन नइखे कि अतुकांत रचना में कवनों लस ना होखेला, बाकिर एकरा खातिर षब्द–प्रयोग के क्षमता के नकारल नइखे जा सकत। अइसे 'नवगीत' के 'नव' उपसर्ग नवीनता के जरूर रेघरियावत बा, बाकिर गीतन में नवीनता के आग्रह, नया ताजगी, नया बिम्ब–विधान के ना सम्हरले गीत त पारम्परिक बन के रह जाई। नया गीतन में भूत के स्वस्थ परम्परा के सकारत गर्हित परम्परा के प्रति नकार के भाव आ एकर अनलंकृत सादगी– सहजता बरबस अपना ओर ध्यान खींचेला। इहाँ छन्द के ना मन के मुक्तता अभिव्यक्ति पावेले, जहाँ लोकमंगल के भाव लउकेला, विध्वंस– विद्रोह के चिग्घाड़ ना।"

अरुण जी के एह वक्तव्य के ई मतलब निक. ालल जा सकत बा कि ऊ गीत के 'नवगीत' संज्ञा मिलला से जादे उत्साही नइखन दिखत। नवीनता के आग्रह आ नया बिम्ब–विधान ले जादे ऊ मन के मुक्तता के अभिव्यक्ति के जरूरी मानत बाड़ें। साथहीं नकार आ विद्रोह–विध्वंस भरल चिग्घाड़ ले जादे लोकमंगल के आग्रही बाड़ें। एह तरे ऊ अपना 'मनगीत' संज्ञा के गीत के संदर्भ में जादे समुचित मानत ई स्थापित करे के चाहत बाड़ें कि 'नवगीत' ले जादे 'मनगीत' संज्ञा गीत खातिर माकूल बिया। एजवा हम बहुत विनम्रता के साथे निवेदन करे के चाहब कि गीत के 'नवगीत' कहाव भा 'मनगीत' भा 'जनगीत' –होला तऽ ओमें मनोभावन के अभिव्यक्तिये नू? ई अभिव्यक्ति गीतात्मक आ लयात्मक होले। गीत के बारे में आपन बात राखत उमाकांत मालवीय जी कबो कहले रहनीं कि "गीत एगो अनवरत नदी हऽ।" उहाँ के कहनाम रहे कि गीत– नदी के अनवरत धार में नेकी आ बदी दूनू बहेला। गीत में पत्थर के पिघलत मसौदा आ ओह पर उगल तुलसी के बिरवो उहाँ के देखले रहनीं। उहाँ के गीत के अनवरत बहत नदी में किरिन के कौंधत वलय निरखले रहनीं। गीत विधा के सुधी समीक्षक आ सुचर्चित हस्ताक्षर कन्हैयालाल नंदन जी बहुवर्णी छवि वाला गीतन के महिमा बतावत लिखले बानीं कि –"गीत कर्म के उद्‌बोधन हऽ, प्रेम के आत्मनिवेदन हऽ, संवेदना के मानक छवि हऽ, रागात्मकता के प्रतिफलन हऽ, आ विडम्बना के प्रतिध्वनि हऽ।" –उहाँ के एह पारिभाशिक वक्तव्य से ई बात स्पश्ट बा कि गीत विधा में हर तरे के मानवीय संवेदना आ सोच–विचार, भाव आ विचार के समाहार संभव बा। गीत जब 'नवगीत' कहाये लागल त ओकरा के परिभाशित करत षब्दावली भले बदल गइल बाकिर मूल तत्व ऊहे रहल जवन गीतन के विवेचना में आधार बनत रहे। नवगीतन पर आपन बात रखत नवगीत विधा के सुप्रसिद्ध कवि आ समीक्षक डॉ. राजेन्द्र गौतम जी लिखले बानीं–

"नवगीत प्रगतिशील चेतना, आधुनिकता–बोध, लोक संवे. दना आ रागात्मक आवेश के संश्लेशण से तैयार लयात्मक रसायन हटे।" स्पश्ट बा, कि गीत विधा में आत्मपरकता, रागात्मकता, वैयक्तिक निवेदन, आदि के प्रमुख ता होला जबकि नवगीत आधुनिकता–बोध, प्रगतिशील चेतना, लोक संवेदना, आदि के जादे महत्व देला। नवगीतन में बिम्बधर्मिता, प्रतीकात्मकता आ मिथकीय प्रयोगनो के प्रति एगो अनुरक्ति के भाव देखे के मिलेला। 'जनगीत' आ 'नवगीत' –दूनू में सामाजिकता के बोध प्रखर रहेला बाकिर 'नवगीत' में जहाँ काव्यात्मक संश्लेशण बनल रहेला ओहीजा जनगीतन में सामाजिक–राजनीतिक प्रति. रोध के स्वर सजोर रूप में सीधे तौर पर अभिव्यक्त होला। गंगा प्रसाद 'अरुण' जी जवना के 'मनगीत' कहत बानीं ऊ 'नवगीत' आ 'जनगीत' दूनू के मिलल–जुलल अइसन रूप बा जवना में सामाजिक–राजनीतिक चेतना आ युगीन संवेदना ते भरपूर बा, मगर ई काव्यात्मक रुचिरता आ शिल्पो के भी स्वीकार करत चलल बा। हमरा समझ से 'नवगीत', 'जनगीत' भा 'मनगीत'––एह सब संज्ञन के गीतन के भाव, कल्पना, संवेदना आ विचार के क्षितिज के एगो विस्तार के रूप में देखे के चाहीं।

'मनुवाँ मनगीत लिखे' के 'भूमिका' में डॉ. ब्रजभूशण मिश्र लिखले बानीं कि– "वामपंथी विचारधारा वाला लोग जनवादी काव्य पर बल देवेला। सोभाविक रूप से ओह में मन के गुंजाइश कम होला।"

जनवादी विचार से प्रभावित कविता में मन के गुंजाइश कम होला –ई बात कहल कुछ अतिरंजनापूर्ण बा। गीत अगर गीते रहे ते का हरज? 'गीत' संज्ञे एतना सषक्त बिया कि ओकरा कवनों विशेशण के बैसाखी के जरूरते नइखे। भोजपुरी के जवन 'लोकगीत' बाड़न सँ ओकनिये में खोजाव ते केतना 'नवगीत', 'जनगीत' आ 'मनगीत' के सोच, संवेदना, तत्व आ शिल्प मिल जाई।

गंगा प्रसाद अरुण जी के कविता के पाट बहुते फइलल आ खुलल बा। बोध, व्याख्या, विचार, कल्पना– हर दिसाईं इहाँ खुलापन बा, कवनों अझुरहट

आ बुझौवल जइसन बात एजवा नइखे। उहाँ के लिखल प्रमुख भोजपुरी गीतन के संग्रह बा–

1. 'हहरत हियरा' (गीत संग्रह, 1974)
2. 'अँगना महुआ झरल' (गीत–नवगीत संग्रह–2010)
3. 'तीन डेग त्रिलोक' (हाइकु गीत संग्रह, 2013)
4. ग़जल गवाह बनी' (गजल संग्रह, 2018) आ
5. 'मनुवा मनगीत लिखे' (मनगीत संग्रह, 2021)।

एह कृतियन से अरुण जी कविता के समग्र रुप के परिचय पावन जा सकत बा। पहिलका संग्रह में गीत के ताजगी आ रवानी एह बात के गवाही दे रहल बा कि कवि परम्परा से आधुनिकता का ओर बढ़े में आगहूँ सतत प्रयोगशील रही। खॉटी कविता तऽ जवानिये में लिखाले। अरुण जी के पहिलका गीत संग्रह एह बात के सबूत बा। दूसरका संग्रह से उनका गीतन में नवगीत के गंध आ रूप –दूनू दिखलाई षुरु हो गइल रहे। तीसरका संग्रह उनका प्रयोगधर्मिता से अवगत करावे खातिर काफी रहे जबकि गजल– संग्रह सामाजिक–राजनीतिक चिन्तन आ वैचारिक प्रतिबद्घता के परिचायक रहे। 'मनुवा मनगीत लिखे' अरुण जी के एगो अइसन मनगीत संग्रह बा जवना में गीत, नवगीत, जनगीत, मनगीत –सभकर सुर आ शिल्प देखे के मिलत बा। अपना अध्ययन के एही कृति पर केन्द्रित करिके हम कुछ बात करे के चाहब। गीत कवि के आपन भावना आ अनुभूतियन के अभिव्यक्ति ह। आत्माभिव्यक्ति, गेयता भा संगीतात्मकता,भावान्वीति आ अनुभूति के एकता– गीतन के प्रमुख विषेशता मानल गइल बा। छायावादी युग से लेके आज समकालीन कविता के दौर तक हिन्दी में साहित्यिक गीतन के एगो लमहर परम्परा रहल बा। नयी कविता के दौर में ओकरे समानान्तर ओजवा नवगीतो के परम्परा रहल बा। भोजपुरियो में ओकरे अनुकरण में नवगीत, जनगीत, मनगीत आदि लिखइले सँ। डॉ. प्रेमशंकर रघुवंशी जी अपना किताब –'नवगीतः स्वरूप–विश्लेशण' –में नवगीत के प्रवृत्तियन के आ. कलन करत लिखले बाड़न कि "पारिवारिक जीवन के विभिन्न पक्ष, ग्रामीण जीवन के चित्रण, आंचलिकता, लो. कजीवन आ लोकधुनन से प्रेरणा, प्रकृति–चित्रण, प्रेम आ सौन्दर्य, वैयक्तिकता, सामाजिकता, आशावादी दृश्टिकोण, नवीन युगबोध भा आधुनिकता–बोध, नगर–बोध, व्यंग्य, संबोधन आ प्रश्नवाचकता, आउर दार्शनिक रूझान आदि नवगीत के प्रमुख प्रवृति मानल जा सकत बा। डॉ.राजेन्द्र गौतम जी "लोकसंवेदना, जनाकांक्षा, जातीय संस्कार, घर–परिवार के संवेदना, नवीन ग्रामबोध, मध्यवर्गीय नागरिक संघर्श, प्रकृति के नव दर्शन, आ आधुनिक आउर उत्तर आधुनिक संदर्भन" के नवगीत के प्रमुख विषेशता मानत नवगीत के गीत से विलगावे के कोशिश कइले बानीं। बाकिर एह सब विषेशता में अधिकतर के समावेश पहिलहीं से गीत विधा में रहल बा। ठीक ओइसहीं नवगीत के रूप में जवना विषेशतन के चरचा ऊपर भइल बा ऊ सगरी गंगा प्रसाद 'अरुण' जी के भोजपुरी गीत, नवगीत, मनगीतो आदि में बा। गीत से षुरु करि के मनगीत तक के अरुण जी के गीत –यात्रा के विविध आयाम बाड़े सँ, बाकिर सगरी पड़ावन के बीच एगो अइसन जीवंत अन्तर्धारा भी रहल बा जवन उनका गीतन के एगो खास अस्मिता गढ़े में कामयाब रहल बा। एह अन्तर्धारा के निरखत–परखत हम अपना एह अध्ययन के आगे बढ़ावे के चाहब।

गंगा प्रसाद अरुण जी के भोजपुरी गीतन के पढ़ला के बाद ई बात साफ हो जात बा कि उहाँ के गीत भा मनगीत में लोकभाशा भोजपुरी के मधुरई आ सोन्ह गंध भरपूर बा। भोजपुरी लोक समाज के चेतना आ लोक संस्कृ ति के सुवास, उहाँ के गीतन में खूब मजिगर रूप में समाहित बा–

"रूप के बसेरा पर रूपा के छाँव
अउँघाइल गली–गली निनिआइल गाँव।
महुआ के गंध झरे अंग पोर–पोर
आम के टिकोरे पर आन्ही के जोर
धनिया के बाँह पर होरी के नाँव।
रोज–रोज चउल करे
पीपर के पात बरगछिया टिकल बा
सरही बरिआत लगनउती लखिया के ठेके गोड़ाँव।
सुने कोई केहू के कहवाँ सँवास
करिआइल, लाल भइल
खोजबीन उपहास अँगना बँड़ेरी पर कागा के काँव।"

–एह गीत में 'निनिआइल गाँव' के जवन चित्र गीतकार उरेहले बा ओमें पूरा भोजपुरी लोक समाज के मौजूदा सामाजिक –आर्थिक स्थिति उभर के सामने आ गइल बा। लगनउती लखिया के गोड़ाँव के ठनकल सुने वाला कवि जानत बा कि लहना उधारी पर देत–देत सेठो अब कुनमुनाये लागल बा। टीन ठनठनात देखि के लगन के पाँव थथमे लागल बा। ई मजबूरी आ व्यथा के सुने के केहू के सँवासो नइखे। सभे अपने आप में परेशान बा। अइसनका समाज में कागा कवनों पाहुन के आवाई

उचार कइसे केहू से प्यार–दुलार पाई? ओकर बोली त अब खोबसन–उपहासे लेखाँ नू लागी? लोक समाज आ संस्कृति के परम्परो अब कइसे धीरे–धीरे विगलित होत जा रहल बा –एकर यथार्थपरक चित्रण एह गीत में देखल जा सकत बा। 'निनिआइल गाँव' के सपना अब केतना ले साकार होई जब आम के टिकोरा पर आन्ही के जोर बेसम्हार चलत होखे? एह गीत में आंचलिक बिम्बन के जरिये सामाजिक–आर्थिक स्थितियन के चित्र ते उरेहाइले बा,पूरा गीत में लोक समाज के राग–विराग, हरख–विसाद, मजबूरी आ दीनता के प्रतीकित करे के सार्थक प्रयास भइल बा। अरुण जी के एह गीत में लोक–संपृक्ति, उनकर देशज संवेदना आ अनुभूतियन के कुशल अभिव्यक्ति के परिणाम बा जवना के बल पर आज ऊ भोजपुरी काव्य के "कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासरू" के संज्ञा पावे के अधिकारी हो गइल बाड़न।

जन–भावना के अभिव्यक्ति अरुण जी के गीतन के एगो महत्वपूर्ण विशेषता बा। इहाँ के गीतन में "ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे धीरे" (–जयशंकर प्रसाद) इसी छायावादी गीतन के तरे आत्मार्पण के भाव भा दार्शनिक रूझान नइखे, ओह में 'जन–गण–मन' के संघर्श बा, ओकर प्रतिरोध–शक्ति बा। जि. निगी के संघर्श से उबियाके भाग खड़ा होखे वाला मनई खातिर अरुण जी के गीत प्रेरणा के पाथेय बाड़े सँ। अरुण जी के मन प्रतिरोध में खूब रहल बा, ऊ हार के, थाक के बइठ जाये वाला इंसान नइखन। ऊ सामाजिक विशमता के पीड़ा से पूरा तरे वाकिफ बाड़ें। ऊ जानत बाड़ें कि जातिवाद, अगड़ा–पिछड़ा, धार्मिक उन्माद–ई सब सामाजिक सद्भाव के ताना–बाना के छिन्न–भिन्न कर रहल बा। आर्थिक रूप से जे सबल–सशक्त बा, पूरा समाज के अपना अँगुरी पर नचावत बा। ओकरा खातिर अपनइती आ भाईचारा के कवनों मतलब नइखे। अरुण जी पंक्ति धेयान देबे लायेक बाड़ी सँ–

"अचरज का/परधाने इहवाँ/रेड़ भइल/बानी बकुला/चरन–धूरि पर लोटत बाटे/निरगुनिया/लीं अरथ–पूत के तरवा चाटे/अपनइती कुल–रिश्ता–आँगन/गेंड़ गइल।टनके सुर/कठपुतरी के बा मन–मरजी/तिरिछ चाल/अब चले पियादा बन फरजी/ई धसान में सबके सब अब/भेड़ भइल।"

'अरथ–पूत' के तरवा चाटे के मजबूरी आज समाज के सबसे बड़ ब्याधि बन गइल बा। अर्थतंत्र के कुचक्र आ सम्पत्ति के असमान वितरणके कुफल भोगे खातिर मजबूर समाज में व्यक्ति कवना तरे से साँसत में फँसल बा, ई कवि खूब समझत बा। अइसनका गीत 'जनगीत' के सकल–सूरत में ना रहिके भरपूर काव्यात्मक अभिधान गहले जन के पीड़ा उकेरे में अचिको पिछुआइल नइखे दिखत। अरुण जी समाज में फइलल जातिवाद, सम्प्रदायवाद आ वर्ग–विभेद के जहर के बखूबी पहचान–परख रखले बाड़ें। ऊ साफ–साफ कहत बाड़ें–

"जातिवाद परिवारवाद बा अउर इहाँ अगड़ा–पिछड़ा बा ई मत पूछीं–

के बा छोटा कवन बड़ा बा/गइल जमाना साँच–सिधाई/टेढ़ –टेढ़ के अभी चलन बा/नेह–प्रेम भाईचारा बा/मुदईपन बा घोर जलन बा

स्वारथ– नदिया तीरे बकुला/एक टाँग पर इहाँ खड़ा बा।/हाथापाई बा, दंगल बा/सगरो भाला चमक रहल बा/जहाँ –तहाँ बारूद बिछल बा/बम के गोला बमक रहल बा/मुट्ठी भर नारा उधिआवत/विक्षुब्धन के एक धड़ा बा।"

स्वारथ–तट पर एक टाँग पर बगुला अपना शिकार के टोह में खड़ा बा। एह तरे के मुहावरेदार भाषा में शिकारी आ शिकार के पहचान अगर कवनों कवि में बा, ऊ एकरा के अगर अपना मारक व्यंग्योक्ति के जरिये अपना गीत में परोस रहल बा, ते ओकरा रचना के खाली 'मनवादी' रचना कहल केतना ले उचित होई? का एह पंक्तियन में आम आदमी के पीड़ा मुखर नइखे? केहू एकरा के 'जनवादी' विचारधारा के कहे में कतरात होखे त ई ओकर मजबूरी हो सकत बा, बाकिर ई रचना ओह आदमी के साथ मजबूती के साथ ठाड़ बिया जवन दिन–रात मजदूरी आ मेहनत करि के दू–जून के रोटी के जोगाड़ करे में लागल बा– हमरा ई कहे में कवनों गुरेज नइखे। कवि सोसन आ साँसत के एह मकड़–जाल से आम मनई के एक–न–एक दिन निकल आवे के भरोसा अपना भीतर पाल रखले बा चूँकि ओकरा आदमी के ताकत आ जीवट पर अखंड विश्वास बा–

"ऊँचा नील गगन में/बिहरे के बेहाल परिन्दा/तूरि रहल बा जाल परिन्दा ना!"

–जहाँ बात बात में हाथापाई आ दंगल छिड़ जात होखे, बरछी भाला चमके लागत होखे, बमगोला बमक उठत होखे, बिछल बारूद पल भर में विध्वंस मचा देत होखे, हिंसा के चलते गली –मुहल्ला में खून के छींटा दीवार पर पसर जात होखे, ओजवा कवि के कलम सहम के नइखे रह सकत। कवि के स्वर से इहे

निकली कि –
"साधो जाने कइसन महाभारत
फिर आइल बाटे
चकरबिहू रचाइल बाटे ना।"

–एह महाभारत के अन्त का होला, सभे जानेला बाकिर तबो धरम के नाम पर दिखावा, आडम्बर आ फरेब के जवन जाल बीनाला ओकर शिकार आखिर में आम आदमिये होला। एही से कवि ओह आदमिये से निहोरा करत कहत बा–
"बाबा हो बाबा/का होई काशी –काबा/आदमी बनीं।
आगा कुइयाँ/ पिछवा पसरल गहिरा खाई/कहवाँ जा.
ईं/सरग कि दोजख, तनीं बताईं
दाढ़ी–तिलक, अजान–आरती में
बा तनातनी!"

– एह तनातनी के मेटाके कवि के कामना बा कि –"दियरी के बाती के/नेह के फुहार दे/जरे जनि बरल करे/सपना साकार दे।" ऊ इहो चाहत बा कि –
"भूत भूल के वर्तमान के/हम गौरव इतिहास बनीं
बन जाईं मुसकान जगत के /हम निर्मल मधुमास बनीं।"

–जाति आ धरम के बैसाखी के बले कूदे–फाने वाला दम्भी भरबितनन के आज मलाई काटत देख कवि–मन व्यथित बा।बाकिर तबो ऊ ओकनीं के हर. कवले रहे के चाहत बा, काहे कि ओकरा भरोसा बा कि असली सोना आखिर में निखरि के आँखि के सोझा आइये जाई –
"खरहा–कछुआ साँठ–गाँठ में जन–घोंघा टकटोई
गिरगिट भरबितना के कोई केतना दिन ले ढोई।"

–ऊ एह विसंगति के खिलाफ जाग उठत बा आ कहे लागत बा–
"चलीं बता दीं बटमारन के रकत–आँसु जनि रोईं
ओका बोका तीन तड़ोका लउआ लाठी टोईं।
हरकाईं हँकरत हुँड़ार के
बानर–बाँट बुझाला सबके
इहवाँ आज उहे कुल काटी जवने कुछ जे बोई।"

–धन–सम्पत्ति के असमान वितरण आ बंदरबांट के खेल समुझावत कवि गरीब–गुरबा के आगाह करत आज साफ तरे ई बतावे के स्थिति में बा– "इहवाँ आज उहे कुल काटी, जवने कुछ जे बोई।" –बिना हाड़ हिलवले, बइठल मलाई चाभेवाला अब जमाना नइखे रह गइल। जाँगर ठेठाई केहू, आ घर में बइठल मलपुआ चाभी केहू –अब ई नइखे होखे वाला। कवनों 'मनगीत' अगर एह तरे के जन–भावना के अभिव्यक्त कर रहल बा ते ओकरा के 'जनवाद' से केतना ले आ कहिया ले दूर मान के 'भूमिका' रचात रही? –ई बात हमरा समझ से परे बा।

जहाँ जिनिगी के चारू ओर अमावसे के पहरा होखे, असरा के पह फाटे के संभावना मलिन पड़ गइल होखे, ओजवा कवि के मुँह से अनायास निकालिये नू जाई –
"जिनिगी में चारू ओरि पहरा अमावस के
असरा के फाटे कबो पह ना
एही रे नगरिया में केहि बिधि रहना!

xx xx xx

कुल–खानदान के बखान–मरजाद जहाँ
कला के न पूछ –पहिचान
बड़का के मान अपमान सदा छोटका के
एके बात जानेला जहान।
गीत–सुर–सरगम– कला के कठिन लागे
जहाँ पर बेचना –बेसहना
एही रे नजरिया में केहि बिधि रहना!"

–"बड़का के मान, अपमान जहाँ छोटका के"–ई वेदना केवल कविये के नइखे, पूरा मानव –समाज एह से विकल–बेचौन बा, 'बेचैना –बेसहना' के संस्कृति जहाँ फले–फूले लागी, कला–साधना के पूछ–मरजाद घटिये जाई। तिकड़मी आ जोगाड़ी जब पूजाये लगिहें, छाती उतान करि के कला–साधक के धकियावत चले लगिहें, ते अइसनका दौर में कवि ई कहे खातिर मजबूर होइये नू जाई कि–
"के कहवाँ तक गइल निचोरल/ जाने जुगे जहान
अनकर अरजन आज अभागा/ गाजा चले उतान
षब्द –ज्ञान के अनकर आसी/ तिकड़म आठो याम।
जमुना–तट, ब्रज किसन –कन्हैया
सरजू तट, सिरी राम
बताईं के ह निमकहराम!"

कवि समय आ समाज के एह विसंगति आ विद्रुपता से एतना ले त्रस्त बा कि ओकरा होली गीतो में इहे वेदना उतरल बा–
"आन बूते शेर के सियार लरकारेला
आन्ह आ अलोत होत पीठिये पर वारेला
बेर–बेर भूले लतखोरी रे रसिया!
साँच के नकारे सदा झूठ के अगोरिया
करिया अमावसो के बूझेला अँजोरिया

लाज आ षरम पीये घोरी रंगरसिया।"

–लाज ,हया भा षरम जहाँ खतम हो जाला, ओजवा अमावसो के अँजोरिया बतावे में कवनों हिचक ना रहि जाला। शोशक आ शासक के दुरभिसंधि से सामाजिक जीवन आ पूरा देश आज दुर्दशा झेल रहल बा। राजनीति में चाल, चरित्र आ चेहराके दुहाई देके ठगी के जवन व्यापार आ धंधा चल रहल बा, कवि के नजर ओकरो के अनदेखी नइखे कर सकल। कुछ उदाहरण देखे लायेक बा–

1. "जिनिगी के आदर्श बघारत
मंचे–मंच गरज लीं/खुला साँढ़ अस चरलीं अनकर
अनघा अरथ अरजली/कवना–कवना बंक में कतना धइलीं राजा जी?
अइलीं उड़नखटोले/फेर उधिअइलीं राजा जी सिंकिया से संगराके/बोझा भइलीं राजा जी!"

2. "एक मुट्ठी लाई
दिल्ली छितराई
कुल्हि राहे में बिलाई।
xx xx xx
तार काटीं तरकुल काटीं/भा काटीं तरबूजा/चारा खाईं पीं अलकतरा/चाँपीं भेड़ा–चूजा/जोरीं सैकड़ा दहाई/सोझे परी
दिखलाई/राउर करिया कमाई!"

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गाँधी जी के ई सँकारल कि दिल्ली से चलेवाली विकास भा कल्याण योजनन के रुपैया नीचे आवत–आवत ओरिआये पर आ जाला –के इयाद करत कवि एकर कारण अपना गीत के पंक्तियन में बतवले बाड़न। उनकर नजर करिया कमाई पर बा जवन देश के अर्थतंत्र के चकनाचूर करत अमीरी–गरीबी के खाई के आउरो चौड़ा कर रहल बा।

कोरोना–कालो में कुछ बहुत प्रभावकारी गीत अरुण जी लिखले रहनीं। ई सब गीत एह संग्रह में संक. लित बाड़ें सँ। "हदसल जग बाटे कोरोना–कहर आज", "पानी हवा रोशनी खुशबू दाता के बरदान जी", "घर में रहीं भीड़ से बाचीं कठिन समइया जी!", –जइसन गीतन में प्रकृति से जुड़ाव के प्रेरणा भरल बा। एह गीतन में प्राकृतिक दोहन से उबरि के प्रकृति के साथे तादात्म्य बनवले राखत मानव–जीवन खातिर कल्याण–कामना प्रमुख बा।

गंगा बाबू के जीवन में राष्ट्रप्रेम के बात मजिगर ढंग से भइल बा। एह राष्ट्रप्रेम में विश्वमैत्री आ सद्भावना के संदेश बा। कवि के राश्ट्रीयता के भावना बहुत उदात्त भावभूमि पर खड़ा बिया, जवना में देश खातिर आपन प्रान उत्सर्ग करे वाला के प्रति कवि श्रद्ध ा आ समर्पण से भरल बा–

"चिरई– चुरुंगन के कलरव में/जेकर जय–जयकार अटल रे।
अरुण–किरिन के लाली में/लोहा के बा सिंगार अँटल रे।
सरधा के बा सुमन हाथ में/हिरदय के उफनत उद्गार आजादी के हम रखवार!"

–गंगा प्रसाद जी के गीतन में प्रेम आ राग के मस्ती खूब छलकल बा। बाकिर एह मस्तियो में कवि सामाजिक सरोकार से अपना के अलगा नइखे रख सकल।जिनिगी के खिलंदड़पनो में ऊ कामे के बात बतिआवत चलत बा–

"अँवरा अउर बहेरा हर्र
होत परातम पड़रम पर्र
xx xx xx
डोमन भइया छोड़ पिआकी
अभियो बा कुछ आकी–बाकी
गारी–गुपता डोमघाँउच आ
लत्तम–जुत्तम काँदो–पाँकी
चाल–बतकही भदोही बर्र !
बएलन के 'हव' हेंगा धूरे
'हे हा–हा हे' भइँसा दूरे
हाथी भइया गच्छ–गच्छ तू
ए कुक्कुरन के कहाँ सहूरे
हिनहिनात कुल घोड़वे सर्र!

–एह पंक्तियन में कवि के लोक –जीवन से सीधा आ गहिर जुड़ावो के देखल जा सकत बा।कवि के कुछ गीतन में अइसन सादगी आ सीधापन से बात रखल गइल बा जवनन से लोक जीवन के सरलता–सहजता खुदे मुखर हो उठल बा। बतकही में रमे के पुकार करत ई गीत जिनिगी में सहजता आ स्वाभाविकते के कामना करत बा–

"आऽ कुछ बतिया लीं जा
पसगइबत बात
कुछ एने कुछ ओने के!
xx xx xx

अपने उपराजीं/आ आपुस में बाँट लीं।
खंदक के खाई के/अनका के पाट लीं।
गोटी के मेला में/सतरंगी चाल में/सह तू द फिर देखऽ हम देलीं मात कुछ एने कुछ ओने के!"

–सतरंगी चाल आ सह–मात के खेलो के बतकहिये में सलटावत एने आ ओने के पाटत जिनिगी काट लेबे के जवन भरोसा कवि में बा ऊहे जिनिगी के सच्चाई हटे,असली सवाद हटे। भाव, कल्पना आ संवेदना में सउनाइल गंगा 'अरुण' जी के गीतन में विचारो पक्ष पूरा मजबूती से प्रकट भइल बा, ओमें कवनों अझुरहट भा विकार नइखे। कवि के वैचारिकता हर जगे समाज के कमजोर वर्ग आ मेहनतकश के पक्ष में खड़ा दिखाई देत बा।

भाव पक्ष के सुघरता आ प्रखर विचारन से भरल गंगा जी के गीतन के शिल्प–सौन्दर्यो अजगुत बा। एह गीतन में मुहावरा आ कहाउतन के प्रयोग के जरिये कथन में विषेश भंगिमा, चतुराई आ विदग्धता पिरोवे के प्रयास भइल बा। कबीर दास जी के 'वाणी के डिक्टेटर' बतावत हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कबो लिखले रहनीं कि "ऊ भाशा के अपना अंगुरी पर नचावत रहलें–बन सकत रहे त सीधे, ना त दरेरो देके।" गंगा जी के भजपुरियो कुछ ओइसने बिया जवना के देखि के तुलसी बाबा के एगो चौपाई के अर्द्धालि इयाद आवे लागत बिया –"अरथ अमित अरु आखर थोरे।" अरुण जी अपना काव्य–भाशा में अइसन रमणीय निठाह भोजपुरी –शब्दन के पिरोवले बानीं जवनन से अरथ के रुचिर ध्वनि आ जोति–छटा फूट पड़त बा। षब्दन के साथ पूरा महीनी आ नाजुक मिजाजी बरतत, कवि ओकर अइसन मीना. कारी करे में महारथ हासिल कर लेले बाड़ें कि उनकरा कविता के सौंदर्य देखते बनत बा। कवि के एगो गीत में आनुप्रासिकता के वितान बहुते मनमोहक बन पड़ल बा–
"हवस के हवेली पर हासिल ह हूक/लउके लमहरे से लीक लहर–लूक!
झाँकी बा नाँव आ समुन्दर अथाह/ऊपर मथेला के किसमत भदराह/मयभाउत मउसम के चाल ना बुझाय
साँचल बा आँतर में एक कबुरगाह/मनुहारी मतवादी मउवत में मूक!

xx xx xx

छरिआइल बा जिनिगी कहाँ कतो चेत
टाँड़ी के तरकुल पर वहम के परेत
ऊधो से का पाईं, माधो के दीहीं का
अँजुरी भर छल–छंद बूक भर अनेत
टेटी के टनन–मनन, टीप–टिपुर टूक!"

–कहे के जरुरत नइखे कि शब्दानुप्रासिकता के एह व्यामोह के चलते कहीं–कहीं अर्थ–ग्रहणो में बाधा पहुँच रहल बा। षब्द–सौन्दर्य पैदा करे में कवि एजवा भाव–सौन्दर्य के आहत होखे से न इखे बचा सकल। षब्द–चमत्कार के दिसाईं अपना कवि –प्रतिभा के प्रदर्शन से कवि का कबो कवनों परहेज नइखे रहल–आ एकरा के एही रूप में देखहूँ के चाहीं।

हमरा एह अध्ययन के केन्द्र में हालाकि कवि अरुण जी के सबसे बाद में छपल मनगीत–संग्रह 'मनुवा मनगीत लिखे' (2021) बा, बाकिर उनकर गीत संग्रह 'हहरत हियरा'(1974) आ 'अँगना महुआ झरल' (2010) के पढ़ला पर ई बुझात बा कि भाव आ भाषा दूनू स्तर पर पहिले के गंगा बाबू आ आज के गंगा बाबू में बहुत बदलाव आ गइल बा। एह कवि के पहिले के गीतन में जहाँ प्रकृति, प्रेम,मस्ती, राग, रंगीनी अपना पूरा शबाब पर बा ओजवे आज के गीतन में जिनिगी आ जमाना के जथारथ के कवि आपन मूल विशय बना लेले बा। शुरुआती संग्रह के एह गीत के देखल जा सकत बा–
"देख ले ऋतुराज आइल
रंग के बौछार लेके फूल के अंबार लेके/कोइलरि के गीत मधुर भँवर के झंकार लेके

xx xx xx

पीत हो सरसो सुहानी गमगमाइल रातरानी/नील रंग के फूल तीसी ठाढ़ ज्यों प्रिय आगवानी/आज बा सरताज आइल
आज बा रितुराज आइल।"

–स्पष्ट बा, अपना पहिले के गीतन में सौन्दर्य आ श्रृंगार के उकेरे में कवि का हिन्दी के तत्सम षब्दन से इयारी बनावे में जहाँ कवनों झिझक नइखे रहल ओजवे दोसरा तरफ आज के गीतन में देश– दुनिया के हकीकत बयान करे खातिर ठेठ भोजपुरी शब्दन के ठाट जमावल कवि का भावत बा।

गीत विधा में आत्माभिव्यक्ति पुरहर रूप में मिलेला। गीतकार सामाजिक जीवन के विरूपता आ विसंगतियन के देखि के आत्मवेदना के जवन अभिव्यक्ति करेला ओमें सार्वज. निनता आ समष्टि–चिन्तन घुलल–मिलल रहेला। कवि के ऊ आत्मवेदना जगपीड़ा बनि के सामने आवेला। आपबीती जगबीती बनि के सभके सोचे–विचारे खातिर

मजबूर करेला। अरुण जी जब आत्मव्यथा राखत कहत बाड़ें कि–

"जवना खुशी के चाह में/हर पंथ में हर राह में/हर हास में हर दाह में/करुना ई मन छितरा गइल/ऊ मिलल कहाँ, ऊ मिलल कहाँ?

xx xx xx

टूटल सपनवा भोर क/छलना के जादू जोर के/रखलीं सुमन बिटोर के/बेरुख हवा मुरझा गइल/ऊ खिलल कहाँ ,ऊ खिलल कहाँ?"

– त उनकर ई वेदना खाली कविये के वेदना नइखे रह गइल। एगो गीत में ते उनकर अभिव्यक्ति अइसन द्रवीभूत करे वाली हो गइल बिया कि ओकरा के पढ़ि के कवनों सहृदय पाठक के हिरदय में करुने भर नइखे जागत बलुक ओकरा में विपरीत परिस्थितियन से उबरे खातिर एक तरे के उत्साहजनित छटपटाहटो भर उठत बा। कविता भा गीत के एगो काम एह छटपटाहटो के कायम राखल हे काहे कि एही से जीवन के उमेद बाँचल रहेला। कवि के एह पंक्तियन में जीवन के हताशा ले जादे ओह से उबरे आ बाहर निकले खातिर एगो विकलता हमरा दिख रहल बा–

"पतइन पर सीत बुनका अस/छिंटा गइलीं।
ना कबो खिस्सा कहानी/डाढ़ से चूकल मरकटा कहाँ जाई का बखानीं
जल निकासी पोठिया मछरी पटा गइलीं।
दंभ के दरबार पाके/बीच बिचवानी बरावत सहजता के सार पाके/मूल अंगद, सूद में
सेतिहें लुटा गइलीं।"

–सेतिहें लुटा जाये के कसक, समय के सवालन पर छँटा जाये के जवन वेदना कवि में बा, ओकर ऊ कारनो बता देले बा। "कुटिल कुल अँकवार" आ "दंभ के दरबार" ओकरा एह पीड़ा के मूल कारन बा। कवि "छिंटा गइलीं", "पटा गइलीं", "लुटा गइलीं", "कटा गइलीं", "छँटा गइली" –कहिके आपन जवन वेदना के अभिव्यक्त कइले बा ऊ खाली ओकरे समस्या नइखे– ई समस्या ओह तमाम मनई के समस्या बा जवन उपहास–विश पिअतो, हर तरे के तींत–मीठ झेलतो "केहू कुछ दीही त कुछ लीत" के सहज सपना अपना भीतर सँजोवले कइसहूँ जीअत रहे के चाहत बा। देबे–लेबे के जवन बात बा– ऊ आउर कुछ ना हऽ –एकरे के 'अपनइती' कहले बा कवि, 'भाईचारा' कहले बा, 'प्यार–दुलार' कहले बा, इहे जीवन हऽ, जीवन के संगीत हऽ, जीवन के लय हऽ। जीवन के इहे संगीत कवनों गीत के गति आ सौन्दर्य प्रदान करेला।

गंगा प्रसाद 'अरुण' गीतन के अलावे भोजपुरी गजलनो के दुनियाँ में खूब जम के कलम चलवले बाड़न। उनकर गजल–संग्रह 'गजल गवाह बनी'(2018) में अइसन गजलन के भरमार बा जवन जमाना के दुख–दरद, तलखी–तबाही, विसंगति–विरूपता– सभके अपना खुला नजर से निरखत–परखत चलल बाड़ी सँ। सामाजिक सरोकारन आ सवालन से टकरात ई गजल सब देश–दुनिया, परिवार–समाज सभ तरे के बातन के तेजाब तजुरबा बनि के हाजिर बा। कवि अरुण जी के कुछ गजल के षेर से उनकरा मजबूत खेयालन आ सशक्त सामाजिक–वैचारिक प्रतिरोध के अन्दाजा लगावल जा सकत बा–

1. "गाँव लुटाइल फूलन के/
अबहीं राज बबूलन के।
झुरके आदमखोर हवा/
मस्ती रेत–बगूलन के!

xx xx xx

छोड़ गुलाबन के अँगना/
गंध चलल तिर षूलन के!
मँझधारे नइया बूड़ल/
दोश लगावल कूलन के!"

2. "कुल सुविधा के मंच भइल बा/
पंचइती परपंच भइल बा

xx xx xx

बोले– बइठे के सहूर ना/
ऊ मुखिया सरपंच भइल बा।"

3. "चमत्कार बा हाला नइखे/
तनिको गड़बड़झाला नइखे।
ई विकास के राजसड़क ह
कहवाँ ऊँचा–खाला नइखे।

xx xx xx

छोपनी नइखे केकरा आँखे/
किनका मुख पर ताला नइखे
चान –सुरुज उनके घर बंदी/
एने कहूँ उजाला नइखे।"

–ई पंक्तियन के जरिए ई बूझल कवनों मुश्किल नइखे कि सामाजिक–राजनीतिक जद्दोजहद आ ओकरा

व्यापक प्रभावन से कवि पूरा तरे वाकिफ बा, आउर मौजूदा समय आ समाज के जीवंत दस्तावेज बनिके ओकर ई भोजपुरी षायरी हाजिर बिया।

अरुण जी के गीतन में अवगाहन कइला के बाद ई बात साफ हो जात बा कि एह में आंचलिक परिवेश के जीवंत अभिव्यक्ति भइल बा आ संवेदनात्मक बिम्बन के भरमार बा। आम जन के आशा आ सपनन के सुग. बुगाहट आ ओकर मजिगर अभिव्यक्तियो एह गीतन के खास पहचान बनि के उभरल बा। लोक संस्कृति, लोक आचार–व्यवहार, आ लोक संवेदना के गंध लिहले मध्य वर्गीय जीवन के संघर्श आ संकल्पन के बहुत गम्हिराह आ व्यापक अभिव्यक्ति अरुण जी के गीतन के प्रमुख विषेशता बा। एह गीतन में शिल्पगत नवता आ मनोहरता त बड़ले बा आधुनिकता के हर तरे के मूल्यन आ विचारन से जुड़ल रहला के साथे–साथे उत्तर–आधुनिकतापरक चिन्तनो के समावेश इहाँ देखे के मिलत बा। आज उदारीकरण, उपभोक्तावाद, भूमंडलीकरण आ सूचना के विस्फोट– युग में विचारन के अंत के बात शुरू हो गइल बा। 'पाठ' के निजता के बात होखे के चलते ते शब्दन के सत्ता आ अस्मितो के चारू ओर से चुनौती मिले लागल बा। आज संवाद खातिर जब अइसनका दौर कठिन होखे लागल बा त गीतकार ई कहे खातिर मजबूर हो जात बा कि–

"छंद सब्द आखर के कइसन परतीत।
सिहकेला भाव आउर कुहुकेला गीत।"

बाकिर एकरा बावजूदो, ऊ कवि का जे आशा आ भरोसा के अँजोर फइलावे में सफल ना हो सके? अरुण जी त अइसनका गीतकार बाड़न जेकरा पूरा विश्वास बा कि–

"नेह प्रेम के/एतना निम्मन कहानी हो/दिन सोना अइसन/कि रात चटक चानी हो।"

–गंगा प्रसाद 'अरुण' जी के गीत नया–नया मुहावरा, अनुभव बिम्ब, नया तरे के सौन्दर्य–चेतना आउर जीवन–दृश्टि से भरल–पूरल बाड़ें सँ। नया–नया संवेदना के हिलोरन से अनुप्राणित एह गीतने के दम पर गंगा बाबू के भोजपुरी के गीत–गौरव कहे में केहू का कवनों संकोच ना होई।

गंगा जी कविता के कवनों प्रारुप में सिरिजना करत होखस गीत उनकरा साथे आपन चहलकदमी जारी रखले बाड़ें सँ। आउर–त–आउर हाइकुओ के रचना के क्रम में ऊ अपना संग्रह 'तीन डेगे त्रिलोक' में हाइकु गीतनो के सिरिजना के नया प्रयोग करे से नइखन चूकल। "अरचन का परधाने इहवाँ/रेड़ भइल!, "कब रे गाछी पवन झकोरले/दूब कबो ना!", "गीत–गात से गन्ना मन/बानी बमके!", "बंद आँख से निरखे दरपन/सूर सवाली!", "बाबा हो बाबा का होई काशी काबा/आदमी बनीं।" –जइसन गीत हाइकु छंद में रचल अइसनका प्रयोगधर्मी गीत बाड़न सँ जवनन से ई पता चलत बा कि कवि गंगा प्रसाद 'अरुण' खातिर गीत उनकर साधना आ सिद्धि –दूनू बाड़न सँ। गंगा जी गीतमय बाड़न कि गीते गंगामय हो उठल बा –निर्णय लिहल बहुते कठिन बा। गीत के रागात्मकता, आत्मीयता आ रुचिरता–सबके मूर्तिमान रूप गंगा बाबू बाड़न। 'यथानाम तथागुण' कवि के व्यक्तित्व के प्रवहमानता आ पावनता भोजपुरी गीतन के थाती बन के ओकरा परम्परा आ प्रकृति–प्रवृति–सभके पूरा तरे समृद्ध कइले बा। गीत के चलते अगर गंगा बाबू के पहिचान बा ते गंगा बाबू के पाके भोजपुरी गीत–गंगो धन्य हो उठल बिया।

"पाती" अंक- जून-1999 से कुछ अंश

(एक)-
विमोचन-विचार-गोष्ठी के एगो रपट

नया बरिस के पहिले महीना में अशोक द्विवेदी के कथा–संग्रह आइल "गाँव के भीतर गाँव"। भोजपुरी संस्थान पटना से प्रकाशित एह किता के विमोचन–समारोह 31 जनवरी 1999 के, भारतीय प्रबन्धन संस्थान पटना के सभागार में आयोजित भइल। भोजपुरी–संस्थान के अध्यक्ष पांडेय कपिल के बोलाहटा पर उहाँ साहित्यकारन के अपूर्व जमघट देखे के मिलल।

किताब के विमोचन करत, हिन्दी प्रगति समिति के अध्यक्ष **डा0 रामबचन राय** कहलन– भोजपुरी कहानी में गाँव के यथार्थ के आधुनिक दृष्टि से देखे के कारन कथ, शिल्प आ भाषा सब स्तरन पर निखार आइल बा। अशोक द्विवेदी के कहानी एकर सबूत पेश करत बाड़ी सन। एह कहानियन में नारेबाजी नइखे, साथ सुथरापन बा। 'पोसुआ' दलित कथा बा। कथाकार भावुकता पर काबू पवले बा आ तटस्थ भाव से गाँव के भीतर गाँव छिपल यथार्थ के अभिव्यक्त कइले बा। "श्री राय प्रेमचन्द जी के कहानी 'कफन' के संदर्भ लेत कहलन, सहज कहानियन आ प्रासंगिक भाषा प्रवाह का कारन द्विवेदी जी के कहानी अउरू छूवत बाड़ीसन। चित्रण में कहीं फिसलन नइखे लउकत।

समर्थ कथाकार **प्रो0 ब्रजकिशोर** जी कहलें, डा0 द्विवेदी का कहानियन में भाषा के बढ़िया प्रयोग कइल गइल बा। कहानी पढ़ला पर लागत बा कि गँवई संवेदना करवट ले रहल बा। एह कहानी संग्रह में गाँव के बदलत स्वरूप का चित्रण का साथे पात्रन के बड़ा मनोवैज्ञानिक चित्रण भइल बा। खासकर नारी पात्रन के। भाषा, बोली, गारी आदि बड़ा स्वाभाविक बा। अंतिम कहानी 'निस्तार' बड़ी मार्मिक आ चरित्र प्रधान कहानी बा। कहानीकार घटनन के सहारा लेले बा बाकि चरित्र पर उनहन के हावी नइखे होखे देत। 'पोसुआ' में दलितन के वास्तविक वस्तु स्थिति चित्रित बा।

भोजपुरी कथा–साहित्य में एह कथा संग्रह के 'मील के पत्थर बतावत, प्रसिद्ध साहित्यकार आ समीक्षक **नागेन्द्र प्रसाद सिंह** कहलन कि यथार्थ के बारीकी से देखल स्वयं में बहुत कठिन काम ह। द्विवेदी जी सामाजिक, आर्थिक परिवेश आ गाँव में पैदा भइल नवधनाढ्य वर्ग के बारीकी से चित्रित कइले बाड़न। साथ ही संघर्ष करे खातिर तइयार होत जवना नया वर्ग के चित्रण ऊ कुछ कहानियन में कइल बाड़न ओमे जातीयता के टूटन साफ लउकत बा। मजदूर वर्ग के चरित्र आ ओकरा भाषा पर कथाकार के पकड़ बड़ा जबर्दस्त बा।

डा0 शंभुशरण जी कहलन, गाँव के दू गो पहलू बा। अपना कहानियन में द्विवेदी जी ओकर 'सर्वे' कइले बाड़न। अइसन लागऽता जइसे ऊ गाँव के जिनिगी भोगले बाड़न। उनका कहानियन में गँवई गति के सूक्ष्म पकड़ बा। भोक्ता ही अइसन जीवंत कहानी लिख सकत बा। एह कथा संग्रह में खाली यथार्थे ना, यथार्थ के भीतर के यथार्थ उद्घाटित करे के उतजोग बा। गँवई राजनीति के विद्रूप सचाइयन का संगे, गँवई आत्मा के दर्शन हो जाता। 'जातिवाद' कवनो लड़ाई से ना, प्रेम का गंगा में बहि के टूटि जाता जइसे श्गाँव का भीतर गाँवश आ 'निस्तार' कहानी में बा।

वरिष्ठ कथाकार **कृष्णानन्द 'कृष्ण'** स्वातंत्र्योत्तर गाँव के बदलत स्वरूप का दायरा में एह संग्रह के कहानियन के रेखांकित करत कहलन कि एह कहानियन में कुछ विशिष्ट विद्रोही पात्र बाड़न सऽ। जइसे 'पोसुआ' के चनरी आ 'चितकबरा पहाड' के 'जुगनी'। उन्हनी के विद्रोह के तेवर व्यवस्था का खिलाफ बहुत सशक्त बा।

आनन्द संधिदूत कहलन कि यथार्थ में अवसाद के पोटेन्सी ज्यादा होले। एह संग्रह में विसंगति, आ कड़वाहट के दर्द कम करे खातिर कथाकार कुछ जगहन पर यथार्थ आ आदर्श क समन्वय कइले बा जवन समाज के चेतना आ शक्ति देबे खातिर जरूरी भी बा।

करूणा निधान केशव कहलन कि संग्रह के कूल्हि कहानी पाठकन के अपना ओर खींचि के अपना के पढ़वा लेत बाड़ी सन। ई भाषा आ कथा प्रवाह के खूबी बा। 'निस्तार' के पंडिज्जी अपना मानवी मूल्यन पर टिकल बाड़न–पूरा गाँव धीरे–धीरे उनकर हो जाता–ऊ उनका चरित्र का दृढ़ता का कारन। 'चिखुरा' में कवनो समाधान भा दिशा नइखे। व्यंग्य बा। 'सपना' में इहे व्यंग दोसरा रूप में बा। 'गाँव के भीतर गाँव' में दिशा बा। एह संग्रह के कहानियन के ए माने में भी इयाद कइल जाई कि आगा आवे वाला गाँव कइसन होखे के चाहीं।

अध्यक्षीय भाषन करत सुप्रसिद्ध साहित्यकार **डा0 सत्यनारायण** जी कहलन कि 'पाती' पत्रिका के संपादक का रूप में हमके द्विवेदी जी के भाषा के चमक पहिलहूँ देखे के मिलल बा। उनकर भाषा पर बड़ा जबरदस्त पकड़ बा। एह संग्रह के सघन बुनावट वाली कहानियन के पढ़ला से ई स्पष्ट हो जाता कि कथाकार में चरित्रन के पकड़ का साथ परिवेश के समझ बा। कहानियन में समाज शास्त्रीय सघन बुनावट बा। भाषा के खाँटीपन इन्हनी के बेजोड़ बनावत बा। कहानीकार जीवन के संपूर्णता में पकड़े क कोसिस करत लउकत बा। 'गाँव के भीतर गाँव', 'भँइसि', 'पोसुआ' में अवसाद ना करूणा प्रकट होत बा। मानवीय करूणा। 'मुँहझउँसा के मेहर' खाली परिवार नियोजन के ना एगो प्रवृत्ति के कहानी बा ओकर अंत बड़ा प्रभावकारी बा। 'छुटकारा' कहानी पूरा कहानियन में सबसे अलग कहानी बा। 'मुहझउँसा के मेहर' आ 'छुटकारा' में लेखकीय हस्तक्षेप बा। भाषा, दृष्टि, शिल्प, चेतना सब दृष्टि से ई सफल कहानी संग्रह बा। **डा0 शिववंश पाण्डेय**, **डा0 वीरेन्द्र श्रेष्ठि**, **अविनाश चंद्र विद्यार्थी**, आदि के बोलला का बाद कथाकार अशोक द्विवेदी सभा में उपस्थित साहित्यकारन के धन्यवाद दिहलन। समारोह के संचालन, **आचार्य पाण्डेय कपिल** जी कइलीं आ दूर दराज से पहुँचल साहित्यकार लोगन के धन्यवाद दिहनी।

(दू)
बलिया में पद्मभूषण डा0 विद्यानिवास मिश्र जी के व्याख्यान

बलिया में डा० बसन्त प्रसाद सिंह के 56वीं जयंती पर आयोजित व्याख्यानमाला में, एह बेरि "साहित्यः मुक्ति आ बंधन" विषय पर डा० विद्यानिवास मिश्र जी के धीर–गंभीर व्याख्यान भइल। उहाँ के कहनी, कि साहित्य जवना बंधन में घेरेला ऊ बंधनन के तूरे वाला ह। सामाजिक धारणा, नीति–नियम आ सामाजिक बन्धनन पर साहित्य प्रश्नचिन्ह लगावेला। साहित्य मूल्यन के बारे में सवाल करेला। ओमें व्यक्ति ले ढेर वैयक्तिकता के मुक्ति होले।"

प्रख्यात भाषाविद, विद्वान साहित्यकार डा० मिश्र जी श्रीमद्भागवत, संस्कृत नाटक मृच्छकटिक, अभिज्ञानशाकुन्तलम, शेक्सपियर के "मैकबेथ" आ रामचरित मानस के कुछ खास सन्दर्भन के जिकिर करत, उद्धरण देत कहलन कि 'मुक्ति राहत ह आ बन्धन पीड़ा हऽ। साहित्य लोगन के बान्हेला। कवनो रचना के खाली एगो लाइन अइसन बान्हि लेले कि आदमी ओमें भुला जाला। अपना के, अपना सुख–दुख कूल्हि के भुला जाला। साहित्य में अभिव्यक्त दुख एक व्यक्ति के ना रहि जाला; साधरनीकृत हो जाला। रचना में बहुत कुछ अनायोजित घट जाला जवना के रचयिता आयोजन ना कइले रहेला। साहित्य में जवन मुक्ति बा, ऊ वैयक्तिकता के मुक्ति ह। – यदि वैयक्तिकता रहि गइल त ऊ साहित्य दू कउड़ी के हो जाई।

अन्त में सभा के अध्यक्ष प्रसिद्ध आलोचक **डा0 बच्चन सिंह** कहलन कि "अब त ऊ युग आ गइल बा कि साहित्ये पर खतरा बा। केहू पढ़ी तब न ऊ केहू के बान्ही भा मुक्ति देई। आज केहू पढ़ल चाहते नइखे। अतना विपुल साहित्य रचा रहल बा बाकिर एह वैश्वीकरण, कम्प्यूटरीकरण आ उपभोक्तावादी जमाना में ओकरा ओर केहू के निगाह नइखे। हिन्दी का देश में खुद देश के नियन्ता चिंतित नइखे होत ऊ अंग्रेजी खातिर होड़ लगवले बा। अइसन में साहित्य के का होई?

सभागार में जनपद के वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार आ विभिन्न स्नातकोत्तर कालेज के प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष आदि लोग भाषण के लाभ उठावल आ विषय से सम्बन्धित शंका समाधान कइल।

डा0 कमलेश राय के दू गो गीत

(एक)

सांझ के पहरा में हम
जब-जब गगन के पार देखीं
रात के अँगने हँसत
एगो नया भिनसार देखीं

भोर के दुवरे लखीं
पहिली किरिन क कुनमुनाइल
हँसत दिन के आस में
बनपांखियन क चहचहाइल
हर कदम अन्हियार के
टारत धवल उजियार देखीं

नेह क भँवरा पुलक के
पांखुरी में प्रीत बोवे
सगुन क पंछी ,हिया के
बांसुरी में गीत पोवे
कांट- कोरन पर खिलत
बिहँसत कली कचनार देखीं

दूर से राही कहीं
माझी रे, माझी रे पुकारे
आस क पतवार लेके
ठाढ़ हम नदिया किनारे
समय के ठहरल नदी में
सहज निरछल धार देखीं

धुंध के चादर में कबहूँ
धूप क चेहरा न होखे
राह में सूरुज के अब
अइसन कहीं कोहरा न होखे
काल्ह के मौसम बदे
हम आज क अखबार देखीं

(दू)

कबों पतझार क मौसम
कबों मधुमास मनभावन
हवे जिनगी क रंग दूनों
कबों भादों कबों सावन

कबों दहकत दुपहरी क
तपत मृगडाह ई लागे
कबों पीपर क डोलत पात
शीतल छांह ई लागे
कबों रस-रंग क महफिल
कबों जप-जोग-आराधन ।

कथानक दुख भरल लागे
कबों लम्बी कहानी क
कबों छन में मिटे ई
बुलबुला बन-बनके पानी क
कबों कांटन क जंगल तऽ
कबों फूलन क घर-आंगन ।

ए जिनगी क असल सूरत
कबों ऐना में आइल ना
सही पहिचान एकर
आज ले हमके बुझाइल ना
कबों घुंघुटा के दुलहिन तऽ
कबों लागेले बंजारन ।

चइती

सुभाष पाण्डेय

चइते चान चिढ़ावे
हो रामा
चमकि चमकि के।

कीनबि कंठा कंगन करधन
भरमावे भुलियावे भर मन
बढ़ि - बढ़ि बात बनावे
हो रामा
चमकि चमकि के।

बिरहिनि बनली बारल बाती
पढ़ि - पढ़ि पठवल पिय के पाती
निरखि - निरखि निहसावे
हो रामा
चमकि चमकि के।

कोइलि कुहुकि करेजा काढ़े
मोंजरि मँहकि - मँहकि मति मारे
अनचितले अझुरावे
हो रामा
चमकि चमकि के।

साहित्यिक संघ, वाराणसी से ''सेवक साहित्य श्री'' सम्मान लेत ''पाती'' संपादक डा0 अशोक द्विवेदी

कवि श्री बलभद्र जी के विद्याश्री न्यास द्वारा मिलल ''लोक कवि'' सम्मान

बाएँ से डा0 अशोक द्विवेदी, पं0 दयानिधि मिश्र, बलभद्र आ प्रोफं सदानन्द शाही

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा में भोजपुरी-विभाग स्थापना दिवस समारोह

डा0 रामसेवक 'विकल' के किताब भोजपुरी लोकगीतन के संकलन प्रकाशित

देवश्री न्यास, भोजपुरी संगम, 2025, मऊ का आयोजन के कुछ झलकी

1999 के कुछ चिट्ठी-चपाती

पाती २६–२७ संयुक्तांक. आज थोड़ा समय चुराया और आपकी कहानी "चितकबरा पहाड़ वाला गाँव" पढ़ा। समकालीन कहानियों की तमाम खूबियों से लैस और कमजोरियों से मुक्त। भोजपुरी की अत्यन्त सशक्त कहानी।..... मुझे बहुत अच्छी लगी। संवेदन की लहरों पर डोलती डूबती जिस समकालीन समस्या को आपने शाश्वत सुख–दुख, पाप–पुण्य, अच्छा–बुरा से अंतर्ग्रथित किया है, वह कोंचती है और विस्फोट भी करती है। इतना होने पर भी कहानी अपने सम्यक प्रवाह से प्रसरित है कहीं 'लाउड' नहीं है। ऐसा संतुलन विचारों और वेदनाओं का ऐसा संघर्षण जो मुनष्यत्व प्रखरता प्रदान करे, समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में शायद छूटता जा रहा है– आपने उसे पकड़ा है, बल्कि सशक्त अभिव्यक्ति दी है– कलात्मक।

विष्णुदेव तिवारी, तिवारीपुर, बक्सर

अंक बेहतर लगा। इसमें प्रकाशित कहानियाँ खास कर 'चितकबरा पहाड़ वाला गाँव' और 'जनावर' अच्छी लगी। अष्टभुजा शुक्ल, रामलखन विद्यार्थी, ब्रजभूषण मिश्र आनन्द संधिदूत की काव्य रचनायें तथा गणेश दत्त किरण जी का खोजपूर्ण आलेख भी पठनीय है।

रामनिहाल गुंजन, नयाशीतल टोला, आरा-१

'चितकबरा पहाड़' में रउरा पहाड़ी लोगन के कठिनाई, वेबसी आ पइसा वाला लोगन के दुराचार, शोषण के बहुते सही तस्वीर उरेहले बानी।

श्रीराम सिंह 'उदय' बाँसडीह, बलिया।

'पाती' के नया अंक – रंग–रूप, पाठ्य सामग्री मनमोहक बा। राउर कहानी काफी अच्छा लागल। सुरेश कांटक के कहानी से जतना संवेदना उपजे के चाहत रहे– ओइसन ना भइल। प्रकाश उदय के कहानी हमरा बूता के बाहर बा। हमरा ना बुझाइल कि ऊ कविता ह कि कहानी।..... राउर संपादकीय भी चर्चा योग्य बा।

कृष्णानंद कृष्ण, संपादकः पुनः कंकड़बाग, पटना

'चितकबरा पहाड़ वाला गाँव' कहानी त ओह गाँवें क रिपोर्ताज भी बा। 'जुग. नी' जइसन चरित्र वाली लड़कियन से त एह देश के सभ्यता अउर संस्कृति अबहिन ले बचल बा ।

शशिबिन्दु नारायण मिश्र, रानापार, विशुनपुरा, गोरखपुर-५

"पाती" के अंक २६–२७ मिल गइल। अइसे त कहल बड़ाई होई बाकिर 'चितकबरा पहाड़ वाला गाँव' हमरा बड़ा नीक लागल। बेमारियो में हम एकरा के कइ बेरि पढ़ि गइलीं, जिनिगी के जवानी आ आधा बुढ़ापा जंगले में बीति गइल ओही में रहीला आ घुमबो करीला। राउर ई कहानी जंगल में बसल गाँव आ जंगली– जीवन के ठीक ठीक चित्रण बा। जीवन्त बा। बलिया में रहि के जंगली, पहाड़ी जीवन के अतना सटीक कल्पना हमरा मन के झनझना देलस। इ कहानी पढ़ि के हमरा ऊ गाँव इयाद परल जहाँ हम पचास बरिस पहिले रहत रहीं। कुसुम्ही आ जुगनी दूनों त ना बाकिर 'जुगनी' लउकलि। हमरा अंग्रेजी के कविता 'लूसी ग्रे' इयाद हो आइल.... हमार करेजा अइंठाए लागल।

स्वामी फन्दोत्तीर्णानन्द, अद्वैत आश्रम, रामडिहरा रोहतास, ८२१३१२

'पाती' वास्तव में भोजपुरी पत्रिकन में आपन अलग स्थान बनवले बिया। अगर ई कहीं कि एघरी एकर पहिलका स्थान बा त अत्युक्ति ना कहाई। कवर चित्र होखे भा कविता कहानी, लेख स्तरीय बा। डा० शारदा पांडेय के "केतना बेर" पर चरचा में गहिर निर्लेप दृष्टि नइखे जवन आज समीक्षा में बहुत जरूरी बा।

अक्षय कुमार पांडेय, रेवतीपुर, गाजीपुर

एह अंक में चुनिन्दा कवियन आ कहानीकारन के कविता–कहानी आइल बाड़ी सन। पत्रिका का आकर्षणो में बढ़ोत्तरी हो रहल बा।....

रामलखन विद्यार्थी, घुसिया कला, विक्रमगंज, रोहतास

दिसं० 98 अंक मिलल। पत्रिका के आवरण बड़ा कलात्मक आ लोककला के प्रतीक बा। ऋचा के कोटिशः बधाई। प्रकाश उदय के कहानी गद्य काव्य के नमूना बा। अशोक द्विवेदी के कहानी 'चितकबरा पहाड़ वाला गाँव' वातावरण प्रधान बिया। पहाड़ के चारो तरफ के हालत पाठक देखि लेता। आदिवासी क्षेत्र में उद्योग के प्रभाव आ उन्हनी के सामाजिक शोषण, सांस्कृतिक हास के कहानी बा।

डा0 रसिक विहारी ओझा निर्भीक, निमेज, बक्सर

'पाती' मिलल। कुल पढ़ गइलीं। जय प्रकाश सागर क लोकराग! भाई ई लइका त भोजपुरी गीतन के आत्मा लिख रहलबा। त्रिभुवन सिंह प्रीतम जी 'गाँव के हाली–बेहाली के बड़ा सलीका से लिख रहल बाड़न, ठीक कहीं त फेर से लिखने बाड़न। भोलानाथ गहमरी क 'ऊहे हमरो गाँव सँवरिया' गीत याद परे लागल। बलभद्र का कविता के लय 'शिवपातो' के दुख अउर गहिर क देता। ऋचा क कविता में अनुभूतियन के पकड़े के जबरदस्त कोसिस बा। पुरान शैली के एतना नया अनुभूति में लिखल, सराहे खातिर मजबूर कऽ रहल बा। अशोक द्विवेदी के कहानी, 'चितकबरा पहाड़' एकदम रिपोतजि शैली में बा। लागता कि कुल देखल चीज लिखा रहल बा। कहानी के ईहे सफलता बा। प्रकाश उदय के कहानी पहिलहीं के तरह भाषा में कुछ नयापन देखा रहल बा। उनका में रेणु क भाषा के सुर बोलेला। ध्वनि पकड़े के कोसिस बा।

सुरेन्द्र कुमार सारंग, मुम्बई।

लघुकथा

अबोध के बोध

विनोद द्विवेदी

कुआर के नवरात्रि वाली नवमी में हमनी कावर देवी भक्तन में कन्या पूजन क परम्परा बा । हमरा पड़ोस में देवी का रूप में कन्या पूजन खातिर, लड़िकिन के सिंगार होत रहे ।पाँति में बइठावल लड़की उछाह में बइठल एक दोसरा के देखत रहली स। सबका आगा भोजन परोसे क कार्यक्रम शुरू भइल । एही बीचे एगो लड़की के पाँत से उठा के, अलगा बइठावत ई कहाइल ––'तहार उमिर अब बेसी हो गइल बा !'

ऊ लड़की पाँत में बइठल लड़कियन का ओरि ताकत मुँह बवले उठ गइल आ बिना कुछ कहले सुनले बहरा निकल गइल।

लइकिन का पाँत से उठवला का अमनख में ,ओकर आँख लोराइ गइल रहे।घरे आइ के बिना कुछ खइले पियले रात ले रोवलस। महतारी का बहुत खोदियवला आ समझवला का बाद रोवाइन मुँह से बतवलस–– 'हमके लइकिन का पाँति से अचके ई कहि के उठा दिहल गइल कि तोहार उमिर अब बेसी हो गइल,एहसे तोहके कन्यापूजन वाला पाँत से अलगा बइठावल जाई! एह बात व्यवहार से हमरा बहुत दुख लागल हे । तूँही बतावऽ हम हर साल ओह लइकिने का सँगे न बइठत रहनी,त एह साल काहें अचके उठा दिहल लोग!'

'हम तनिकी सा बड़े हो गइनी,त एमे हमार कवन दोस ? कन्यापूजन का नाँव पर बोलाइ के , बइठल पाँति से उठा के ,केहू के अइसन बेइजती कइल जाला?'

लइकी के माई, अपना अबोध बेटी के एह जागल स्वाभिमान पर हकबक रहली।

'संस्कार-भारती' केन्द्रीय सभागार 'कला संकुल' नई दिल्ली में डा0 श्री राम पाण्डेय के कविता संचयन के लोकार्पण

रजि0 नं0 – आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372 पाती संयुक्तांक 107-08 मार्च 2025

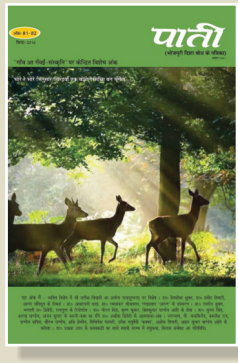

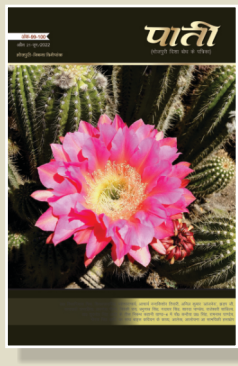
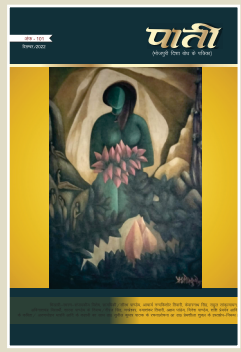

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक, सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ 1118, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-19 से प्रकाशित।